सात्विक खुराक यह आरोग्यकी तीसरी कुंजी है ।

२५. प्रतिदिन जपा करो कि शुद्धवायु, शुद्धजल, प्रकाश और स्वच्छता यही अपना जीवन है ।

२६. भोजन पात्रपर बैठकर विशेष खानेमें अपनी बहादुरी समझते हैं, वे अपने हाथसे अपना खून करते हैं ।

२७. उष्ण पदार्थ खानेसे जितनी मृत्यु होती है उससे शीघ्र खानेवालोंकी अधिक मृत्यु होती है ।

२८. भोजन करनेका घंट बजे यही उसका समय नहीं है, किन्तु क्षुधाका घंट बजे यही यथार्थ समय है ।

२९. भोजन करनेको बैठनेके समय अपने उदरकी पहिले सलाह लेनी चाहिये। जीहाकी सलाह लेनेकी कोई आवश्यका नहीं है ।

३०. लिखे रखना कि अपनी बहुतसी व्याधियाँ अपने बीगड़े हुए उदरमेंसे उत्पन्न होती हैं ।

३१. ध्यानमें रखना कि वीर्य और मस्तिष्क सम्बन्धी अनेक विकार बी गड़ी हुई पाचन क्रियाके कारणभूत हैं

३२. अपनी नोटबुकमें लिख रखना कि जो इन्द्री अपराध करती है उसी इन्द्रिको कुदरत शिक्षा करती है।

३३. नोट कर लो कि जादुई गोलियाँ गई हुई जुवानी पुनः लावेगी यह सर्वथा वालुकी भीत है ।

३४. शरीरका पूर्ण यन्त्र एक चुहल आधीन है, इस लिये चुहलेकी होजरीकोही नियमित संभाल रखना चाहिये.

३५. तुम्हें मालुम न हो तो अबसे समझ लो कि बिगड़े हुए दांतोसे भी तुम्हारी पाचनक्रियाका बिगाड़ होता है ।

३६. तुम्हें विदित न हो तो अबसे जान लो कि मुख ढाँककर सोना और हलका विष खाना ये दोनों समान है ।

——×०×——

वैद्यकल्पतरुके सम्पादकद्वारा गुजराती भाषामें वैद्यक सम्बन्धी रचित व प्रकाशित पुस्तकोंकी सूची ।

नाम.		मूल्य.
१.	घरवैदु (तृतीय संस्करण) ...	
२.	वाग्भट्ट सत्रस्थान (भाषा टीका समेत) ...	३—८—०
३.	सुवावस्थानो शिक्षक (तृतीयं संस्करण) ...	०—१२—०
४.	धात्रीशिक्षा (दो भाग) ...	१—०—०
५.	सारीसन्तति (द्वितीय संस्करण) ...	१—८—०
६.	रोगीपरिचर्या (दो भाग) ...	१—८—०
७.	रोगनिवारण नविन विद्या....... ...	१—८—०
८.	धार्मीकर कल्पतरु (द्वितीय संस्करण)...	०—८—०
९.	आरोग्य रहेवाना उपायो-(दशम संस्करण)...	०—४—०
१०.	ब्रह्मचर्य (तृतीय संस्करण).....	०—२—०
११.	बालरक्षा (द्वितीय संस्करण)...	०—२—०

सूचना—पोष्टेज पृथक् लिया जाता है ।

बाहरगांवके रोगियोंको सुविधा और सूचना।

१. गाँव और बाहरगाँवके लोगोंको व्याधि सम्बन्धी परामर्श हमारी ओरसे मुफ्त दीजाती है। बाहरगाँवके रोगियोंको जबावके लिये दो पैसेकी टीकिट भेजनी चाहिये.
२ औषधिके विना रोग जा सके वहांतक कभी भी औषधि नहि खाना यह हमारी पहली सूचना है।
३. औषधिकी आवश्यकता हो तो वनस्पतिकी किम्वा अन्य भयरहित औषधि खाना यह हमारी दूसरी सूचना है।
४. विज्ञापन पढकर औषधि मँगवाना उससे प्रत्यक्ष किम्वा पत्र द्वारा व्याधि एवं प्रकृति विदितकर औषधि लेना यह हमारी तीसरी सूचना है।
५. व्याधिको ऊपरसे शान्त करना इससे व्याधिके समूल नाश करनेवाले उपायोंका आश्रय लेना यह हमारी चौथी सूचना है।
६. पथ्यके भयसे सदा दुःखित रहना उससे पथ्यका पालनकर निरोगी होना यह हमारी पाँचवी सूचना है। पथ्य यह आधी औषधि है।
७. रोग नहीं होनेपर भी रोगके भ्रमसे व्यर्थ भटकनेवालोंको सत्य मार्ग दर्शाना यह हम अपना प्रधान कर्तव्य समझते हैं।
८. साधारण व्याधिका नाश करते महाति व्याधि हो जाय ऐसे भयानक उपाय रोगियोंके ऊपर करनेके हम घोर विरोधी हैं।
९. हमारी सूचनासे लाभ न हो तो मत हो; किन्तु हानी न हो इस बातकी हम अधिक चेष्टा करते हैं।
१०. दीन दरदियोंको उनके वृत्तान्तपरसे खानपान किम्वा औषधिके उपाय सम्बन्धी सूचना हम लिख भेजते हैं।
११. समर्थ सज्जनोंको उचित दामसे औषधि व उसको खानेकी रीति लिख भेजते हैं।
योग्य पथ्य एवं धैर्यके विना जीर्ण व्याधियाँ निर्मूल नहीं हो सकती. हम इस बातकी तरफ रोगियोंका विशेष रूपसे ध्यान आकर्षित करते हैं।
१३. युवकोंको औषधिका चस्का नहीं लगाकर योग्य परामर्श द्वारा उनके मनका समाधान करना यह हम अपना कर्तव्य समझते हैं।
१४. जहाँ औषधि सेवन करनेकी हमें आवश्यकता नहीं प्रतीत होती है वहाँ हम औषध नहीं खानेकी परामर्श व सूचना देते हैं।
१५. औषधि सेवनके समयमें जो पथ्य बताया जाता है वह औषधिके लिये ही नहीं है; किन्तु विशेषकरके व्याधिके लिये ही पथ्यपालन किया जाता है।
१६. हमारे उपचार और उपाय निर्णय होनेके विषयमें अब विश्वास दिलानेकी आवश्यकता नहीं है।
१७. हमारे इस व्यवहारसे बाहर-गाँवके सदस्यों रोगी विद्वोपजीवि हमारी सलाह और औषधियोंका निःसंकोच होकर आश्रय लेते हैं।
१८. सलाह मांगनेवाले सज्जनोंने व्याधि सम्बन्धी सम्पूर्ण वृत्तान्त नम्बरवार समझमें आवे ऐसे स्पष्ट अक्षरोंसे अपने एवेन साथ मुझको लिखना चाहिये।

वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी.—अहमदाबाद.

प्रश्न पत्र ।

रोगीने अपना रोग लिखनेके समयमें यह प्रश्न पत्र अपने पास रख पत्र लिखना चाहिये और इन प्रश्नोंमेंसे रोगीको अनुकूल पड़े वैसी बातों खुलासा नम्बरवार लिखना चाहिये ।

सब रोगीयोंके लिये सामान्य प्रश्न ।

नाम, जाति, उम्मर, रोजगार?
शरीर पतला है या मोटा? वजन?
साधारण खुराक क्या है?
विवाह हुआ है या नहीं?
भोजनपर रुचि है या नहीं?
भूख मालूम होती है या नहीं?
दस्त साफ आता है या नहीं!
निद्रा आती है या नहीं?
दिनमें सोनेकी आदत है या नहीं!
आपको कोनर व्यसन है?
शारीरिक श्रम होता है या नहीं?
प्रथम कोई बीमारी हुई थी?
प्रकृति गरम है या शान्त?
मन प्रसन्न रहता है या उदास?
वीर्यका दुरुपयोग हुआ है?
Any abuse or excess.
रोगके प्रधान२ लक्षण?
शरीरके किसर भागमें दरद होता है!
बीमारी होनेको कितना समय हुआ?
रोगका कारण जानते हो तो लिखो?
किनर की दवा की थी?
उन्होंने रोगका क्या नाम कहा था?
रोग किस ऋतुमें घटता है?
शरीरमें कहां पर भी सोजा है?
शरीरमें ज्वर रहता है?
शरीरमें लाली है या फिकास?
कोनसा खुराक अनुकूल पड़ता है?
रोग प्रथम किस स्थानपर हुआ था?

पाचनविकारके रोगोंके विषयमें प्रश्न।

दस्तकी कबजीयत है या खुलासा!
दस्त कितने व कैसे होते हैं?
दस्तका रंग कैसा रहता है?
दस्त चिकासवाला रहता है!
दस्त होनेके समय चूंक आती है!
दस्तमें गांठे गांठे आती है!
पीप, पाच या रुधिर पड़ता है!
दस्तकी बीमारी पुरानी है या नई!
पहिले कभी आम हुआ था?
दस्त आनेके समय आमण बाहर निकलती है!
अर्श अर्थात् मसेकी बीमारी है!
किसी भागमें सोजा या थोथर है?

पिशाबके रोगोंके विषयमें प्रश्न।

पिसाब कैसे रंगका होता है?
पिसाब कम होता है या अधिक?
पिसावके समय जलन होती है?
पिसाब करनेके समय विलम्ब होती है!
थर बंधती है तो उसका रंग कैसा है!
प्रमेह हुआ था या हुआ है?
चांदी उपदंश हुई थी या है?
बद हुईथी और वह फूट गई थी?

स्त्रीयोंके रोगोंके विषयमें प्रश्न ।

सन्तती हुई है या नहीं?
कितनीवार गर्भस्राव हुआ है?
दस्तान कम है, अधिक है या बंद?
दस्तानके समयमें दरद होता है?
गोला या हिस्टिरीया होता है?
शरीर मध्यम फूला हुआ है कि सूखी हुआ है!
प्रदर हुआ है?-धात जाती है!

जिस रोगीको इनमेंसे जोर बातें अपनेको होती हो उतनी ही नम्बरवार लिखनी चाहिये ।

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

शरीर संरक्षण यही प्रधान धर्म है, आरोग्य यही परम सुख है; शरीर संरक्षण और आरोग्य सम्बन्धी ज्ञान सम्पादन करनेके लिये यह "हिन्दी वैद्यकल्पतरु" मासिकपत्र सर्वोत्तम साधन है ।

हिन्दी वैद्यकल्पतरु।

गुजराती वर्ष १९.
हिन्दी वर्ष २.

मार्च १९१४

[संख्या ३

आयुर्वेद गौरवनिदर्शनम्-"हिन्दी वैद्यकल्पतरु" मासिकपत्र प्रशस्तिश्च।

देशी औषधें और स्वास्थ्य ।

(लेखकः-वैद्यराज पं. ईश्वरप्रसादजी शर्मा, गढ़घान-(बदायूं.))

"आयुर्यस्मिन्विद्यते येन वा या,
विन्दत्यायुर्वेत्ति यस्मात्परेषाम् ॥
तस्मादायुर्वेद एषो मुनीन्द्रै,-
रुक्तो ह्येयः सर्वथा मत्सुहृद्भिः" ॥ १ ॥

"आयु जिसमें नित रहता हो या जन जिससे पावे ।
पुनि महाशय आयु दूसरोंका भी जिससे बतलावे ॥ १ ॥
यही 'निरुक्ति' लिखी सनातन "आयुर्वेद" कहाया ।
श्रद्धा करो मित्रगण! तुम भी 'ईश्वर'ने यह गाया ॥ २ ॥

"त्यागि विदेशी औषधें-देशी करहु प्रचार ।
मित्रो! अस अभ्यर्थना सुनिये वारम्वार ॥ २ ॥

'वाग्भट'में है लिखा जिस देशका जो 'जन्तु' हो,
उस देशकी ही 'औषधी' उसको सदा उपयुक्त हो ॥

इन 'औषधों'से ही पुनः तुम पूर्ववत् होगे सही,
मस्तिष्क शुद्धि होयगी दिलमें जरा धरिये यही ॥ ३ ॥

कुछ मानते हो पूर्वजोंमें वह जो 'शक्ति' अजीब थी,
हृदमें रखो उस दृश्यको इनमें जो भक्ति असीम थी ॥
यदि चाहते करना प्रियो! उस शक्तिका तुम लाभ हो,
ध्यान देते क्यों नहीं फिर "आयुर्वेद प्रचार हो ॥ ४ ॥

'आयुर्वेद प्रकाश'से उन औषधोंको पाइयें,
प्रणामकर "धन्वन्तरि"को शुद्ध मनसे खाइये ॥
सर्व रोग विनष्ट होंगे ध्यानमें यह दीजिये,
निम्न लक्षण इष्ट मित्रो 'स्वास्थ्य'को ले लीजिये ॥ ५ ॥

समदोष हो-समअग्नि हो-समधातु-सम व्यापार हो,
'सुश्रुत' महर्षी यूं हि कहता देखलो "सुश्रुत" जो हो ॥
'चरक'ने भी है लिखा वस 'स्वस्थ'का लक्षण यही,
'स्वास्थ्य' भी कहिये तभी जब उक्त लक्षण हो सही ॥ ६ ॥

'स्वास्थ्य' भी पै प्रथमतः यह 'दिनाचाराधीन' है,
'रात्रिचर्य्याधीन' है और 'ऋतुचर्य्याधीन' है ॥
"कल्पतरु-उपदेश"से धर्ताव यह सच जानिये,
'स्वास्थ्य'से ही "अर्थचतुष्टय-सिद्धि" है यह मानिये ॥ ७ ॥

लिख रहा हूं मैं भी मित्रो! इस समय इस विषय पर,
पूर्ण हो जब देखिये 'संदर्भ' शोभन-ध्यानधर ॥
करो आयुर्वेदका उद्धार सब दिल खोलकर,
समय ऐसा फिर न पावो सदा राखो ध्यानपर ॥ ८ ॥

त्यागिये निद्राको भद्रो! करवटें मत लीजिये,
नष्ट होयेगा रहा भी ध्यानमें टुक दीजिये ॥
यदि न जागोगे अभी भी सत्य तो यह जानिये,
ली पुनः धरणीको मित्रो! यत्नसे निज छानिये ॥ ९ ॥

सब हित मनमें ठानि-लिखो "गौरवादर्श" यह ॥
सुहृद! हृदयमें जानि-नीको लागे तो करहु ॥ १० ॥

सम्पादकीय विचार ।

तीब्बी कोन्फरन्सका चतुर्थाधिवेशन–हमारे पाठक आल इन्डिया वैद्यक एन्ड यूनानी तिब्बी कोन्फरन्स दिल्लीसे परिचित होंगे । उसके तीन अधिवेशन होचुके हैं अब चौथा अधिवेशन १–२–३ मार्च १९१४ को अमृतसरमें होना निश्चय हुआ था सो होगया । सुनते हैं कि उसके सञ्चालकोंसे मतभेद होजानेके कारण अमृतसरके कुछ वैद्य व हकीमोंने मिलकर उसी प्रकारकी एक कोन्फरन्स उसके पहिले ही कर-डाली । इसके सभापति श्रीयुत् डा. मेजरबसु हुए थे । देशकी विद्याओंकी उन्नतिके कार्योंमें इस प्रकार धींगामस्तीका होना हमारी रायके अनुसार ठीक नहीं । मतभेद होनेका कारण क्या था? और इससे दोनों पक्षवालोंको क्या लाभ हुआ? यह हम नहीं जानते इस लिये इस विषयमें अभी हम कुछ भी नहीं कहसके । फिर भी हम इतना तो अवश्य कहेंगे कि सार्वजनिक कार्योंको किस प्रकार करना चाहिये यह हमारे देशवासियोंको और खासकर वैद्योंको अभी कुछ काल तक सिखना होगा ।

व्यासजीके निबन्ध पर सम्मति–इस पत्रके गत अङ्कमें श्रीयुक्त पं. पूनमचन्द तनसूखजी व्यासका "अकसीर (!) दवायें" यह निबन्ध छपा था वह मथुराके सम्मेलनमें पढा गया था। यह निबंध कुछ वैद्योंको अखरा था और पहिलेसे ही इस निबन्धको नहीं पढे जानेके लिये चेष्टा कर रहे थे; किन्तु उस दिनके स्थानापन सभापति श्रीयुक्त कविराज गणनाथसेनजीने आज्ञा दी कि यह निबन्ध अवश्य पढा जाना चाहिये । इतना ही नहीं; किन्तु उन्होंने उस निबन्धके पढे जानेके पश्चात् उसका अनुमोदन करते हुए कहा था कि इस प्रकारकी अक्सीर दवाओंसे हमारे आयुर्वेदशास्त्रकी आर हम लोगोंकी अप्रतिष्ठा होती है इस लिये हमें ऐसी दवाओंसे अपना विरुद्ध मत प्रकाशित करना चाहिये। हमारी भी यही सम्मति है कि इस प्रकारके निबन्धोंके व लेखोंके द्वारा अपने देशवासियोंको अवश्य सावधान करदेना चाहिये।

डायरेक्टरीके लिये वैद्यक साहित्य–भारतवर्षीय वैद्यक डायरेक्टरीमें वैद्योंके वृत्तान्तके उपरान्त वैद्यक साहित्यकी एक बृहत् सूची भी दी जायगी । उस सूचीसे यह पता लग जायगा कि वैद्यकसाहित्यके कौन २ ग्रन्थ मुद्रित हैं और कौन २ अमुद्रित हैं साथ ही उसके कर्ता व प्रकाशकका परिचय तथा इस समय वह ग्रन्थ कहांपर है इत्यादि आवश्यक वृत्तान्त रहेंगे । इस वृत्तान्तको भरनेके लिये भी फार्म छपवाये गये हैं जिनके पास वैद्यक ग्रन्थ हो उन्होंने कृपाकर इस पत्रके सम्पादकके पाससे फार्म मंगवा लेना चाहिये । हमें आशा है कि इस आयुर्वेद सम्बन्धी शुभानुष्ठानमें हमारे देशके सभी सज्जन यथोचित सहायता करेंगे ।

मैं रोगी हूं या निरोगी?

२

इस प्रश्नपर गतांकमें कुछ प्रस्तावना की गई है अब परीक्षाके ऊपर आते हैं। वहुतसे मनुष्य ऐसा विचार करते हैं कि वे रोगी हैं या निरोगी है? उसकी परीक्षा वैद्य या डाक्टर ही करसक्ते हैं यह बात बहुत ही भूल भरी है। हरएक मनुष्य अपने शरीरसे, अपने खानपानसे और अपनी आदतोंसे स्वयं जितना परिचित हो उतना परिचित उसका डाक्टर या वैद्य नहीं रहता। फिर अपना शरीर एक आध वर्ष किम्वा पांच वर्षके पूर्व कैसा था और इस समय कैसा हुआ है उसका निर्णय भी मनुष्य स्वयं ही अच्छी तरहसे करसक्ता है और यदि शरीरमें कुछ बोजा हुआ हो, सम्पूर्ण शरीर किम्वा उसका अमुक भाग बढकर भाररुप हुआ हो तो वह भार उसके लिये सुख और शक्ति देनेवाला हुआ है या खाली कुड़ेका ही भार[१] वढा है यह बात भी मनुष्य स्वयं अधिक समझ सक्ता है। वहुतसे मनुष्योंके शरीरमें ऐसे परिवर्तन होकर शरीर गंदा व भाररूप होजाता है और फिर भी वे उसका कुछ भी विचार नहीं कर उस भारको खेंचा करते हैं और इस गंदे शरीरमें शक्तिकी दवा डालनेके लिये चेष्टा करता है। शरीरसे मोटे व अशक्त हुए मनुष्य इस बातकी अपने मनके साथ गवाही दे सकेंगे। जब रजाई या कपड़ा मैला होता है; तब वजनमें वढता है और वह मैला कपड़ा शरीरपर बोजरूप होजाता है। इतना ही नहीं; किन्तु वह दुर्गंधी भी मारता है। ऐसे गंदे व मैले कपड़े पर रंग चढानेके विचारसे आप रंगरेजके पास जांयगे तो वह कहेगा कि इसको एकवार धोवीके वहां धुलाकर पीछे लावो तो रंग अच्छी तरहसे चढेगा। यही दशा शरीरके मलकी और उसके रंग चढानेकी अर्थात् शरीरमें शक्ति वढानेकी समझना चाहिये। तब हम हरएक मनुष्य शरीरसे स्वच्छ हैं या कुछ मलवाले—रोगी हैं उसकी परीक्षा हमें स्वयं करना चाहिये। उस परीक्षाके लिये हम यहांपर कुछ प्रश्न पूछते हैं।

१ आपके शरीरके समस्त अवयव अच्छी तरहसे कार्य करसक्ते हैं?*

---

१ विजातीयतत्व।

* मगजका कार्य सारासारके विचार करनेका और स्मरण रखनेका है, आन्तोंका कार्य खाये हुए खुराकको पकाकर कुड़ेको आगे निकाल देनेका है, दांतका कार्य अच्छी तरहसे चवानेका, नेत्रका कार्य अच्छी तरहसे देखनेका, कानका कार्य अच्छी तरहसे सुननेका, चमड़ीका कार्य अच्छी तरहसे स्पर्श ज्ञान करनेका, पांवका कार्य चलनेका, हाथका कार्य पकड़नेका, मूत्राशयका कार्य पिशाब-को खुलासा रास्ता देनेका और मलाशय-वकरेका कार्य पवनको छोड़कर मलको बाहर लानेका है। यदि इनमेंसे एक भी कार्य अपूर्ण हो तो समझ लेना कि तुम निरोगी नहीं हो।

२ आपको खुराक अच्छी तरहसे पाचन होता है ? दस्त नियमित समयपर अच्छी तरहसे साफ आता है ? क्षुधा अच्छी तरहसे लगती है ? पेटमें गड़बड़ या दरद हुए विना ही खुराक पाचन होता है ? भोजनके पश्चात् शरीरमें होशियारी रहती हैं ? कुछ भी औषधिकी सहायताके विना ही आपको खुराक पाचन होता है ? यदि इन समस्त प्रश्नोंका उत्तर स्वीकृतिमें दिया जाय तो आप निरोगी हैं; किन्तु यदि दस्तका कुछ भी नियम न हो, भोजनके पश्चात् आलस्य व निद्रा आते हो, पाचन होते २ पेटमें पवन मालूम होता हो और सफरमेंसे दुर्गंधी पवन छूटता हो और खुराक पचानेके लिये औषधि किम्वा चाह काफीकी सहायता लेनेकी आवश्यक्ता पड़ती हो तो उसका यही अर्थ है कि या तो तुम्हारी पाचनक्रिया बीगड़ी हुई है किम्वा तुम खुराक लेनेमें बेपरवाही रहे हो। किसी भी प्रकार आप निरोगी नहीं हैं !

३ आपकी प्यासको शान्त करनेकें लिये निर्मल जलके समान एक कुदरती पदार्थको छोड़कर आप कृत्रिम प्रवाही सोड़ा, नीम्बु, जंजीरेट प्रभृति वस्तुओंकी इच्छा रखते हो ? यदि वैसी इच्छा रहा करती हो तो वह इच्छा ऐसा बताती है कि तुम्हारा शरीर रोगी है—पराधीन है !

आपकी कुदरती हाजतें जैसे कि पिशावका होना, दस्त होना, इत्यादि अनेक प्रकारकी कुदरती क्रियायें करनेके समय आपको दरद होता है ? यदि दरद होता हो तो समझ लेना कि आप रोगी हैं।

५ आपका दस्त शंकुके आकारका बंधाया हुआ बहुत कठिन नहीं, वैसे ही नरम नहीं ऐसा आता है ? यदि वैसा न आता हो तो समझ लेना कि आप निरोगी नहीं हैं।

६ आपके शरीरमेंसे या शरीरके किसी भागमेंसे खराब दुर्गन्धी छूटती है ? यदि छूटती हैं तो समझ लेना आपके शरीरमें रोग हैं।

७ सम्पूर्ण शरीरकी चमड़ी तपी हुई रहती है ? किम्वा सुखी हुई व फटी हुई रहती है ? यदि ऐसा हो तो समझ लेना कि आप निरोगी नहीं है।

८ आपके शिरमें टाल पड़ी है अर्थात् आपके सिरके बाल गिरगये हैं ? किम्वा मगज गरम रहता है ? यदि ऐसा है तो आप निरोगी नहीं है।

९ कार्य करनेके पश्चात् कायर होजाते हो ? आपको निद्रा अच्छी तरहसे नहीं आती ? आप प्रातःकाल जागृत होते हो उस समय शरीर दरद करता है ? यदि ऐसा ही है तो आप निरोगी नहीं हैं।

१० सोते या जागते आपका मुख फटा हुआ रहता है ? किम्वा आपके ओष्ठ कम मिले हुए रहते हैं ? यदि ऐसा ही है तो वे शरीरके रोगी होनेके लक्षण है।

मैं रोगी हूं या निरोगी?

२

इस प्रश्नपर गतांकमें कुछ प्रस्तावना की गई है अब परीक्षाके ऊपर आते हैं। बहुतसे मनुष्य ऐसा विचार करते हैं कि वे रोगी हैं या निरोगी है? उसकी परीक्षा वैद्य या डाक्टर ही करसक्ते हैं यह बात बहुत ही भूल भरी है। हरएक मनुष्य अपने शरीरसे, अपने खानपानसे और अपनी आदतोंसे स्वयं जितना परिचित हो उतना परिचित उसका डाक्टर या वैद्य नहीं रहता। फिर अपना शरीर एक आध वर्ष किम्वा पांच वर्षके पूर्व कैसा था और इस समय कैसा हुआ है उसका निर्णय भी मनुष्य स्वयं ही अच्छी तरहसे करसक्ता है और यदि शरीरमें कुछ बोजा हुआ हो, सम्पूर्ण शरीर किम्वा उसका अमुक भाग बढकर भाररूप हुआ हो तो वह भार उसके लिये सुख और शक्ति देनेवाला हुआ है या खाली कुड़ेका ही भार[१] बढा है यह बात भी मनुष्य स्वयं अधिक समझ सक्ता है। बहुतसे मनुष्योंके शरीरमें ऐसे परिवर्तन होकर शरीर गंदा व भाररूप होजाता है और फिर भी वे उसका कुछ भी विचार नहीं कर उस भारको खेंचा करते हैं और इस गंदे शरीरमें शक्तिकी दवा डालनेके लिये चेष्टा करता है। शरीरसे मोटे व अशक्त हुए मनुष्य इस बातकी अपने मनके साथ गवाही दे सकेंगे। जब रजाई या कपड़ा मैला होता है; वह वजनमें बढता है और वह मैला कपड़ा शरीरपर बोजरूप होजाता है। इतना ही नहीं; किन्तु वह दुर्गंधी भी मारता है। ऐसे गंदे व मैले कपड़े पर रंग चढानेके विचारसे आप रंगरेजके पास जांयगे तो वह कहेगा कि इसको एकबार धोबीके वहां धुलाकर पीछे लावो तो रंग अच्छी तरहसे चढेगा। यही दशा शरीरके मलकी और उसके रंग चढानेकी अर्थात् शरीरमें शक्ति बढानेकी समझना चाहिये। तब हम हरएक मनुष्य शरीरसे स्वच्छ हैं या कुछ मलवाले—रोगी हैं उसकी परीक्षा हमें स्वयं करना चाहिये। उस परीक्षाके लिये हम यहांपर कुछ प्रश्न पूछते हैं।

१ आपके शरीरके समस्त अवयव अच्छी तरहसे कार्य करसक्ते हैं?*

---

१ विजातीयतत्व।

* मगजका कार्य सारासारके विचार करनेका और स्मरण रखनेका है, आन्तोंका कार्य खाये हुए खुराकको पकाकर कुड़ेको आगे निकाल देनेका है, दांतका कार्य अच्छी तरहसे चबानेका, नेत्रका कार्य अच्छी तरहसे देखनेका, कानका कार्य अच्छी तरहसे सुननेका, चमड़ीका कार्य अच्छी तरहसे स्पर्श ज्ञान करनेका, पांवका कार्य चलनेका, हाथका कार्य पकड़नेका, मूत्राशयका कार्य पिशाबको खुलासा रास्ता देनेका और मलाशय-पक्वाशयका कार्य पवनको छोड़कर मलको बाहर लानेका है। यदि इनमेंसे एक भी कार्य अपूर्ण हो तो समझ लेना कि तुम निरोगी नहीं हो।

गर्भके संस्कार बंधते हैं। गर्भधारण करनेके लिये तैयार होनेवाले स्त्रीपुरुषोंने निम्न बातें ध्यानमें रखनी चाहिये।

१ उत्तम सन्तान उत्पन्न करनेकी योग्य सामग्री—पुरुष और स्त्रीकी परिपक्व उम्मर, उनके शरीरकी निरोगिता, योग्य ऋतु और योग्य दिन, परस्परकी प्रसन्नता, और मन आनन्दित रहे वैसी सब प्रकारकी अनुकुलता; इतनी अनुकुलताओंको देखकर गर्भाधान करना चाहिये।

२ गर्भधारणके लिये योग्य पुरुषका वीर्य—स्फाटिक जैसा स्वच्छ, पतला, चीकना मीठा व शहदके गन्धवाला शुक्र शुद्ध समझना चाहिये। यदि वीर्य दुर्गन्धवाला हो, ग्रन्थीवालों हो और पीपके जैसा हो तो अशुद्ध समझना चाहिये। गर्भाधान करनेवाले पुरुषने अपने वीर्यकी इस प्रकार परीक्षा करनी चाहिये।

३ गर्भधारणके लिये योग्य स्त्रीका आर्तव—ससलेके खूनके समान लाल, लाखके रंगके समान और वस्त्रके ऊपर पड़नेपर धौनेसे दाग न रहे उसे शुद्ध समझना चाहिये। मैला, फीका, ग्रन्थीवाला और दुर्गन्धी मारनेवाला दस्तान गर्भधारणके काममें नहीं आता। गर्भाधान करनेवाले स्त्रीपुरुषने दस्तान-रज सम्बन्धी यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये।

४ स्त्रीकि ऋतु अर्थात् दस्तानकी समझ;—गर्भस्थानकी सूक्ष्म नसमेंसे प्रतिमास निकलनेवाले खूनको ऋतु कहते हैं। तन्दुरस्त दशामें यह खून प्रवाही रहता है और रोगी दशामें बंधकर उसके टुकड़े पड़ते है। गर्भ रहनेपर यह दस्तान बंद होजाता है और उसके बदलेमें वह दस्तान गर्भाशयमें जाकर गर्भका पोषण करता है और जब पोषणकी आवश्यक्ता नहीं पड़ती; तब वह कुदरती रीतिसे दस्तानरुपसे बाहर पड़ता है यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है।

५ गर्भ किस प्रकार रहता है? नर व मादाके समागममें स्त्रीके गर्भस्थानमें पतला दस्तान उत्पन्न होता है उसमें पुरुषका वीर्य मिलता है। इन दोनोंके मिलनेसे गर्भ बंधने लगता है।

६ जोड़ी उत्पन्न होनेका कारण;—जब गर्भाशयमें पड़ा हुआ वीर्य वायुके द्वारा दो भागोंमें विभक्त होजाता है तब दो बालक उत्पन्न होते हैं। इस विषयमें विद्वानोंकी भिन्न २ सम्मतियां है।

७ नपुंसक होनेका कारण,—स्त्रीका रज व पुरुषका वीर्य एक समान प्रमाणमें मिले तो उसमेंसे उत्पन्न होनेवाला बालक नपुंसक होता है। इस विषयमें भी भिन्न २ सम्मतियां है।

गर्भके संस्कार बंधते हैं। गर्भधारण करनेके लिये तैयार होनेवाले स्त्रीपुरुषोंने निम्न बातें ध्यानमें रखनी चाहिये।

१ उत्तम सन्तान उत्पन्न करनेकी योग्य सामग्री—पुरुष और स्त्रीकी परिपक्व उम्मर, उनके शरीरकी निरोगिता, योग्य ऋतु और योग्य दिन, परस्परकी प्रसन्नता, और मन आनन्दित रहे वैसी सब प्रकारकी अनुकुलता; इतनी अनुकुलताओंको देखकर गर्भाधान करना चाहिये।

२ गर्भधारणके लिये योग्य पुरुषका वीर्य—स्फाटिक जैसा स्वच्छ, पतला, चीकना मीठा व शहदके गन्धवाला शुक्र शुद्ध समझना चाहिये। यदि वीर्य दुगन्धवाला हो, ग्रन्थीवाला हो और पीपके जैसा हो तो अशुद्ध समझना चाहिये। गर्भाधान करनेवाले पुरुषने अपने वीर्यकी इस प्रकार परीक्षा करनी चाहिये।

३ गर्भधारणके लिये योग्य स्त्रीका आर्तव—ससलेके खूनके समान लाल, लाक्षके रंगके समान और वस्त्रके ऊपर पड़नेपर धौनेसे दाग न रहे उसे शुद्ध समझना चाहिये। मैला, फीका, ग्रन्थीवाला और दुर्गन्धी मारनेवाला दस्तान गर्भधारणके काममें नहीं आता। गर्भाधान करनेवाले स्त्रीपुरुषने दस्तान–रज सम्बन्धी यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये।

४ स्त्रीके ऋतु अर्थात् दस्तानकी समझ;—गर्भस्थानकी सूक्ष्म नसमेंसे प्रतिमास निकलनेवाले खूनको ऋतु कहते हैं। तन्दुरस्त दशामें यह खून प्रवाही रहता है और रोगी दशामें बंधकर उसके टुकड़े पड़ते है। गर्भ रहनेपर यह दस्तान बंद होजाता है और उसके बदलेमें वह दस्तान गर्भाशयमें जाकर गर्भका पोषण करता है और जब पोषणकी आवश्यक्ता नहीं पड़ती; तब वह कुदरती रीतिसे दस्तानरुपसे बाहर पड़ता है यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है।

५ गर्भ किस प्रकार रहता है? नर व मादाके समागममें स्त्रीके गर्भस्थानमें पतला दस्तान उत्पन्न होता है उसमें पुरुषका वीर्य मिलता है। इन दोनोंके मिलनेसे गर्भ बंधने लगता है।

६ [illegible] न होनेका कारण;—जब गर्भाशयमें पड़ा हुआ वीर्य वायुके द्वारा [illegible] जाता [illegible] तब दो बालक उत्पन्न होते हैं। इस विषयमें विद्वा- [illegible] है।

[illegible] का वीर्य एक समान प्रमाणसे [illegible] ता है। इस विषयमें भी भीम

गर्भाधान।

(Conception-कनसेप्सन.)

विवेचन-पुरुष स्त्रीको ऋतुदान देता है उस पवित्र क्रियाका नाम है गर्भाधान। इस क्रियाकी विधि वैद्यकशास्त्र और धर्मशास्त्रोंके ग्रन्थोंमें लिखि गई है। योग्य स्त्रीमें योग्य पतिने उत्तम बालक उत्पन्न करना यह इस विधिका हेतु है। यह धर्मविधि वर्तमान समयमें प्रायः बंद होरही है और उसके ऊपर झुठा लज्जाका परदा पड़ा है जिससे सन्तति उत्पन्न करनेके पवित्र कार्यमें हमलोग सर्वथा पतित हुए हैं इस लिये यहांपर उस विषय पर कुछ जानने योग्य बातें निवेदन करना अनावश्यक नहीं हैं।

संसारमें स्त्री पुरुषोंका कर्तव्य है-कि उन्होंने पवित्र एवं परस्पर प्रसन्न रहकर सुन्दर, सुघड़, सदाचारी और तन्दुरस्त प्रजा उत्पन्न करना। वैद्यकशास्त्र और सदाचारके नियमोंके अनुसार आचरण रखनेसे मनुष्यजाति ऐसी सन्तति उत्पन्न करसक्ती है। मनुष्यजातिके सदाचारी युगल (जोड़ी) दैवी सन्तानोंको उत्पन्न करते हैं और दुराचारी युगल (जोड़ी) आसुरी प्रजाको उत्पन्न करते हैं। इसकी कुञ्जी कुदरतने मनुष्यजातिके हाथमें दी है; किन्तु मनुष्यजातिका अधिक भाग-अज्ञानवर्ग उस कुञ्जीके उपयोग करनेमें केवल अज्ञान हानस संसारके सत्यसुखके सुखकर कोषसे वञ्चित रहता है। यहांपर इस विषयमें अधिक लिखनेका अवकाश नहीं है। इस विषयपर हमने गुजराती भाषामें सारी सन्तति (उत्तम सन्तति) नांवक बड़ा निबन्ध लिखा है जिसका हिन्दी अनुवाद शीघ्रही प्रकाशित होगा उसमें और अन्य निबन्धोंमें व वैद्यकल्पतरुमें अनेक वार लिखा है।

स्त्रियोंकी व्याधियोंको लिखनेके पहिले गर्भाधानके कुछ उपयोगी नियम आयुर्वेदीय ग्रन्थोंके आधारसे यहां पर लिखदेना आवश्यक मालूम होता है।

गर्भिणी स्त्रीके पालन करने योग्य नियम-परिश्रम, पुरुष समागम, भार उठाना, दिनमें सोना, रात्रीको जागना, शोक करना, सवारी करना, भय, उद्वेग होना, दस्त व पिशाबको रोकना, इन बातोंका गर्भिणी स्त्रियोंने त्याग करना चाहिये। उत्तम व सादा खुराक लेना, पवित्र हवामें रहना, आनन्दमें रहना, सदाचार व उत्तम समागमका सेवन करना, सुन्दर वस्त्रालंकार धारण करना, सुशोभित चित्र एवं उत्तम पुरुषोंकी प्रतिमाओंका दर्शन करना और उत्तम स्त्रीपुरुषोंके इतिहास और कथा वार्ताका श्रवण करना। अर्थात् गर्भावस्थामें स्त्री जिन २ वस्तुओंका नित्य दर्शन करती है और जिन २ पुरुषोंका चिन्तवन और कथा श्रवण करती है वैसे गुण

गर्भके संस्कार बंधते हैं। गर्भधारण करनेके लिये तैयार होनेवाले स्त्रीपुरुषोंने निम्न बातें ध्यानमें रखनी चाहिये।

१ उत्तम सन्तान उत्पन्न करनेकी योग्य सामग्री-पुरुष और स्त्रीकी परिपक्व उम्मर, उनके शरीरकी निरोगिता, योग्य ऋतु और योग्य दिन, परस्परकी प्रसन्नता, और मन आनन्दित रहे वैसी सब प्रकारकी अनुकुलता; इतनी अनुकुलताओंको देखकर गर्भाधान करना चाहिये।

२ गर्भधारणके लिये योग्य पुरुषका वीर्य-स्फटिक जैसा स्वच्छ, पतला, चीकना मीठा व शहदके गन्धवाला शुक्र शुद्ध समझना चाहिये। यदि वीर्य दुर्गन्धवाला हो, ग्रन्थीवाला हो और पीपके जैसा हो तो अशुद्ध समझना चाहिये। गर्भाधान करनेवाले पुरुषने अपने वीर्यकी इस प्रकार परीक्षा करनी चाहिये।

३ गर्भधारणके लिये योग्य स्त्रीका आर्तव-ससलेके खूनके समान लाल, लाक्षके रंगके समान और वस्त्रके ऊपर पड़नेपर धोनेसे दाग न रहे उसे शुद्ध समझना चाहिये। मैला, फीका, ग्रन्थीवाला और दुर्गन्धी मारनेवाला दस्तान गर्भधारणके काममें नहीं आता। गर्भाधान करनेवाले स्त्रीपुरुषने दस्तान-रज सम्बन्धी यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये।

४ स्त्रीके ऋतु अर्थात् दस्तानकी समझ;-गर्भस्थानकी सूक्ष्म नसमेंसे प्रतिमास निकलनेवाले खूनको ऋतु कहते हैं। तन्दुरस्त दशामें यह खून प्रवाही रहता है और रोगी दशामें बंधकर उसके टुकड़े पड़ते है। गर्भ रहनेपर यह दस्तान बंद होजाता है और उसके बदलेमें वह दस्तान गर्भाशयमें जाकर गर्भका पोषण करता है और जब पोषणकी आवश्यक्ता नहीं पड़ती, तब वह कुदरती रीतिसे दस्तानरूपसे बाहर पड़ता है यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है।

५ गर्भ किस प्रकार रहता है? नर व मादाके समागममें स्त्रीके गर्भस्थानमें पतला दस्तान उत्पन्न होता है उसमें पुरुषका वीर्य मिलता है। इन दोनोंके मिलनेसे गर्भ बंधने लगता है।

६ जोड़ी उत्पन्न होनेका कारण;-जब गर्भाशयमें पड़ा हुआ वीर्य वायुके द्वारा दो भागोमें विभक्त होजाता है तब दो बालक उत्पन्न होते हैं। इस विषयमें विद्वानोंकी भिन्न २ सम्मतियां है।

७ नपुंसक होनेका कारण,-स्त्रीका रज व पुरुषका वीर्य एक समान प्रमाणमें मिले तो उसमेंसे उत्पन्न होनेवाला बालक नपुंसक होता है। इस विषयमें भी भिन्न २ सम्मतियां है।

८ स्वप्नमें धारण किया हुआ गर्भ,—ऋतुस्नानके पश्चात् जिस स्त्रीको पुरुष प्राप्ति होनेके समान स्वप्न हो तो उसमें जो गर्भ रहता है वह पिताके गुणरहित और मांसके लोचेके समान गर्भ बंधता है ऐसा वैद्यकशास्त्रका कथन है।

९ अंगकी अपूर्णतावाला गर्भ—वायुके कोपसे, गर्भावस्थामें स्त्रीकी कुचेष्टासे और गर्भिणीको इच्छानुसार भोजन नहीं मिलनेसे जो बालक होता है वह लंगड़ा, काना, या विचित्र प्रकारका होता है ऐसी वैद्यकशास्त्रकी आज्ञा है।

१० भिन्न २ वर्णका कारण—माता और पिताके शुद्ध किम्वा अशुद्ध बीज और विशेष करके माताके आहारके ऊपर बालकके शरीरके वर्णका आधार है।

११ पुत्र किम्वा पुत्री उत्पन्न होनेकी समझ—ऋतुस्नान करनेके पश्चात् ४-६-८-१०-१२-१४ वें दिनमें समागम हो तो पुत्र और ५-७-९-११-१५ वें दिनमें समागम होनेसे पुत्री उत्पन्न होती है। क्योंकि सम दिनोंमें स्त्रीमें रक्तान कम रहता है ऐसी आचार्योंकी सम्मति है।

१२ माताकी चेष्टा यही गर्भकी चेष्टा—माता जिस प्रकारकी चेष्टा करती है उसी प्रकार चेष्टाका गर्भमें व जन्मे हुए बालकमें अनुकरण होता है। माताके श्वासके साथ बालक श्वास लेता है और माता अन्यान्य कार्योंको करती हुई जो २ चेष्टायें या क्रियायें करती है उन सबोंका बालक अनुकरण करता है और उसमें वैसे ही भाव दृढ होते हैं। इस लिये गर्भावस्थामें माताने खराब चेष्टायें नहीं करनी चाहिये।

१३ माताका पोषण यही गर्भका पोषण—गर्भकी नाभीकी नाड़ी माताकी रसवाहिनी नाड़ीमें बंधी हुई है और उससे माता जो २ खाती पीती हैं उसका रस बालकको भी मिलता है। माताके पोषणके तीन विभाग पड़ते हैं। एक भाग गर्भके बालकको मिलता है, एक भाग उत्पन्न होनेवाले बालकके पोषणकी तैयारीके लिये माताके स्तनमें दूध होनेको जाता है और तीसरे भागसे माताके शरीरका पोषण होता है। इसी लिये गर्भिणी स्त्रीका पोषण व पालन अधिक सावधानीसे होना चाहिये।

१४ गर्भ रहनेके चिन्ह—गर्भ रहनेके पश्चात् तीन चार मासपर स्त्रीमें गर्भ रहनेके चिन्ह मालूम पड़ते हैं। स्तनके ऊपरकी डींटके आसपासके भागमें कृष्णता, रूमटे खड़े होना, नेत्रके मटके वारम्वार बंद होना, विना कारण कय, सुगंधी पदार्थों पर अभाव, मुखमेंसे लाळा पड़े और शरीरमें कम्प हो इत्यादि।

इसी कारण जगदुत्पन्नस्थावर जंगमके यथार्थ गुण भी बाधित होरहे हैं जिससे प्रयोग, प्रयोगकर्ता, प्रयोगभोक्ता तीनोंहीमें यदि अव्यवस्था देखी जाय तो क्या असम्भव है? अतः इस समय इससे यदि आप उपयोग ठीक न समझ सके अथवा न करसके तो वह विषय ग्रन्थसे निकाल देना असत्य समझकर इसी प्रकार होगा कि जैसे आपका देश अथवा सर्व भाषाओंकी जन्मदात्री संस्कृत भाषा विद्या। क्योंकि आप देखते हैं कि आपका देश अथवा संस्कृत भाषा विद्या कितनी महत्वपूर्ण व्यवस्थावाली हैं पर इस समय प्रचारके अभावसे दुर्बलहीसी प्रतिभात होरही है। क्या आप इन दोनोंको छोड़ देगें? इसपर आप उत्तर देंगे कि इस समय इनके उत्कर्षका समय नहीं है। यदि होगा तो होना सम्भव है। बस प्रियवर! यह न्याय यहांपर भी लगाइये और उक्त रासायनिक प्रयोग ग्रन्थोंसे पृथक् करनेकी अभिलाषा शिथिल कीजिये और चरक विमानस्थानको देखिये कि कितना यह विचार रहस्यमय है जिसको स्थिर चित्त होकर विचारनेहीसे पूर्वापरकी धारणाके साथ सिद्धान्त लक्षित होता है जो कि देशकालका धर्म कर्तव्यके साथ हीनवृद्ध दशा प्रतियुगमें कर्तव्यभ्रष्ट प्राणियोंके अनुरूप देशके वायु जल अग्नि देवस्वरूप यथार्थ गुणको वितरण नहीं करते; क्योंकि उपदेश सूत्रका भाव है कि-

वाताज्जलं जलाद्देशं देशात्कालं स्वभावतः ।
विद्याद्दुष्परिहार्यत्वाद्गरीयस्तरमर्थवित् ॥

अर्थात् प्राणियोंके अनाचारसे जगत्का वायु विरुद्ध गुण हो जलको दूषित करता है और वह जल देशको दूषित करता है. पुनः इन सबके सम्बन्धसे काल भी दुष्ट होकर विरुद्ध गुणमय स्वभावसे प्रबलता पूर्वक अनिवार्य शक्तियुक्त उत्तरोत्तर हीन दशाका फल देता हुआ प्राणियोंको तथा औषधि मात्रको गुणहीन बनाकर पूर्ण आयुसे बाधित करता है जो ऋतुओंके विपरीत और न्यूनहीन मिथ्यायोगसे जानसके है; क्योंकि जो औषधियां रसायन प्रयोग द्वारा जल, पृथ्वि आदिके आश्रित होकर पुष्ट होती है वह भी इन पंचतत्वोंहीसे सम्बन्ध रखती हैं और वही औषधियां रसायन प्रयोग द्वारा आयुके अधिकतर होनेमें सहायक हैं तो क्यों कर लिखित गुण अनुभवमें आसके यही नहीं; किन्तु और भी इस विषयमें नियमित आता है कि-

संवत्सरशते पूर्णे याति सम्वत्सरः क्षयम् ।
देहिनामायुषः काले यत्र यन्मानमिष्यते ॥

अर्थात् जिस युगमें जो आयु नियत की गई है उसीके अनुसार कलियुगमें भी मान एक शतकी आयु होना नियत है; परन्तु अब देखनेमें आ रहा है कि उत-

अर्थात् ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय पुरुष सावित्रीको अनन्यचित होकर ध्यान धरता हुवा एक वर्ष पर्यन्त गोमध्यमें प्रतिदिन निवास करता हुआ गोदुग्ध मात्र पीता हुवा व्यतीत करे पुनः तीन दिनका उपवासकर पौष, माघ, फाल्गुन इनमेंसे किसी मासकी पूर्णिमाको आमलेके वनमें प्रवेश करे आर बड़े २ आमलोंसे फले हुये वृक्षपर स्थितिकर और उसकी शाखामें लगे हुए फलको स्पर्श करता हुआ तब तक ब्रह्मका आराधन करे जब तक उस फलमें अमृत आवे फिर उसको भोजन करे इस प्रकार अवश्य आमलेमें अमृत वसता है और अमृतके संयोगसे शर्करामधु इनके समान मधुर मृदु स्नेहयुक्तोंको सेवन करनेसे सहस्र वर्षकी आयुको प्राप्त होता है। बस प्रियवर! इसे क्या आप असत्य मानते हैं? देखिये तो प्रथम इन्द्रियजीत होना और ब्रह्मचारी होना फिर एक वर्ष यह तपका सेवन बादको ब्रह्मके आराधनसे अमृतका पान करना क्या साधारण बात है? प्रियवर! यदि इस प्रकार करसकेंगे तो क्या कोई कठिन वस्तु है जो ऐसा मनुष्य न प्राप्त करसके? फिर इसमें शंका करना निर्मूल है; क्योंकि शंका वहां होनी चाहिये जहां ग्रन्थकर्ताके उपदेशानुसार सेवन करनेपर यदि फल प्राप्त न हो। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि यदि सर्व व्यवस्था आप ठीक करले तो अवश्य सिद्धकर सफल होंगे और सुश्रुत भी इस विषयमें चिकित्सा-स्थानके रसायनाधिकारमें उपदेश करचुके हैं कि,-"सप्तपुरुषा रसायनं नोपयुंजीरन्-तद्यथा-अनात्मवान् दरिद्रः प्रमादी व्यसनी पापकृत् सालसी भेषजापमानीचेति-तथा-सप्तभिरेव कारणैः न सम्पद्यते फलम्-तद्यथा-अज्ञानादनारम्भादस्थिरचित्तत्वाद् दारिद्र्यात् अनात्मत्वा अभावदत्वादनर्हत्वादौषधालाभाचेति" बस अब आप विचारें कि जो अनात्मवान् पथ्यापथ्यको न मानकर मनमानी करनेवाला दरिद्री सम्पत्तिरहित प्रमादी रसायनको सेवनकर उसके आचार विचारका ध्यान न रखनेवाला व्यसनी कुत्सितकर्मोंमें लगनेवाला पापकृत् निन्दितकर्म करनेवाला आलसी भेषजापमानी औषधिनिन्दक यह सात प्रकारके पुरुष, रसायन न सेवन करें और सात कारणोंसे रसायनका फल नहीं होता जैसे कि अज्ञानात् रसायनका ज्ञान सेवन करने और करानेवालेको न होनेसे, अनारम्भात् आरम्भ न करनेसे, अस्थिर चित्तत्वात् रसायन सेवनकर चित्त सावधान न रखनेसे, प्रमादात् बेपर्वाहीसे, दारिद्र्यात् गरीबीसे, अनायत्तत्वाद् रसायनके योग्य आश्रयके न होनेसे, अनर्हत्वात् रसायनके योग्य मनुष्यके न होनेसे, औषधालाभात् यथार्थ गुणयुक्त औषधिके न मिलनेसे। अब इसको देखिये कि इनसे बचा हुआ कौन मनुष्य है इस समयमें जो रसायनका फल प्राप्त करे और आपने कौन २ रसायन सेवन की हैं या मनके ही उद्वेगी बयांससे सबको असत्य प्रकटकर मियां मिट्ठुका कटु शब्द प्रयुक्त करचुके हैं; क्योंकि कर्मा-

नुसार फल मिलता है अतः मैंने भी इस प्रकारका लेख लिया है नहीं समझ कि यह कोई प्रधान कारण नहीं है, क्योंकि अभी तक जिनकी मगजमें विमानोंकी व्यवस्था, हस्ती और उनके समान बलवानका निग्रह करना, मोटरका रोकना, दूरसे लक्षवेधन करना, एक मनुष्यको अपनी आत्माका बल दूसरेमें आविष्ट करना इत्यादि बातें पूर्व यद्यपि घर २ में विद्यमान थीं; परन्तु अबसे पहिले देखनेमें नहीं आती थी। वह अब भारतरत्न श्रीज्ञानेन्द्रचन्द्र, श्रीरामतीर्थ, श्रीराममूर्ति, भवानीदत्त, श्रीअप्पाराव प्रभृतियोंने इस अधोगलित समयमें भी सब परिचय दिखाकर पूर्वकी उन्नति व विशालताको सिद्ध करदिया है तो रसायन कहां रहे ? भी यदि आप यथोक्त साकल्य सामग्री रसायन योग्य उपस्थित करसके तो इस हीन दशाके समयमें भी उक्त रसायन कराई जासकेगी। आप व्यय सहित यथा व्यवस्थाको उपस्थित कीजिये और कटिबद्ध बनें। और आपके प्रश्नोत्तर इस लेख द्वारा उत्तरित होचुके। आप अपनी प्रतिज्ञाको मेरी सम्मति लेकर प्रस्तुत हों अन्य लोग लोभ दिखाकर अथवा छलसे उत्तम और कठिन बातोंको जानलेना या परीक्षण समझेंगे और विश्वसितोंमें अविश्वास प्रचार करेगा।

श्रीमतां विनीत पं० विष्णुदत्त, वैद्यराज और
पं० उमादत्त मिश्र वैद्यराज, वैद्यरत्न आयुर्वेदाचार्य
कानपुर.

क्षुधा–भूख ।

क्षुधा दो प्रकारकी है एक कुदरती क्षुधा व दूसरी कृत्रिम क्षुधा। कृत्रिम क्षुधा भांग पीनेसे, गरम औषध खानेसे और ऐसेही अन्य उपायोंसे उत्पन्न होती हैं और कुदरती क्षुधा मिताहार, मनपसंद कार्य–व्यवसाय, सम्पूर्ण निद्रा, और व्यायाम प्रभृति कुदरती उपायोंसे उत्पन्न होती है। कृत्रिम क्षुधा सदैवके लिये नीभ नहीं सक्ती। कुछ दिन गरमागरम औषधियोंके सेवनसे वह अत्यन्त प्रज्वलित होती है; किन्तु आखिरमें वह पूर्वके समान साधारण दशामें भी नहीं रहसक्ती। उत्तेजक तत्वके सेवनसे पाचनाक्रिया विशेष तेजीसे चलकर कृत्रिम क्षुधा उत्पन्न हो यह ठीक बात है; किन्तु आखिरमें पाचनाक्रिया थक कर निर्बल पड़जाती है। कृत्रिम क्षुधासे खुराक अधिक प्रमाणमें लिया जाय, पावभर दूधको नहीं पचानेवाला सेरभर दूधको तुरन्त पी सक्ता है; किन्तु उसको पचानेका कार्य दिनप्रतिदिन पाचनाक्रियाके लिये भारदप होता जाता है और अन्तमें उसका परिणाम अच्छा नहीं होता है। उत्तेजक

दार्थोंके जोरसे कुछदिन पाचन होने लगता है; किन्तु आन्तमें पाचनाक्रिया अधिक गिड़ जाती है। केवल उत्तेजक पदार्थ-औषधियोंसे क्षुधा लगानेकी चेष्टा करनेवाले पने ही हाथसे अपना अनीष्ट करते हैं। हमारी तो यही सम्मति है कि जिसकी धा किसी कारणसे मन्द होगई हो उन्हको कुदरती क्षुधा उत्पन्न करनेके उपायोंको रना सब प्रकारसे हितावह है।

१ इसके लिये सबसे प्रथम मिताहारी होना जरूरी है और वह भी वनस्पति-जन्य और सादा होना चाहिये। जैसे बने वैसे थोड़ा खुराक लेनेका विचार रखना चाहिये। दो या तीनसे अधिकबार भोजन नहीं करना। भोजनमें खुराकका प्रमाण कम रखकर-अच्छी तरहसे नहीं चबाया जाय तो कम खुराक लेनेकी आदत नहीं रहसक्ती; क्योंकि थोड़ा भी अच्छीतरहसे चबाकर खानेवाला मनुष्य ही थोड़ेसे खुराकमें मध्यान्हसे रात्री तक अन्य खुराककी इच्छाके विना चला सक्ता है। क्योंकि अच्छी तरहसे चबाया हुआ खुराक नेक भी निरर्थक नहीं जाकर पाचन-क्रियाको यथेच्छ रीतिसे उपयोगी होसक्ता है। भोजनका ग्रास छोटा होनेपर चबा-नेका कार्य अधिक सुगम होता है यह बात समझदार मनुष्योंको कहनेकी कुछ भी जरूरत नहीं हैं। बाजारकी वस्तुयें और वैसी ही कच्ची वस्तुओंको नहीं खाना चाहिये। जहां तक होसके वहां तक पेटमें कुछ जगह खाली रखना चाहिये। जिस दिन खानेकी ओर कमरुचि हो उस दिन उपवास कर डालना। विना भूखके दूध प्रभृति कोई वस्तु नहीं खाना। चाह प्रभृति व्यसनोंका त्याग करना। क्षुधा—भूख लगे तब खीचड़ीके समान हलका व कम खुराक लेना चाहिये। अधिक घृत तेलवाला खुराक नहीं होना चाहिये। घृत तेल प्रभृति स्निग्ध पदार्थ क्षुधा रहित होनेवाले मनुष्यके लिये गुणकारी नहीं हैं।

इस लिये वे पदार्थ कुछ दिनके लिये छोड़ देनेसे क्षुधाका प्रमाण बढेगा और इसके सिवाय आहारके नियमोंके सम्यक् पालन करनेके उपरान्त भी आवश्यक्ता मालूम हो तो कुछ दिनके लिये किसी अच्छे चिकित्सककी सम्मतिके अनुसार कुछ दवाका सेवन करना अनुचित नहीं हैं; किन्तु क्षुधाको जागृत करनेके लिये प्रतिदिन उत्तेजक दवाओंकी सहायता लेनेकी जरूरत हुआ करे यह अत्यन्त हानीकारी है।

२ मनपसंद कार्य-व्यवसायके करते रहनेसे मन प्रफुल्लित रहता है और दिन आनन्दमें जाता है इससे जठर अपना कार्य उत्तम रीतिसे करती है जिससे योग्य समयपर कुदरती क्षुधा उत्पन्न हो यह स्वाभाविक है। कार्यरहित और प्रमादी होकर बैठे रहनेका परिणाम सब प्रकारसे विपरीत आता है।

३ सम्पूर्ण निद्राके लेनेसे अन्नका अच्छी तरहसे पाचन होजाता है जिससे कुदरती क्षुधा उत्पन्न होती है; अतः आरोग्यकी न्यूनतावाले मनुष्योंको हो सके तो दिनमें भी एक आधघंटा निद्रा लेना यह नियम अपवादरूप है।

४ व्यायाम-कसरत यह मंदकोपको दूर करनेका सर्वोत्तम उपाय है। फिर इसके द्वारा शरीरके समस्त भाग मजबुत होनेसे अपना कार्य संतोषजनक करनेके योग्य बनते हैं। इससे वे कुदरती क्षुधाको उत्पन्न करनेके लिये हरएक प्रकारसे अनुकूलतायुक्त है।

संक्षेपमें यही निवेदन करना है कि कुदरती क्षुधा कृत्रिम उपायोंसे उत्पन्न करनेकी आवश्यक्ता हो तो थोड़े ही दिनोंके लिये ही वैसा करना; किन्तु पीछे तो ऊपरोक्त कुदरती उपाय ही करने चाहिये कि जिससे क्षुधाके लिये शिकायत करनेका कारण सदैवके लिये दूर हो और आरोग्यके लिये वही उपकारी हैं।

श्रीयुक्त कविराज गणनाथसेनजी एम. ए. एल., एम. एस. वैद्यावतंस विद्यानिधिजीका संक्षिप्त जीवनचरित।

इस जगतमें केवल उसी मनुष्यका नाम कालस्रोतके मध्यमें स्थिर रहता है, जो अपने आयुष्यकालमें जगत्‌का कोई स्थायी उपकार तथा जगत्‌के लिये कोई अपूर्व आदर्श रखजाता है। आज ऐसे ही एक देश-हितव्रत महानुभावका संक्षिप्त जीवनचरित्र लिखकर हम अपने पाठकोंको समर्पित करते हैं। ये महानुभाव गत प्रयाग वैद्यक सम्मिलनके सभापति कलकत्तेके सर्वतन्त्र स्वतन्त्र वैद्यवर श्रीयुक्त गणनाथसेन एम्. ए. एल्. एम्. एस्. विद्यानिधि कविभूषण महाशय हैं।

कविराज महाशयके पिता काशीके सुप्रसिद्ध राजवैद्य स्वर्गीय पं. विश्वनाथ विद्याकल्पद्रुम थे। आपके प्रपितामह कविराज पं. गङ्गाधरजीको वर्तमान काशीनरेशजीके प्रपितामहने बङ्गदेशसे सानुरोध अपने यहां बुलाया था। तबसे कई पीढ़ियां बीत गयीं। आप लोग काशी ही के वासी होगये। विद्याकल्पद्रुमजी आयुर्वेदके जैसे आचार्य थे; वैसे ही संस्कृत साहित्यके भी उत्कट पण्डित थे। निस्सन्देह आपके द्वारा संस्कृत और आयुर्वेदका बहुत कुछ उपकार हुआ। आप हिन्दीमें उत्तम कविता भी करते थे। विद्याकल्पद्रुमजीके शुभगृह—काशीकी पुण्यभूमिमें विक्रमीय संवत् १९१४ आश्विन कृष्णा ६ को हमारे चरितनायक श्रीयुत गणनाथजीका जन्म हुआ। आपकी अवस्था जब केवल ५ ही बरसकी थी, तब आपकी स्नेहमयी माताका

प्रत्यक्ष शारीरके कर्ता और आयुर्वेद विद्यापीठके सभापति.
श्रीयुत. कविराज गणनाथसेन एम. ए. एल्. एम. एस्.
विद्यानिधि, कविभूषण, वैद्यरत्नम (कलकत्ता.)

The Mukund Art Printing Press, Ahmedabad.

स्वर्गवास होगया। इससे आपको मातृस्नेहसे वञ्चित रहना पड़ा। माताका स्वर्गवास होजानेके दो ही वर्ष बाद आपके पिताजीको बङ्गाल मैमनसिंहके प्रसिद्ध महाराज सूर्यकान्त आचार्यकी स्त्रीकी चिकित्सा करनेके लिये कलकत्ते आना पड़ा, तबसे आप लोग यहां रहने लगे। बाल्यकालहीमें आपकी तीक्ष्णबुद्धि तथा असाधारण स्मरणशक्तिको देखकर सभी चकित होते और साथ ही यह भविष्यवाणी कहते कि एक दिन ये गणनाके योग्य असाधारण पुरुष होंगे। उनकी यह भविष्यवाणी कहां तक ठीक हुई इसका पता पाठकोंको जीवनचरितके पढ़जानेसे आप ही लग जायगा।

शिक्षा—अक्षरारम्भके पूर्व ही श्रीयुत् गणनाथजीने अपने पूज्य पिताजीसे अमरकोश और अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करली थी, और केवल १० ही वर्षकी अवस्थामें रघुवंश, शाकुन्तल, साहित्यदर्पण एवं नैषधादि महाकाव्य तथा महा नाटकोंको भली भांति पढ़कर संस्कृतमें अच्छे व्युत्पन्न होगये थे। इसके अनन्तर आयुर्वेद और उसके साथ ही साथ घरमें अङ्गरेजी पढ़ने लगे। ग्यारह वर्षकी अवस्थामें आप गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेजकी पांचवी कक्षामें प्रविष्ट हुए। इस समय आप बङ्ग और संस्कृत भाषाकी कविता भी करने लगे थे। संस्कृतकी कविता आपकी बहुत ही सरस और हृदयग्राही होती थी और "विद्योदय" संस्कृत मासिक पत्रमें प्रकाशित हुआ करती थी। कालेजकी सब वृत्तियों (Junior Sanskrit Scholarship) से पुरस्कृत होकर सन् १८९४ ई. में आप इण्टेन्सकी परीक्षामें सगौरव उत्तीर्ण हुए। इधर पिताजीसे आयुर्वेदके चरक, सुश्रुत वाग्भट्टादि ग्रन्थ भली प्रकार अध्ययन करके अच्छे पारङ्गत होगये। इसी बीचमें आपके पूज्य पिताजीका स्वर्गारोहण होगया; इससे आपको विद्योपार्जनादिमें बहुत ही कष्ट और परिश्रम उठाना पड़ा। इसके सिवाय और कोई सहायक न होनेके कारण गृहस्थीका समस्त भार भी आप ही पर आ पड़ा। इस समय आपकी आर्थिक दशा भी ऐसी नहीं थी जिससे प्रतिष्ठापूर्वक रहकर कलकत्तेका खर्च चला सकते। जो कुछ हो, इन सब आपदाओंसे आप कुछ भी विचलित नहीं हुए, एवं महात्माओंके कर्तव्यानुसार विपद्में धैर्यका अवलम्बन कर बुद्धिमत्तासे काम लेना आरंभ किया, और आप अपनी कुल प्रथानुसार चिकित्सा करने और शिष्योंको पढ़ाने लगे। पाठकवृन्द! इधर यह सब कार्य करना और उधर नियमित रूपसे कालेजमें पढ़कर भी कलकत्तेका भारी खर्च चलाना यह आप जैसे असाधारण बुद्धिसम्पन्न पुरुषका ही काम था। पढ़ते पढ़ते आप सन् १८९६ ई. में एफ्. ए. की प्रथम कक्षामें उत्तीर्ण हुए। आपकी कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभासे सभी अध्यापक प्रसन्न रहते। गवर्नमेण्ट संस्कृत

कालेजके भूतपूर्व प्रिन्सपल महामहोपाध्याय स्वर्गीय महेशचन्द्र न्यायरत्न सी. आई. ई. महोदयने आपको सांख्य, स्मृति, न्याय, वेदान्त और दर्शनादिकी उच्च परीक्षाएं क्रमशः उत्तीर्ण होते हुए देख बड़ी प्रसन्नताके साथ कालेजकी सीनियर स्कालरशिप (E. G. Senior Sanskrit Scholarship) अर्थात् २५ रु. मासिकवृत्ति और "कविभूषण" की उपाधि दी। इसके अतिरिक्त स्वयं एक महत्त्वपूर्ण प्रशंसापत्र देकर अपना हार्दिक प्रेम प्रकट किया।

एफ. ए. से उत्तीर्ण होकर श्रीयुत गणनाथजीने बी. ए. पढ़ना आरंभ किया, किन्तु शारीरिक अस्वस्थतासे Percentage (उपस्थितिका दिनसंख्या) कम रहनेके कारण परीक्षा दे नहीं सके। इसी समय आपका विचार देशी वैद्यों और कविराजोंकी त्रुटिपर आकर्षित हुआ, जिनको डाक्टरोंके प्रति कई विषयोंमें नीचा देखना पड़ता है। अतएव पूर्वीय और पश्चिमीय विद्याको मिलाकर आयुर्वेदका उद्धार करनेके लिये आपने डाक्टरी पढ़नेका विचार किया। तदनुसार सन् १८९८ ई. में आपने मेडिकल कालेजमें भरती होकर शस्त्रविद्या, प्रसूतिविद्या, प्राणिविद्या प्रभृति विषयोंमें सर्वोच्च प्रशंसापत्र और मासिकवृत्ति (First certificate of Honour & Scholarship in Surgery, Midwifery Comp. Anatomy &c प्राप्त की और सन् १९०३ ई. में कलकत्ता विश्वविद्यालयकी अन्तिम डाक्टरी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर एल्. एम्. एस्. की उपाधि पायी। शस्त्रविद्यामें विशेष सुदक्ष होनेके कारण सबसे उच्च वृत्ति (Duke of Edinburgh Prize in Surgery) आपहीको मिली। तत् पश्चात् सन् १९०८ में आपने घरहीमें पढ़कर बी. ए. और एम. ए. एक साथ पास किया। आप संस्कृतमें भी प्रथम श्रेणीके एम. ए. हैं। आपका सर्व विषयोंमें अगाध पाण्डित्य देखकर सर्व शास्त्रदर्शी अपूर्व वेदज्ञ राय एशियाटिक सोसाइटीके संस्कृत विभागके प्रधान पदाधिष्ठित स्वर्गीय सत्यव्रत सामश्रमी आचार्यजीने संस्कृत अभिनन्दन द्वारा आपको "विद्यानिधि"की उपाधि विभूषित किया। अभी १९११ आश्विन महीनेमें प्रयागके तृतीय वैद्यक सम्मेलनने आपको "वैद्यावतंस"की पदवी दी है।

कविराज महाशय प्राचीन और अर्वाचीन दोनों पद्धतियोंके विद्वान होनेपर भी प्राचीन परिपाटीके पक्षपाती और सबे धर्मप्रिय हैं। पूर्व पुरुषोंकी निन्दा करनेवालोंकी बातें आप सहन नहीं करसकते। [illegible] १० की बरसकी थी; तब काशीके गुरु महाशय उमापति [illegible] कवियों पर कुछ कटाक्ष किया था। उसका आपने [illegible] के गद्य पद्यात्मक उत्तर प्रत्युत्तर [illegible]

थे। एकवार आपका षोड्श वर्षकी अवस्थामें पं. सादीरामजी शास्त्रीके साथ शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें आपका ही पक्ष सवल रहा। आपके गुणोंका वखान कहां तक करे, आप बहुत ही सरल चित्त और उदार महानुभाव है। आपने बहुत कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आप अपने छात्रोंको, वैद्यक, न्याय, व्याकरण, दर्शन, मीमांसादि सभी शास्त्रोंकी शिक्षा देते हैं। आपके कितने ही छात्र "काव्यतीर्थ" "वेदान्ततीर्थ" आदि उपाधि प्राप्त करचुके हैं; इस लिये गवर्नमेण्टकी ओरसे आपका नाम गजट द्वारा अध्यापक श्रेणीमें भी प्रकाशित हुआ करता है। आप डाक्टर होनेपर भी अपने औषधालयमें आयुर्वेदीय औषधिका ही व्यवहार करते हैं। आप मद्रासके "श्रीकन्यका परमेश्वरी आयुर्वेदीय कालेज" और ढाकाके "सारस्वत समाज" के कईवार परीक्षक बनाये जाचुके हैं। आपने संस्कृतमें कविता पुष्पाञ्जलि, मेघ सन्देश आदि काव्योंके अतिरिक्त दो अपूर्व आयुर्वेदीय ग्रन्थोंकी रचना की है। जिनका नाम—"प्रत्यक्ष शारीर" और "सिद्धान्त निदान" है। प्रत्यक्ष शारीरमें शारीरिक तत्त्वोंको आपने सचमुच ही प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है जिन विचारे देशी वैद्योंको शारीरतत्त्वोंके सम्बन्धमें डाक्टरोंके सामने नीचा देखना पड़ता है उनकी इस ग्रन्थसे वह असुविधा दूर हो जायगी। यह ग्रन्थ तीन खण्डोमें समाप्त हुआ है और मनोहर चित्रोंसे सुशोभित है। दूसरा, "सिद्धान्तनिदान" भी अपने ढङ्गका निराला ही है। इसमें महर्षियोंका अभिप्राय और प्रसिद्ध ग्रन्थोंकी त्रुटियां—भ्रांति स्पष्ट दिखायी गयी हैं और न्यूमोनियां प्लेग आदि नवप्रादुर्भूत रोगोंके निदानकी भी चरचा कर दी-गयी है। उक्त दोनो ही ग्रन्थ अपने ढंगके निराले और वैद्यमात्रके लिये उपादेय हैं। निस्सन्देह इन ग्रन्थोंमें आयुर्वेदका भारी उपकार होगा। ईश्वर आपको दीर्घायु करे जिससे भारतवर्षमें आयुर्वेदका गतगौरव पुनर्रर्जित अवस्थापर लाकर संसारका उपकार साधन कर सकें। (चिन्मय जगत्.)

आयुर्वेदका इतिहास।

(पूर्व प्रकाशितानन्तर.)

चरक और सुश्रुतके पौर्वापर्यके निर्द्धारणके लिये इस समय अनेक मनुष्य बुद्धि चलाते हैं और उनमेंसे अधिक सज्जनोंकी सम्मतिके अनुसार सश्रुतकी अपेक्षा चरककी प्राचीनता सिद्ध होती *।

पौर्वापर्य सम्बन्धी विचार।

एमसिल्वेन् लेवि नांवक एक फरासी देशका सुप्रसिद्ध पण्डित जो कि प्राच्यभाषाका विद्वान् समझा जाता है उसने चीन देशके "त्रिपिटक"

ग्रन्थकी समालोचना करते हुए चरक नांवके एक चिकित्सकके नांवका पता लगता है। यह चरक शकवंशीय राजा कनिष्कका दीक्षा-गुरु था। इस कनिष्कका राज्य दूसरी शताब्दिमें बताया जाता है। उससे चरक दूसरी शताब्दिमें थे। दूसरी शताब्दिमें भारतमें ग्रीसका प्रभाव बढा हुआ था ग्रीससे ही चरकने चिकित्सा विज्ञानका बीज प्राप्त किया था। फरासी पंडितकी यह युक्ति ठीक नहीं है ऐसा स्पष्ट मालूम होता है। पाणिनिके सूत्रमें चरकका नांव है। कठचरकाल्लुक् (४।३।१०७) पाश्चात्य पण्डित गोल्डष्टुकारकी गवेषणाके प्रभावसे स्पष्ट हुआ कि पाणिनी खीस्त जन्मके छ सात वर्ष पूर्व विद्यमान थे। गोल्डष्टुकारका कथन है कि खीस्त जन्मके ५४३ वर्ष पहिले शाक्यमुनि बुद्धदेवने इस लोकका परित्याग किया। पाणिनी उनसे भी प्रथम थे। कात्यायन एवं पतञ्जली दोनोंने पाणिनीके सूत्रकी टीका और व्याख्याको लिखा है। कात्यायनकी टीकाका नांव वार्तिक और पतञ्जलिकी टीकाका नांव महाभाष्य। पाणिनी सूत्रके वार्तिकपर महाभाष्य लिखा गया था कहा जाता है कि कात्यायन और पतञ्जलि दोनों एक समयमें थे। गोल्डष्टुकार १४० पूर्व खीस्टाब्दसे १२० खीस्टाब्दके पूर्वके बीचमें इनकी विद्यमानताके विषयमें लिख गया है। चक्रपाणि और भोज दोनोंने पतञ्जलिको चरकके सम्पादक प्रतिसंस्कर्ता स्वीकार किया है। इन सब विषयोंपर विचार करनेपर उक्त फरासी पण्डितका सिद्धान्त भ्रम व प्रमादपूर्ण है ऐसा सिद्ध होता है। सुश्रुतकी अपेक्षा चरकको प्राचीन कहनेमें विद्वान् लोग यह कारण बतलाते हैं कि चरककी अपेक्षा सुश्रुतकी विषय रचना शृंखलाबद्ध है। जिस समय जो मनमें आया वही चरकने लिख दिया है। समय २ पर उन्होंने विषयक्रमकी उपेक्षा करके दार्शनिक तत्वको प्रधानता दी है। इधर चरककी अपेक्षा सुश्रुतका अभिप्राय अनेक अंशोंमें वैज्ञानिक भित्तिके ऊपर स्थापित है। न्याय और वैशेषिक दर्शनके अनेक विषयमें चरकका अनुसरण देखा जाता है। इस हिसाबसे भी चरकका प्राचीनत्व सिद्ध होता है।" विद्वानोंकी और भी सम्मति है कि चरककी भाषा सरल अथच [illegible] रहित है। वेदके ब्राह्मण भागके साथ उसकी सादृश्यता प्रतीत होती है। मि. [illegible] और मि. [illegible]ने अनु-सन्धान करके देखा है कि [illegible] भाषा [illegible] और [illegible] जो [illegible] देखे जाते हैं वे [illegible] और [illegible] अपेक्षा [illegible] और [illegible] है। [illegible] [illegible] और [illegible]

[illegible]

उपमापूर्ण है; किन्तु उनकी अपेक्षा चरककी भाषा अत्यन्त सरल है। जिससे मालूम होता है कि चरककी रचना इनके पूर्व समयमें हुई थी। अथर्ववेदके पश्चात् चिकित्सा सम्बन्धी अनेक ग्रन्थोंकी रचना हुई थी इस बातको पाश्चात्य पण्डितगण भी स्वीकार करते हैं। चरक द्वारा स्पष्ट मालूम होता है कि चरकने अग्निवेशके ग्रन्थका अनुसरण किया है और उस समय अग्निवेश, भेल, जतुकर्ण, पराशर, हारीत, क्षारपाणि, प्रभृतिके रचे हुए चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थ देशमें आदरणीय थे। कालक्रमसे वे समस्त ग्रन्थ लुप्त होगये। जिस समय वागभट्टने चरक व सुश्रुतके आधारपर "अष्टांगहृदय" ग्रन्थकी रचना की उसमें भेल और हारीतके केवल नामोंका उल्लेख है; किन्तु उसी समय वे समस्त ग्रन्थ लुप्त होगये हो ऐसा मालूम होता है। अस्तु जो कुछ हो; किन्तु यह सब प्रकारसे प्रतीत होता है कि बौद्धधर्मके प्रादुर्भावके पूर्व ही चरकसंहिता प्रचलित थी। पाश्चात्य विद्वानोंकी भी यही सम्मति है। इससे पाश्चात्य देशोंमें सभ्यताके विस्तारके पहिले ही भारतवर्ष चिकित्सा विज्ञानकी आलोचनामें प्रतिष्ठित होचुका था ऐसा सिद्ध होता है। जिस प्रकार चरककी प्राचीनताके सम्बन्धमें प्रमाणोंकी न्यूनता नहीं हैं उसी प्रकार सुश्रुतकी प्राचीनताके सम्बन्धमें भी प्रमाणोंका अभाव नहीं हैं। सुश्रुत इस समय जिस भाषामें लिखित व प्रकाशित है उसके विषयमें अनेक विद्वानोंकी सम्मति है कि उसकी भाषा चरककी भाषाकी अपेक्षा आधुनिक है। यद्यपि अनेक परिभाषा व संज्ञा चरक व सुश्रुतमें समान देखी जाती है फिर भी सुश्रुतकी भाषा चरककी अपेक्षा कुछ निरस, संक्षिप्त एवं सार कथायुक्त हैं। इसी लिये सुश्रुत चरककी अपेक्षा आधुनिक है ऐसा पाश्चात्य पंडितोंका कथन है; किन्तु रचनाकी निरसता व सारकथाकी पूर्णता होनेके कारण यह आधुनिक है ऐसा स्वीकार नहीं किया जासक्ता। सूत्रसाहित्यकी रचना निरस, संक्षिप्त अथच सारकथा पूर्ण रहती है; किन्तु पाश्चात्य विद्वानोंका ही कथन है कि "पुराणादिकी सरल एवं विस्तृत भाषाकी प्रवृत्तिके पहिले सूत्रसाहित्यकी उत्पत्ति हुई थी।" उसके पश्चात् वर्तमान समयकी प्रचलित सुश्रुतसंहिता ही क्या प्राचीन-संहिता है? क्या यह संहितात्रयोंकी त्यों बराबर चली आती है? क्या उसमें परिवर्तन नहीं हुआ है? हमारी समझके अनुसार इस विषयका कोई प्रमाण नहीं मिलेगा; किन्तु उसके विपरीत प्रमाण अनेक मिलते हैं। सुना जाता है कि इस समय जो सुश्रुतसंहिता मिलती है उसकी संकलनाके समय नागार्जुनने उसकी भाषामें अनेक स्थानपर परिवर्तन करदिया है। प्राचीन ग्रन्थोंकी भाषा परिवर्तनके विषयके ऐसे और भी अनेक उदाहरण दिये जासके हैं। मानवधर्म संहिताकी रचना किस समय हुई थी? इसका निर्णय नहीं किया जासक्ता। पहिले वह सूत्ररूपसे ग्रथित हुई थी

ऐसा मालूम होता है; किन्तु पीछेके समयमें उसकी भाषाने और ही स्वरूप धारण कर लिया है। और तो जाने दीजिये अपने भाषाके प्राचीन ग्रन्थोंको ही देखिये उनकी प्राचीन प्रतियों और आज प्रचलित प्रतियोंमें कितना अन्तर होगया है। प्राचीन सुश्रुत ग्रन्थमें भी उसी प्रकार परिवर्तन होगया है। बहुतसे सज्जन कहते हैं कि सुश्रुतके "उत्तरतंत्र"का भाग सुश्रुतके समयमें प्रचलित नहीं था। नागार्जुनने उसे सुश्रुतके साथ जोड़ दिया है।

इतिहासमें नागार्जुन नामसे कई व्यक्तियोंका परिचय प्राप्त होता है। आलबारुणीने एक नागार्जुनके विषयमें कुछ लिखा है। वह ई. स. आठवीं व नवमी शताब्दिमें विद्यमान था आलबारुणीने लिखा है कि वह नागार्जुन रसायनशास्त्रका पारदर्शी था। सोमनाथके समीपके देहकगढ़-(जूनागढ़?)में उसका निवास था। उन्होंने रस सम्बन्धी विस्तृत विवरणयुक्त ग्रन्थ लिखा था जो कि इस समय प्रायः अप्राप्य है।" आलबारुणीका और भी कथन है कि उसके इतिहास रचनाके एकसो वर्ष पहिले यह नागार्जुन विद्यमान था। कई विद्वान् इसी नागार्जुनको सुश्रुतका प्रति संस्कर्ता मानते हैं। इस और फिर हुयेनसांग जिस समय भारतवर्षमें था उस समयमें नागार्जुन नामक एक रसायनशास्त्रका महान् पंडित बौद्धधर्मावलम्बी राजा शतवाहनके दरबारमें मौजुद था। मि. बिलका कथन है कि नागार्जुन शतवाहन राजाका बंधु था। राजा शतवाहन उड़ियाके दक्षिण–पश्चिम भागमें आये हुए कोशल देशका अधिपति था। यही नागार्जुन बोधिसत्वके नामसे भी प्रसिद्ध है। वह रसायनशास्त्रका अच्छा पण्डित था। भिन्न २ औषधियोंके मिश्रणसे वह एक प्रकारकी गुटिका तैयार करना जानता था जिसके सेवन करनेसे बो ... वृद्धिको प्राप्त होती थी और शरीर एवं मनमें किसी प्रकारकी ... होती थी। राजा शतवाहनने उस अपूर्व गुणवाली औषधि ... बिलके ग्रन्थद्वारा और भी हाल मालूम होते ... उनकी उपाधि मालूम होती है) भिन्न २ ... प्रभावसे पत्थरके टुकड़ोंमेंसे स्वर्ण तैयार ... परिचय दिया है और बिलने जिस ने ... है उसी नागार्जुनका उल्लेख कवि बाणभ ... जाता है। कवि बाणभट्ट हुयेनसांगके ... मालूम होता है। अब पूर्वोक्त दोनों ... उना की यह कौन कहसकता है? ... प्रसिद्ध है। पूर्वोक्त दोनों ना...

माध्यमिक दर्शनके प्रवर्तकके नांवसे परिचित था। यह नागार्जुन किस समय विद्यमान था यह निर्णय करना कठिन है। किसी २ का कथन है कि इस्त्रीसनकी पहला शताब्दिमें वह विद्यमान् था। विदर्भराज भोजभद्रने इमी नागार्जुनकी प्रभावशाली वक्तृता व धर्म व्याख्याको श्रवणकर बौद्धधर्मकी दीक्षा ली थी। राजा भोजभद्र ई. स. के ५६ वर्ष पहिले उत्पन्न हुआ था। यह नागार्जुन ही माध्यमिकसूत्रका कर्ता था और यह चिकित्साशास्त्रका भी विद्वान् था। अर्थात् इनके द्वारा भी सुश्रुत ग्रन्थकी संकलना होनेकी बात प्रचलित है। काश्मीरके इतिहास राजतरंगिणीमें काश्मीर राज्यके एक और नागार्जुनका परिचय मिलता है। उसने शाक्यसिंहके जन्मके १५० वर्षके पश्चात् बौद्धधर्मको ग्रहण किया था। उस हिसाबसे खीस्तके जन्म पहिले ४ सो वर्षके अन्तिम अंशमें या तीसरी शताब्दिके प्रथमांशमें उनकी विद्यमानता सिद्ध होती है। काश्मीरराज नागार्जुनके सम्बन्धमें राजतरंगिणीमें लिखा है कि;-

> बोधिसत्वश्च देशेऽस्मिनेकभूमीश्वरोऽभवत्।
> स तु नागार्जुनः श्रीमान् षड्दर्शनसंश्रयी॥

अनुसंधान करनेपर और भी कई नागार्जुनोंका परिचय मिलता है और किस र्जुनने सुश्रुतका संस्कार किया इस विषयमें मतद्वैधता उत्पन्न होती है। अस्तु-कुछ हो किसी भी नागार्जुनने सुश्रुतका संस्कार किया हो; किन्तु यहांपर इस ... करनेके विषयमें दो बातें उपस्थित होती हैं। प्रथम सुश्रुतका प्राचीनत्व ... पाश्चात्य देशमें चिकित्साविज्ञानकी स्थापनाके पहिले भारतवर्षमें चिकित्साका पूर्ण विकाश। महाभारतमें सुश्रुतका विश्वामित्रके पुत्ररूपसे परिचय ...या है। कात्यायनके वार्तिकमें भी सुश्रुतका नाम देखा जाता है। वार्तिककार ...न खीस्तके ४०० वर्ष पहिले विद्यमान् थे। ऐसा पाश्चात्य पण्डितोंने निश्चय ... है। इससे सुश्रुत कितना प्राचीन है यह स्पष्ट होता है। बाओयाकी पाण्डु... चरक व सुश्रुतका कुछ परिचय मिलता है। च्यवनप्राश, शिलाजतु प्रभृति ...धके सभी उपादान उसमें लिखे हुए हैं। उसमें वृद्ध सुश्रुत नामक सुश्रुतके ...उल्लेख देखा जाता है। डाक्टर हार्नलने पूर्वोक्त बाओयाकी पाण्डुलिपिका एक संस्करण प्रकाशित किया है एवं उल्लिखित पाण्डुलिपिकी वर्णमालाके काल निर्णय करनेके लिये चेष्टा की है। डाक्टर बुलरने भी विशेष विचारकर पूर्वोक्त पाण्डुलिपिके काल-समयका निर्णय किया है। उनका अनुमान है कि ई. स. ४०० से ई. स. ५०० के मध्यमें वे समस्त पाण्डुलिपि लिखि गई हैं। जिस समय वे समस्त पाण्डुलिपियें लिखि गई थी उस समय भी सुश्रुत प्रभृतिके आविर्भाव

ऐसा मालूम होता है; किन्तु पीछेके समयमें उसकी भाषाने और ही स्वरुप धारण कर लिया है। और तो जाने दीजिये अपने भाषाके प्राचीन ग्रन्थोंको ही देखिये उनकी प्राचीन प्रतियें और आज प्रचलित प्रतियें कितना अन्तर होगया है। प्राचीन सुश्रुत ग्रन्थमें भी उसी प्रकार परिवर्तन होगया है। बहुतसे सज्जन कहते हैं कि सुश्रुतके " उत्तरतंत्र "का भाग सुश्रुतके समयमें प्रचलित नहीं था। डाह्लनाचार्यने उसे सुश्रुतके साथ जोड़ दिया है।

इतिहासमें नागार्जुन नांवसे कई व्यक्तियोंका परिचय प्राप्त होता है। आलबारुणीने एक नागार्जुनके विषयमें कुछ लिखा है। वह ई. स. आठवी व नवमी शताब्दिमें विद्यमान् था आलबारुणीने लिखा है कि वह नागार्जुन रसायनशास्त्रका पारदर्शी था। सोमनाथके समीपके देहकगढ-(जूनागढ?)में उसका निवास था। उन्होंने रस सम्बन्धी विस्तृत विवरणयुक्त ग्रन्थ लिखा था जो कि इस समय प्रायः अप्राप्य है।" आलबारुणीका और भी कथन है कि उसके इतिहास रचनाके एकसो वर्ष पहिले यह नागार्जुन विद्यमान था। कई विद्वान् इसी नागार्जुनको सुश्रुतका प्रति संस्कर्ता मानते है। इस और फिर हुयेनसांग जिस समय भारतवर्षमें था उस समयमें नागार्जुन नामक एक रसायनशास्त्रका महान् पंडित बौद्धधर्मावलम्बी राजा शतवाहनके दरबारमें मौजुद था। मि. बिलका कथन है कि नागार्जुन शतवाहन राजाका बंधु था। राजा शतवाहन उड़िषाके दक्षिण—पश्चिम भागमें आये हुए कौशल देशका अधिपति था। यही नागार्जुन बोधिसत्वके नांवसे भी प्रसिद्ध है। वह रसायनशास्त्रका अच्छा पण्डित था। भिन्न २ औषधियोंके संमिश्रणसे वह एक प्रकारकी गुटिका तैयार करना जानता था जिसके सेवन करनेसे सो वर्षकी परमायु वृद्धिको प्राप्त होती थी और शरीर एवं मनमें किसी प्रकारकी क्षीणता नहीं प्राप्त होती थी। राजा शतवाहनने उस अपूर्व गुणवाली औषधिका सेवन किया था। मि. बिलके ग्रन्थद्वारा और भी हाल मालूम होते हैं कि, यही नागार्जुन बोधिसत्व (यह उनकी उपाधि मालूम होती है) भिन्न २ औषधियोंके संमिश्रणसे रसायन प्रक्रियाके प्रभावसे पथ्थरके टूकडोमेंसे स्वर्ण तैयार करसक्ता था। हुयेनसांगने जिस नागार्जुनका परिचय दिया है और बिलने जिस नागार्जुनकी अलौकिक शक्तिका कथन किया है उसी नागार्जुनका उल्लेख कवि वाग्भट्ट द्वारा रचित " हर्षचरित " ग्रन्थमें देखा जाता है। कवि वागभट्ट हुयेनसांगके भारतागमनके समयमें विद्यमान थे ऐसा मालूम होता है। अब पूर्वोक्त दोनों नागार्जुनोमेंसे किस नागार्जुनने सुश्रुतकी संकलना की यह कौन कहसक्ता है? बौद्धोंके धर्मशास्त्रके रचयिताओमें नागार्जुनका नांव प्रसिद्ध है। पूर्वोक्त दोनों नागार्जुनोंसे उसको स्वतंत्र समझना चाहिये। वह

माध्यमिक दर्शनके प्रवर्तकके नांवसे परिचित था। यह नागार्जुन किस समय विद्यमान था यह निर्णय करना कठिन है। किसी २ का कथन है कि इस्त्रीसनकी पहिला शताब्दिमें वह विद्यमान् था। विदर्भराज भोजभद्रने इसी नागार्जुनकी प्रभावशाली वक्तृता व धर्म व्याख्याको श्रवणकर बौद्धधर्मकी दीक्षा ली थी। राजा भोजभद्र ई. स. के ५६ वर्ष पहिले उत्पन्न हुआ था। यह नागार्जुन ही माध्यमिकसूत्रका कर्ता था और यह चिकित्साशास्त्रका भी विद्वान् था। अर्थात् इनके द्वारा भी सुश्रुत ग्रन्थकी संकलना होनेकी बात प्रचलित है। काश्मीरके इतिहास राजतरंगिणीमें काश्मीर राज्यके एक और नागार्जुनका परिचय मिलता है। उसने शाक्यसिंहके जन्मके १५० वर्षके पश्चात् बौद्धधर्मको ग्रहण किया था। उस हिसाबसे स्त्रीस्तके जन्म पहिले ४ थो वर्षके अन्तिम अंशमें या तीसरी शताब्दिके प्रथमांशमें उनकी विद्यमानता सिद्ध होती है। काश्मीरराज नागार्जुनके सम्बन्धमें राजतरंगिणीमें लिखा है कि,-

> बोधिसत्वश्च देशेऽस्मिन्नेकभूमीश्वरोऽभवत्।
> स तु नागार्जुनः श्रीमान् षड्दर्शनसंश्रयी॥

अनुसंधान करनेपर और भी कई नागार्जुनोंका परिचय मिलता है और किस नागार्जुनने सुश्रुतका संस्कार किया इस विषयमें मतद्वैधता उत्पन्न होती है। अस्तु-जो कुछ हो किसी भी नागार्जुनने सुश्रुतका संस्कार किया हो, किन्तु यहांपर इस संस्कार करनेके विषयमें दो बातें उपस्थित होती हैं। प्रथम सुश्रुतका प्राचीनत्व और दूसरा पाश्चात्य देशमें चिकित्साविज्ञानकी स्थापनाके पहिले भारतवर्षमें चिकित्सा विज्ञानका पूर्ण विकाश। महाभारतमें सुश्रुतका विश्वामित्रके पुत्ररूपसे परिचय दिया गया है। कात्यायनके वार्तिकमें भी सुश्रुतका नाम देखा जाता है। वार्तिककार कात्यायन स्त्रीस्तके ४०० वर्ष पहिले विद्यमान् थे। ऐसा पाश्चात्य पण्डितोंने निश्चय किया है। इससे सुश्रुत कितना प्राचीन है यह स्पष्ट होता है। बाओयाकी पाण्डुलिपिमें चरक व सुश्रुतका कुछ परिचय मिलता है। च्यवनप्राश, शिलाजतु प्रभृति औषधके सभी उपादान इसमें लिखे हुए हैं। इसमें वृद्ध सुश्रुत नामक सुश्रुतके नांवका उल्लेख देखा जाता है। डाक्टर हार्नेलने पूर्वोक्त बाओयाकी पाण्डुलिपिका एक संस्करण प्रकाशित किया है एवं उल्लिखित पाण्डुलिपिकी वर्णमालाके काल निर्णय करनेके लिये चेष्टा की है। डाक्टर बुहरने भी विशेष विचारकर पूर्वोक्त पाण्डुलिपिके काल-समयका निर्णय किया है। उनका अनुमान है कि ई. स. ४०० से ई. स. ५०० के मध्यमें वे समस्त पाण्डुलिपि लिखि गई हैं। जिस

समय [illegible]

कालके सम्बन्धमें कोई कुछ भी निश्चित सिद्धान्त नहीं कर सके हैं। उनके समय निर्धारणमें इस समय जो संदेह उपस्थित है वह संदेह उस समय भी मौजुद था।

ई. स. ४०० किम्वा ५०० की पाण्डुलिपिमें चरक और सुश्रुतका अंश विशेष रुपसे उद्धृत होनेके कारण और उस समय भी वे बहुत प्राचीन समयके विद्वान् रुपसे परिचित होनेके कारण, उनकी प्राचीनताके सम्बन्धमें कुछ भी सन्देह नहीं हो सक्ता। वर्तमान समयमें जिस परिवर्तित भाषामें और परिवर्तित पद्धतिमें सुश्रुत व चरक प्रचलित हैं उनके विषयमें भी विचारपूर्वक देखनेसे माळूम होता है कि वह भी सहस्रों वर्षोंके पूर्वकी रचना है इसमें कुछ भी संदेह नहीं। [क्रमशः]

अनुभव किये हुए उपाय।

१ सुजाककी औषधि–सफेद जीरा १ तोला, कलमी शोरा ६ माशे, रेवंदखताई ८ माशे, सरदचीनी ६ माशे, खर्बुजेके बीज १ तोला, इन सबको खूब घोंटे फिर प्यासके मुताबिक शीतल जल डाल २ या ४ तोला मिश्री मिला दोनो वक्त ७ दिन तक पीवे, आराम होजायगा।

२ दस्त बंद करनेकी औषधि–मोचरस, मांई, सफेद राळ, बिळकत्था, आमकी गुठली, धावेके फूल, पोस्तका डोंडा और सफेद जीरा, ये सब एक एक तोला लेकर बारीक पीसकर शीशीमें भरदे। इसमेंसे ४ माशे लेकर काली मिरच और निमक मिलाकर दहीके तक्रके साथ प्रतिदिन सुबह, शाम खानेसे सब प्रकारके अतिसार व संग्रहणी दूर होवे हैं और भूख बढती है।

३ खांसीकी औषधि–संगभरम १ माशा, पीपल २ माशे, हरड़ ३ माशे बहेरा ४ माशे, अडूसेकी जड़का छिलका ५ माशे, भडंगी ६ माशे, और खैरसार २१ माशे सबको बारीक पीसकर बबूलके छिलकेके क्वाथकी २१ भावना देकर चनेके समान गोली बनाय खीरके साथ खानेसे खांसी, दमा, क्षयरोग दूर होवे हैं।

आ० पं० पण्डित रघुनाथ शर्मा–जम्बू।

१ संखिया प्रयोग–१ तोला संखिया और २० तोला गोमूत्र लेकर लोहेकी छोटी कड़ाहीमें डालकर अग्निपर रक्खे (याद रहे कि संखियाकी १ ही डली १ तोलाकी हो) फिर गोमूत्र जल जानेपर संखियाकी डलीको निकालकर थूहरके दूधमें १५ दिन रक्खे। दूधमें डली बराबर डूबी रहे। बाद १५ दिनके डलीको पानीसे धो

सहयोगी समाचार।

२३ प्रताप—कानपुर—यह साप्ताहिकपत्र कोई ४—५ माससे प्रकाशित होने लगा है। इसकी प्रायः सभी संख्यायें हमने ध्यानसे पढ़ी। इसकी ओजस्विनी भाषा, विचारपूर्ण लेख व सामयिक जोरदार टिप्पणियां हिन्दी संसारमें आदरपाने योग्य हैं। इस पत्रकी नीतिके सम्बन्धमें हम अपनी ओरसे कुछ भी निवेदन नहीं कर अपने पाठकोंका उसके नांवकी ओर ध्यान आकर्षित करनेके साथ २ सरस्वतीके सुयोग्य सम्पादककृत इस पत्रके मोटोको ही नीचे उद्धृत करदेते हैं जिससे पाठक स्वयं समझ लेंगे।

"जिसको न निज गौरव तथा निज देशका अभिमान है,
वह नर नहीं नर पशु नीरा है और मृतक समान है।"

२४ आरोग्यसिन्धु—विजयगढ़—यह वैद्यक सम्बन्धी मासिकपत्र है इस पत्रमें आरोग्य सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते हैं। हमारा सिद्धान्त यहीं है कि आरोग्य सम्बन्धी जितने अधिकपत्र निकले और उनका जितना अधिक प्रचार हो उतना ही अच्छा हैं। सहयोगीकी हम सब प्रकारसे उन्नति चाहते हैं। इसके सम्पादक वैद्य राधावल्लभजी हैं। डेमी साईझके ४ फरमे प्रतिमास निकलते हैं। वार्षिक मूल्य १॥-) है।

२५ गृहलक्ष्मी—प्रयाग—यह मासिक पत्रिका चार वर्षसे बराबर प्रकाशित होरही है। इसका सम्पादन पं. सुदर्शनाचार्य बी. ए. और श्रीमती गोपालदेवीजी कररहे हैं। गृहलक्ष्मीके लेख स्त्रियोंके लिये उपयोगी रहते हैं। जिन भाग्यवानोंके घरमें स्त्रियां पढी लिखी हो उन्होंने इस पत्रका ग्राहक होना चाहिये। गृहलक्ष्मीके मुख पृष्ठपर जो चित्र दिया जाता है वह वास्तविकमें विचित्र जैसा मालूम होता है। ऐसे चित्रका देना हमारी समझके अनुसार ठीक नही हैं। वार्षिक मूल्य २)

२६ वीरभारत—कलकत्ता—यह साप्ताहिकपत्र बीचमें कुछ दिन बंद हो कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुआ है। यों तो इसके सभी लेख उपयोगी रहते बीच २ में सनातनधर्मके सिद्धान्तोंको समझानेवाले लेख सनातनधर्मावलम्बियों के लिये बहुत उपयोगी रहते हैं। आकार इसका बहुत बड़ा है, हरएक संख्या भी रहते हैं और उपहारकी पुस्तकोंकी तो बात ही क्या कहना? यह सब भी वार्षिक मूल्य केवल २) है।

वैद्योंके प्रति प्रश्न।

प्रश्न नं. १–' च्यवनप्राश रसायन ' एक प्रसिद्ध औषधि है। सुनते हैं, कि महाराज च्यवन ऋषिने बहुत बूढे और सूखे होने पर भी इसी औषधिके सेवनसे जवान होकर किसी राजाकी दी हुई कन्याओंसे संतान पैदा की थी। प्रश्न यह है, कि महाराज च्यवन ऋषिकी यह कथा आनुपूर्विक किस प्रकार है ? और कौनसे ग्रंथमें लिखी है ? चरकसंहितामें कुछ विशेष हाल लिखा नहीं है। आशा है, कि वैद्यजन इसकी मीमांसा कर इस पत्रमें मुद्रित कराके मुझे अनुगृहीत करेंगे।

वैद्य श्रीअम्बिकादत्त शर्मा–अलीगढ.

प्रश्न नं. २–जिन स्त्रियोंके जननेन्द्रियका भाग संतान होनेके समय या संतान होनेके विना किसी समयमें भी हो–भारी होकर योनिमार्गमें आ जाता है या कुछ बाहर निकल आता है ऐसी व्रीड़ाकर गुप्तेन्द्रियकी चिकित्सा किसी योग्य चिकित्सकके द्वारा होना उचित है; किन्तु ऐसे रोगोंमें विनापढी मूर्खा नीच जातकी स्त्रियां दवा करती हैं। जिससे बड़ी भारी हानी होती है। यद्यपि मैंमसाहिया इसका इलाज करती हैं; किन्तु उनकी फीस भारी होनेके कारण साधारण घरोंकी स्त्रियां उनसे कम लाभ उठासक्ती हैं। क्या इस रोगकी चिकित्साका भार वैद्योंके ऊपर नहीं है ? ग्रन्थोंमें प्रयोग हैं; किन्तु अनुभूत प्रयोगकी आवश्यक्ता है।

जिज्ञासु–आगरा.

प्रश्न नं. ३–हमारे एक मित्र है जिनकी उमर २५ वर्षकी है, कुसंगतिसे वीर्य्य नष्ट हो गया है ऐसी दशामें क्या कोई ऐसा अनुभवी और सुबुद्धिमान सद्वैद्य इस भारतभूमिमें उपस्थित नहीं है जो कि "उनकी क्षुधा तथा पाचनशक्तिको बढाते हुए और रक्त तथा वीर्यकी शुद्धि करते हुए अन्तमें वीर्यवृद्धिके और वृद्धि होनेपर उसके स्तंभनके उपाय [इलाज] काष्टादिक, औषधियोंके क्रमागत प्रयोग प्रथक् २ बतला सर्वदाके लिये नीरोग्य, और वीर्यवान बना अपना चिरऋणी करले।

नोट–प्रकृति गर्म है इस समय भस्मादिक औषधियोंका प्रयोग कदापि स्वीकार न किया जायगा कारण चन्द्रप्रभावटी व अन्य भस्मादिक प्रयोगोंमें विशेष कष्ट पहुंचा और अब भी कभी २ कष्ट प्रतीत होता रहता है।

भिखारीदास प्यारेलाल–अलीगढ.

स्वीकार व समालोचना।

प्रत्यक्ष शारीरम्-इस पत्रके पाठक कलकत्तेके सुप्रसिद्ध कविराज श्रीगणनाथ सेनजीसे अपरिचित नहीं हैं। अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके तृतीय अधिवेशनके सभापतिरूपसे आपने जो एक आयुर्वेदके महत्त्व सम्बन्धी व्याख्यान दिया जिसको इस पत्रके पाठकोंने अत्यन्त आदरके साथ पढा होगा। उस व्याख्यानको पढकर ही मान्यवर कविराजजीके आयुर्वेदसम्बन्धी उच्चज्ञान व परमप्रेम पाठक स्पष्ट समझ गये होंगे। आप कैसे तेजस्वी व प्रतिभाशाली पुरुष हैं यह १० अंकमें दिये आपके चित्र व संक्षिप्त चरित्रसे पाठक अच्छी तरहसे समझ जायंगे। आप जैसे आयुर्वेदके धुरंधर विद्वान् है; वैसे ही डाक्टरी विद्याके भी प्रसिद्ध पण्डित है। आपने आयुर्वेदके उद्धारके लिये महाव्रत लिया है और उसके साहित्यको उच्च बनानेके लिये आप विविध प्रकारसे चेष्टा कररहे है। यह प्रत्यक्षशारीर ग्रन्थ भी उसीका परिणाम है। स्थानाभावसे हम इस ग्रन्थकी समालोचना इस अंकमें नहीं करसके। भविष्यमें इसकी योग्य समालोचना प्रकाशित करेंगे। इस समय इस ग्रन्थरत्नका सादर स्वीकार करते हैं और संस्कृतज्ञ पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि इस ग्रन्थकी एक २ प्रति मंगवाकर अवलोकन करे। यह ग्रन्थ तीन भागोंमें विभक्त किया गया है जिसमेंसे अभी प्रथम भाग छपगया है उस एक भागका मूल्य ४) है। विशेष जाननेके लिये निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहिये।

श्रीयुक्त कविराज श्रीगणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि कविभूषण.
नं. ६५ विडनस्ट्रीट—कलकत्ता.

आयुर्वेदीय समाचार।

१ बीकानेरमें एक आयुर्वेदीय सभा स्थापित हुई है। जिसके लिये उद्योग करनेवाले आयुर्वेद महामण्डलके राजपूताना प्रान्तिय मंत्री व्यास पूनमचन्दजी तनसुखजी आयुर्वेदपञ्चानन व स्थानीय वैद्योंको धन्यवाद!

२ प्रयाग माघमेलेके समय यात्रियोंकी सुविधाके लिये इस वर्ष भी आयुर्वेद महामंडल और आयुर्वेद प्रचारिणी सभाकी ओरसे धर्मार्थ औषधालय खोला गया था।

३ फरुखाबादके वैद्योंने मिलकर एक वैद्यसम्मति स्थापित की है।

४ हिसार-पञ्जाबमें एक "सेवक औषधालय" खोला गया है। इसके अधिष्ठाता श्रीयुक्त कविराज पं. श्रीदत्तजी वैद्य नियत हुए हैं।

५ मूडापार-दोसंगाबादसे वैद्य रघुनाथशास्त्रीजी लिखते हैं कि यहांपर एक आयुर्वेदीय औषधालय खोला गया है जिसमें धर्मार्थ औषधियां दीजाती है।

हिन्दी वैद्यकल्पतरु।

प्रथम वर्षके सभी अंक पुस्तकके रूपमें तैयार है।

श्रीपरमात्माकी कृपासे व अपने उदार सहयोगी एवं ग्राहक अनुग्राहकोंकी अनुकंपासे हिन्दी वैद्यकल्पतरुने प्रथम वर्षमें ही अच्छी सफलता प्राप्त की है। गुजराती "वैद्यकल्पतरु" १९ वर्षसे प्रकाशित होरहा है जिस प्रकार उसने उत्तरोत्तर देश व आयुर्वेदके साथ २ गुजराती साहित्यकी सेवा की है उसी प्रकार "हिन्दी वैद्यकल्पतरु" भी अपने कार्यक्षेत्रमें अग्रसर होनेके लिये यथासाध्य चेष्टा कररहा है। हमें गुजराती पत्रके अनुभवसे मालुम हुआ है कि नवीन ग्राहक प्रायः पछिके अंकोको आग्रहके साथ मांगा करते हैं। हमारे पास अनेक चिठियां आती है कि गुजराती वैद्यकल्पतरुके समस्त प्राचीन अंक भेज दीजिये चाहे मूल्य अधिक लीजिये; किन्तु हम उस आज्ञाका पालन करनेमें सर्वथा असमर्थ है। आखीर अधिक सज्जनोंके आग्रहसे प्राचीन लेखोंको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेको बाध्य हुए है। प्राचीन अंकोके लिये जो आग्रह गुजराती पत्रके पाठकोंका है वही आग्रह हिन्दीमें एक दिन उपस्थित होगा; किन्तु उस आग्रह या आज्ञाका पालन करनेमें हम कब समर्थ होंगे यह हम ठीक नहीं कहसक्ते; किन्तु इस समय यह समय उपस्थित होगया है कि इस वर्ष जो लोग ग्राहक हुए हैं उनमेंसे अधिक सज्जन गतवर्षके अंकोको प्रायः मांग रहे हैं। हमने उन्हींकी आज्ञाको शिरोधार्यकर व उनको अधिक सुविधा हो यह जानकर जितनी कापियां प्रथमवर्षकी बची थी उनको एकत्रकर पुस्तकके रूपमें तैयार करवा लिया है। १९१२ के १२ मासके अंक एक पुस्तकमें बंधकर तैयार है। ऐसी पुस्तकोंकी संख्या बहुत कम है इस लिये जो सज्जन गतवर्षके वैद्यकल्पतरुके उपयोगी लेखोंको पढना चाहें वे तुरन्त सूचना दें। जहां तक हमारे पास वैसी पुस्तकें तैयार होंगी वहां तक ही हम भेज सकेंगे।

विशेष सूचनायें।

१. आर्डर भेजनेपर यदि १० दिनमें पुस्तक न मिले तो समझ लेना की अब बाकी नही हैं। फिर दूसरा पत्र भेजना नहीं।

२. वी. पी. व पोस्टेज चार्ज सहित मूल्य १-१२-० होगा। इसमें कुछ भी कम नहीं लिया जायगा।

३. विद्यार्थी व पुस्तकालयोंको १) में पुस्तक १-१२-० में ही मिल
१

स्वीकार व समालोचना।

प्रत्यक्ष शारीरम्-इस पत्रके पाठक कलकत्तेके सुप्रसिद्ध कविराज श्रीगणनाथ सेनजीसे अपरिचित नहीं हैं। अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके तृतीय अधिवेशन सभापतिरुपसे आपने जो एक आयुर्वेदके महत्व सम्बन्धी व्याख्यान दिया था जिसको इस पत्रके पाठकोंने अत्यन्त आदरके साथ पढा होगा। उस व्याख्यानको पढकर ही मान्यवर कविराजजीके आयुर्वेदसम्बन्धी उच्चज्ञान व परमप्रेमको पाठक स्पष्ट समझ गये होंगे। आप कैसे तेजस्वी व प्रतिभाशाली पुरुष हैं यह इस अंकमें दिये आपके चित्र व संक्षिप्त चरित्रसे पाठक अच्छी तरहसे समझ जांयगे आप जैसे आयुर्वेदके धुरंधर विद्वान् हैं; वैसे ही डाक्टरी विद्याके भी प्रसिद्ध पण्डित है। आपने आयुर्वेदके उद्धारके लिये महाव्रत लिया है और उसके साहित्यको उच्च बनानेके लिये आप विविध प्रकारसे चेष्टा कररहे है। यह प्रत्यक्षशारीर ग्रन्थ भी उसीका परिणाम है। स्थानाभावसे हम इस ग्रन्थकी समालोचना इस अंकमें नहीं करसके। भविष्यमें इसकी योग्य समालोचना प्रकाशित करेंगे। इस समय इस ग्रन्थरत्नका सादर स्वीकार करते हैं और संस्कृतज्ञ पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि इस ग्रन्थकी एक २ प्रति मंगवाकर अवलोकन करे। यह ग्रन्थ तीन भागोंमें विभक्त किया गया है जिसमेंसे अभी प्रथम भाग छपगया है उस एक भागका मूल्य ४) है। विशेष जाननेके लिये निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहिये।

श्रीयुक्त कविराज श्रीगणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि कविभूषण.
नं. ६५ विडनस्ट्रीट—कलकत्ता.

आयुर्वेदीय समाचार।

१ बीकानेरमें एक आयुर्वेदीय सभा स्थापित हुई है। जिसके लिये उद्योग करनेवाले आयुर्वेद महामण्डलके राजपूताना प्रान्तीय मंत्री व्यास पूनमचन्दजी तनसुखजी आयुर्वेदपञ्चानन व स्थानीय वैद्योंको धन्यवाद!

२ प्रयाग माघमेलेके समय यात्रियोंकी सुविधाके लिये इस वर्ष भी आयुर्वेद महामंडल और आयुर्वेद प्रचारिणी सभाकी ओरसे धर्मार्थ औषधालय खोला गया था।

३ फरुखाबादके वैद्योंने मिलकर एक वैद्यसम्मति स्थापित की है।

४ हिसार-पञ्जाबमें एक "सेवक औषधालय" खोला गया है। इसके अधिष्ठाता श्रीयुक्त कविराज पं. श्रीदत्तजी वैद्य नियत हुए हैं।

५ मूदांपार-होसंगाबादसे वैद्य रघुनाथप्रसादजी लिखते हैं कि यहांपर एक आयुर्वेदीय औषधालय खोला गया है जिसमें धर्मार्थ औषधियां दीजाती है।

स्वीकार व समालोचना।

प्रत्यक्ष शारीरम्-इस पत्रके पाठक कलकत्तेके सुप्रसिद्ध कविराज श्रीगणनाथ सेनजीसे अपरिचित नहीं हैं। अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके तृतीय अधिवेशनके सभापतिरुपसे आपने जो एक आयुर्वेदके महत्व सम्बन्धी व्याख्यान दिया था जिसको इस पत्रके पाठकोंने अत्यन्त आदरके साथ पढा होगा। उस व्याख्यानको पढकर ही मान्यवर कविराजजीके आयुर्वेदसम्बन्धी उच्चज्ञान व परमप्रेमको पाठक स्पष्ट समझ गये होंगे। आप कैसे तेजस्वी व प्रतिभाशाली पुरुष हैं यह इस अंकमें दिये आपके चित्र व संक्षिप्त चरितसे पाठक अच्छी तरहसे समझ जांयगे आप जैसे आयुर्वेदके धुरंधर विद्वान् हैं; वैसे ही डाक्टरी विद्याके भी प्रसिद्ध पण्डित हैं। आपने आयुर्वेदके उद्धारके लिये महाव्रत लिया है और उसके साहित्यको उ बनानेके लिये आप विविध प्रकारसे चेष्टा कररहे है। यह प्रत्यक्षशारीर ग्रन्थ भी उसीका परिणाम है। स्थानाभावसे हम इस ग्रन्थकी समालोचना इस अंकमें नहीं करसके। भविष्यमें इसकी योग्य समालोचना प्रकाशित करेंगे। इस समय इस ग्रन्थ रत्नका सादर स्वीकार करते हैं और संस्कृतज्ञ पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि इस ग्रन्थकी एक २ प्रति मंगवाकर अवलोकन करे। यह ग्रन्थ तीन भागोंमें विभक्त किया गया है जिसमेंसे अभी प्रथम भाग छपगया है उस एक भागका मूल्य ४) है विशेष जाननेके लिये निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहिये।

श्रीयुक्त कविराज श्रीगणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि कविभूषण
नं. ६५ विडनस्ट्रीट—कलकत्ता.

आयुर्वेदीय समाचार।

१ बीकानेरमें एक आयुर्वेदीय सभा स्थापित हुई है। जिसके लिये उद्योग करनेवाले आयुर्वेद महामण्डलके राजपूताना प्रान्तीय मंत्री व्यास पूनमचन्दजी तन सुखजी आयुर्वेदपञ्चानन व स्थानीय वैद्योंको धन्यवाद!

२ प्रयाग माघमेलेके समय यात्रियोंकी सुविधाके लिये इस वर्ष भी आयुर्वेद महामंडल और आयुर्वेद प्रचारिणी सभाकी ओरसे धर्मार्थ औषधालय खोला गया था।

३ फरुखाबादके वैद्योंने मिलकर एक वैद्यसम्मति स्थापित की है।

४ हिसार-पञ्जाबमें एक "सेवक औषधालय" खोला गया है। इसके अधि-ष्ठाता श्रीयुक्त कविराज पं. श्रीदत्तजी वैद्य नियत हुए हैं।

५ मूदापार-होसंगाबादसे वैद्य रघुनाथशास्त्रीजी लिखते हैं कि यहांपर एक आयुर्वेदीय औषधालय खोला गया है जिसमें धर्मार्थ औषधियां दीजाती है।

स्वीकार व समालोचना।

प्रत्यक्ष शारीरम्-इस पत्रके पाठक कलकत्तेके सुप्रसिद्ध कविराज श्रीगणनाथ-सेनजीसे अपरिचित नहीं हैं। अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके तृतीय अधिवेशनके सभापतिरुपसे आपने जो एक आयुर्वेदके महत्व सम्बन्धी व्याख्यान दिया था जिसको इस पत्रके पाठकोंने अत्यन्त आदरके साथ पढा होगा। उस व्याख्यानको पढकर ही मान्यवर कविराजजीके आयुर्वेदसम्बन्धी उच्चज्ञान व परमप्रेमको पाठक स्पष्ट समझ गये होंगे। आप कैसे तेजस्वी व प्रतिभाशाली पुरुष हैं यह इस अंकमें दिये आपके चित्र व संक्षिप्त चरितसे पाठक अच्छी तरहसे समझ जांयगे। आप जैसे आयुर्वेदके धुरंधर विद्वान् है; वैसे ही डाक्टरी विद्याके भी प्रसिद्ध पण्डित है। आपने आयुर्वेदके उद्धारके लिये महाव्रत लिया है और उसके साहित्यको उच्च बनानेके लिये आप विविध प्रकारसे चेष्टा कररहे है। यह प्रत्यक्षशारीर ग्रन्थ भी उसीका परिणाम है। स्थानाभावसे हम इस ग्रन्थकी समालोचना इस अंकमें नहीं करसके। भविष्यमें इसकी योग्य समालोचना प्रकाशित करेंगे। इस समय इस ग्रन्थ-रत्नका सादर स्वीकार करते हैं और संस्कृतज्ञ पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि इस ग्रन्थकी एक २ प्रति मंगवाकर अवलोकन करे। यह ग्रन्थ तीन भागोंमें विभक्त किया गया है जिसमेंसे अभी प्रथम भाग छपगया है उस एक भागका मूल्य ४) है। विशेष जाननेके लिये निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहिये।

श्रीयुक्त कविराज श्रीगणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि कविभूषण.
नं. ६५ विडनस्ट्रीट—कलकत्ता.

आयुर्वेदीय समाचार।

१ बीकानेरमें एक आयुर्वेदीय सभा स्थापित हुई है। जिसके लिये उद्योग करनेवाले आयुर्वेद महामण्डलके राजपूताना प्रान्तीय मंत्री व्यास पूनमचन्दजी तन-सुखजी आयुर्वेदपञ्चानन व स्थानीय वैद्योंको धन्यवाद!

२ प्रयाग माघमेलेके समय यात्रियोंकी सुविधाके लिये इस वर्ष भी आयुर्वेद महामंडल और आयुर्वेद प्रचारिणी सभाकी ओरसे धर्मार्थ औषधालय खोला गया।

३ फरूखाबादके वैद्योंने मिलकर एक वैद्यसभा स्थापित की है।

४ हिसार-[illegible]में एक "सेवक औषधालय" [illegible] द्वारा श्रीयुक्त कविराज पं. श्रीदत्तजी वैद्य नियत हुए [illegible]

५ मुरादाबाद-होसंगाबादमें वैद्य रघुनाथप्रसाद[illegible] आयुर्वेदीय औषधालय खोला गया है जिसमें [illegible]

हिन्दी वैद्यकल्पतरु।

प्रथम वर्षके सभी अंक पुस्तकके रुपमें तैयार है।

श्रीपरमात्माकी कृपासे व अपने उदार सहयोगी एवं ग्राहक अनुग्राहकोंकी नुकंपासे हिन्दी वैद्यकल्पतरुने प्रथम वर्षमें ही अच्छी सफलता प्राप्त की है। गुज- ाती "वैद्यकल्पतरु" १९ वर्षसे प्रकाशित होरहा है जिस प्रकार उसने उत्तरोत्तर द्य व आयुर्वेदके साथ २ गुजराती साहित्यकी सेवा की है उसी प्रकार "हिन्दी द्यकल्पतरु" भी अपने कार्यक्षेत्रमें अग्रसर होनेके लिये यथासाध्य चेष्टा कररहा है। में गुजराती पत्रके अनुभवसे मालुम हुआ है कि नवीन ग्राहक प्रायः पछिके ंकोको आग्रहके साथ मांगा करते हैं। हमारे पास अनेक चिठियां आती है कि जराती वैद्यकल्पतरुके समग्र प्राचीन अंक भेज दीजिये चाहे मूल्य अधिक लीजिये; केन्तु हम उस आज्ञाका पालन करनेमें सर्वथा असमर्थ है। आखीर अधिक सज्ज- ोंके आग्रहसे प्राचीन लेखोंको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेको बाध्य हुए है। ाचीन अंकोके लिये जो आग्रह गुजराती पत्रके पाठकोंका है वही आग्रह हिन्दीमें क दिन उपस्थित होगा; किन्तु उस आग्रह या आज्ञाका पालन करनेमें हम कब मर्थ होंगे यह हम ठीक नहीं कहसके; किन्तु इस समय यह समय उपस्थित होगया है कि इस वर्ष जो लोग ग्राहक हुए हैं उनमेंसे अधिक सज्जन गतवर्षके अंकोको ायः मांग रहे हैं। हमने उन्हींकी आज्ञाको शिरोधार्यकर व उनको अधिक सुविधा हो यह जानकर जितनी कापियां प्रथमवर्षकी बची थी उनको एकत्रकर पुस्तकके पमें तैयार करवा लिया है। १९१३ के १२ मासके अंक एक पुस्तकमें बंधकर तैयार है। ऐसी पुस्तकोंकी संख्या बहुत कम है इस लिये जो सज्जन गतवर्षके वैद्य- कल्पतरुके उपयोगी लेखोंको पढना चाहें वे तुरन्त सूचना दें। जहां तक हमारे पास वैसी पुस्तकें तैयार होगी वहां तक ही हम भेज सकेंगे।

विशेष सूचनायें।

१. आर्डर भेजनेपर यदि १० दिनमें पुस्तक न मिले तो समझ लेना की अब बाकी नहीं है। फिर दूसरा पत्र भेजना नहीं।

२. वी. पी. व पोस्टेज चार्ज सहित मूल्य १-१२-० होगा। इसमें कुछ भी कम नहीं किया जायगा।

३. हिन्दी व गुजरातीवालोंको १) में वैद्यकल्पतरु दिया जाता है उनको भी यह पुस्तक १-१२-० में ही मिल सकेगी।

१

औदुम्बर।

इस नामका सर्वोपयोगी और सचित्र हिन्दी मासिकपत्र काशीसे डबल क्राउन अठपेजीपर प्रकाशित होता है। यह अपनी उन्नति बड़े वेगसे कररहा है। इसमें धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, विद्याप्रचार विषयक, औद्योगिक आदि सब विषयोंका विवेचन बड़ी ही योग्यतासे किया जाता है। सब धर्मों और सब पंथोंके पुरुषोंको इससे धार्मिक उपदेश मिलता है। प्राचीन इतिहासका तो मानो यह खजाना ही है। चाहे स्त्री पढे चाहे पुरुष बालक पढे, चाहे वृद्ध सबको एकसा आनंद और उपदेश देता है। इसमें उपदेशके साथ २ मनोरंजनकी शक्ति अधिक अपूर्व है विद्वत्समाजने केवल डेढ ही वर्षकी अवस्थामें इसका आदर किया, जितना इस अवस्थामें शायद ही किसी नूतन पत्रका किया हो। उच्च श्रेणीके विद्वानोंके सचित्र और बोधप्रद चरित्र तथा कुछ समाचार भी दिये जाते हैं। संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, उर्दू, फारसी और गुजराती इन भाषाओंके ग्रन्थोंकी आलोचना करनेमें गुणदोषोंका पूर्णरूपसे विचार किया जाता है। कागज बढ़िया और चमकीला, टाइप निर्णयसागर, चित्र हाफटोन ब्लाक आदि। जिसने इसपर एकवार दृष्टि डाली है उसने उसको तत्काल अपनालिया है। वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित २) नमूनेका अंक ०)≈। इतना सस्ता और उपयोगी मासिकपत्र आज हिन्दी साहित्यमें अप्राप्य है।

नवजीवन।

सचित्र मासिक पत्र।

प्रति मास यह पत्र काशीसे अच्छे २ मनोरञ्जक लेखोंसे विभूषित होकर प्रकाशित होता है। इसमें आर्यभाषाके प्रसिद्ध २ लेखकोंके निबन्ध प्रकाशित किये जाते हैं। धार्मिक जगतमें इसकी अनुपम स्थिति है। यदि आप उपदेशामृत पान करना चाहें तो आपको उचित है कि इस पत्रके ग्राहक बनें। वैदिक धर्मका पोषक और स्वतन्त्र विचारोंका प्रचारक है तथा आर्यभाषाका सेवक है। अगस्त माससे इसमें योरप और अमेरिका सम्बन्धी चित्र सहित लेख और भ्रमण वृत्तान्त श्रीमान् पं. केशवदेवशार्माजीकी लेखनीसे लिखे जा रहे हैं। उत्साही पुरुषोंको योग्य है कि इसके ग्राहक बनकर लाभ उठावें। भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्का नवजीवन मुखपत्र है। अतः कुमारोंको इससे विशेष लाभ पहुंचता है। वार्षिक मूल्य ३)रु०, विद्यार्थियों, कन्यापाठशालाकी अध्यापिकाओं वा पुस्तकालयोंसे २) रु. लिया जाता है। नमूना बिना मूल्य भेजा जाता है।

मैनेजर-नवजीवन, काशी सिटी.

हितकारीणी सचित्र मासिक पत्रिका।

शिक्षा, साहित्य, विज्ञान आदि विषयोंके लेख प्रकाशित करनेवाली मध्यप्रदेशकी यह एक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित लेख अन्य ढंगके अनूठे होते हैं। इसकी सरस कवितायें और रोचक कहानियां विद्यार्थी लोग बिना किसी रोकटोकके पढ़ सकते हैं। अश्लीलताको दूर रखकर उनकी नीति और आचरणका सुधारना तथा उनकी ज्ञान-वृद्धि करना इसका मुख्य और पवित्र ध्येय है। शिक्षा संबंधी लेख भी इसमें अधिकतर छपा करते हैं। इन्हीं गुणोंके कारण यह इस प्रान्तके गौरवको पहुंचती है। आरम्भहीमें इसके हजारों ग्राहक होचुके हैं। अतः विज्ञापनदाता इसमें विज्ञापन देकर बहुत लाभ उठाते हैं।

लेखक महोदय भी अपने लेख देकर बहुत कुछ आर्थिक लाभ करसके हैं क्योंकि प्रकाशित प्रायः सभी लेखोंके लिये पुरस्कार दिया जाता है।

इसका वार्षिक अग्रिम मूल्य ३) है। पत्रव्यवहारका पताः—

मैनेजर—" हितकारिणी "—जबलपुर।

लक्ष्मी (सचित्र मासिक पत्रिका।

"लक्ष्मी" हिन्दी-जगत्के लिये कोई नई वस्तु नहीं कि इसका परिचय विशेष रूपसे दिया जाय। आज बारह वर्षोंसे यह सचित्र मासिकपत्रिका जो हिन्दी-साहित्यकी अनवरत सेवा कररही है उससे यह बड़े २ विद्वानोंकी प्रशंसाकी पात्र बनचुकी है। 'दीन'जी कृत वीररसात्मक ओजस्विनी कवितायें जो इसमें प्रकाशित होती है वे हिन्दी भाषामें सर्वथा एक नई वस्तु है। पढ़ते २ युद्धोंके भीषण दृश्य आंखोंके सामने उपस्थित होजाते हैं, अंगांग रोमांचित हो उठते हैं, और नसोंमें वीर रसका पूरा संचार होजाता है। इस प्रभावशालिनी कविताकी मालाकी श्लाघा करना मार्त्तण्डको दीपक दिखलाना है। इस पत्रिकाके चित्र, चित्र-काव्य, ऐतिहासिक लेख और आख्यायिकायें भी पाठकोंको बहुत पसंद आई हैं। नवीन वर्ष (जनवरी १९१४) से इसमें और भी कई उन्नतियां की गई हैं। हमने देखा है कि बहुतेरे विद्यार्थी प्रवेशिका अथवा एफ. ए. बी. की परीक्षामें और सब विषयोंमें उत्तीर्ण होकर केवल हिन्दीमें फेल होगये हैं। हिन्दु-विद्यार्थियोंके लिये इससे बढ़कर दुःखप्रद दूसरी बात नहीं। लक्ष्मीके निबंध इतनी सरल भाषामें लिखे जाते हैं कि उनसे साधारणसे साधारण विद्यार्थी भी बहुत लाभ उठा सकता है। स्वयं विहारके डाईरेक्टर ऑफ पब्लिक इस्ट्रकशनने इसे छात्रोंके लिये बहुत उपयोगी बतलाया है। तिस पर भी लक्ष्मीका वार्षिक मूल्य २) रु. परीक्षाके लिये =) का टिकट भेजकर नमूना मंगा देखिये।

पताः—मैनेजर लक्ष्मी प्रेस, चौक बाजार—गया.

भारत महिला।

स्त्रीशिक्षाकी एक अत्युपयोगी मासिक पत्रिका।

विदित हो कि ऊपरोक्त नामकी एक मासिक पत्रिका भास्कर प्रेस मेरठसे प्रकाशित होनेवाली है। जो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है। यह पत्रिका स्त्रीसमाजके लिये सब प्रकारसे लाभदायक और संग्रह करने योग्य होगी। इसमें स्त्रीशिक्षाके विषयमें उत्तमोत्तम लेख प्रकाशित हुआ करेंगे। इसका सम्पादन भार लाहोरस्थ ब्रह्मचारिणी सुनीतिदेवीजीने अपने ऊपर ग्रहण किया है। कुमारी सुनीतिदेवी लेखनकलामें दक्ष हैं और स्त्रीशिक्षा प्रचारके लिये सदा उद्यत रहती हैं आपने जालन्धरके लोक विश्रुत कन्या महाविद्यालयकी अन्तिम श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त की है इससे पाठकगण अनुमान लगा सकते हैं कि कुमारीजी द्वारा सम्पादित यह मासिक पत्रिका आर्य महिलाओंके लिये कितनी उपयोगी होगी। सारांश यह है कि यह पत्रिका स्त्रीसमाजमें शिक्षा प्रचारके लिये बहुत उपयोगी होगी। इसके आकार डेमी अठ पेजी तथा पृष्ठ संख्या ३२ होंगी। वार्षिक मूल्य १॥) होगा; किन्तु जो सज्जन प्रथम अंक वी. पी. से मंगावेंगे उन्हें यह पत्रिका इस वर्ष एक रुपये मात्रमें ही दीजायगी।

मैनेजर-" भारत महिला "-मेरठ।

विज्ञापन छापनेका दर।

हिन्दी वैद्यकल्पतरुमें विज्ञापन छापनेका भाव।

१००० प्रति छपती है।

अवधि.	एक पेज.	आधा पेज.	पाव पेज.
१२ मास।	३०	१८	११
६ "	१८	११	७
३ "	११	७	५
१ "	५	३	२

हिन्दी वैद्यकल्पतरुके साथ क्रोडपत्र बांटनेके ७ रुपये लिये जायेंगे।

क्रोडपत्रके ऊपर " हिन्दी वैद्यकल्पतरुका क्रोडपत्र" और कुछ सम्वाद छापने चाहिये।

गुजराती वैद्यकल्पतरुमें विज्ञापन छापनेका भाव।

४००० प्रति छपती है।

अवधि.	एक पेज.	आधा पेज.	पाव पेज.
१२ मास।	७५	४०	२२
६ "	४०	२२	१२
३ "	२२	१२	८
१ "	१०	६	४

गुजराती वैद्यकल्पतरुके साथ क्रोडपत्र बांटनेके १५ रुपये लिये जायेंगे।

क्रोडपत्रके ऊपर " वैद्यकल्पतरुनो वधारो " और कुछ सम्वाद छापने चाहिये।

आयुर्वेदमें बुद्धि बढानेका उपाय।

वैद्यक साहित्यमें नवीन चर्चा।

दि संहिताओंसे लेकर आज पर्यन्तकी छपी छोटी मोटी
क पुस्तकोंमेंसे बुद्धि बढानेवाले प्रयोग और साधनोंका
बहुत ही उत्तम और सरल रीतिसे संग्रह

भाषा टीका सहित।

आयुर्वेदमें इस विषयपर अब तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। पृष्ठ संख्या १६५

शरीर और बुद्धिका परस्पर क्या सम्बन्ध है, बुद्धिका कौन स्थान है, स्फुरण और संकुचित होनेके कौन २ से कारण हैं और स्वाभाविक बुद्धि भी किन २ उपायोंसे बढाई जासकती है। आदि अनेक विषयोंका विस्तारसे अनुभव सहित विवेचन किया गया है। विद्या सुगमतासे प्राप्त करनेके लिये पूर्वकालमें क्या २ प्रयत्न होते थे और आज भी मूर्ख और जड़मस्तिष्क-वाले किस प्रकार विद्वान् बनाये जासकते हैं उसका पूरा २ विवरण इस ग्रन्थमें पढिये।

यह ग्रन्थ अनेक वैद्यक सभाओं, प्रतिष्ठित एवं विद्वान् वैद्यों और सुयोग्य लेखकों द्वारा अत्यन्त प्रशंसित हुआ है। वैद्यों, बुद्धि व्यवसायी पुरुषों और विद्यार्थियोंके लिये बड़ा ही उपयोगी एवं लाभकारी है।

भूमिका हिन्दी अंग्रेजी दोनों भाषाओंमें बड़े खोज एवं अनुभवसे लिखी गई है।

मूल्य रु. १) डाकव्यय चार आना।

आयुर्वेद पञ्चानन, आयुर्वेद भूषण,
व्यास पूनमचन्द्र तनसुख वैद्य।
ब्यावर—राजपूताना।

वर्ष २ } अहमदाबाद अप्रेल १९१४ { संख्या ४

आरोग्य, आयुष्य, आनन्द और ऐश्वर्यकी प्राप्तिके लिये
उपचारक और कुटुम्बोंमें अत्यन्त आदरणीय
वैद्यक सम्बन्धी सचित्र मासिकपत्र।

The Most Popular Medical Magazine of
India Treating of Health & Hygiene.

आयुः कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम्।
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः॥

प्रकाशक व सम्पादक-वैद्य जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी.
अहमदाबाद.

वार्षिक मूल्य १-९-० एक अङ्कका ०-२-०
भारतके बाहरके ग्राहकोंसे [illegible] शिलिंग।

अहमदाबाद।

सम्मति संग्रह।

"हिन्दी वैद्यकल्पतरु" को पढकर अनेक सज्जनोंने बिना मांगे ही अपनी २ सम्मतियां लिख भेजी हैं उनमेंसे कुछ सम्मतियां यहां पर क्रमशः उद्धृत की जाती है। प्रतिमास नवीन सम्मतियां ही उद्धृत की जाती हैं।

पाठकोंकी सम्मति—

५ आपका हिन्दी वैद्यकल्पतरु पत्र आज मुझको प्राप्त हुवा। अत्यन्त हर्षित हुवा। मैंने इस पत्रको आद्योपान्त पढा। आपका अमृतरूपी यह पत्र अत्यन्त प्रशंसनीय है। इसमें आयुर्वेद संबंधी विषय बहुत ही उत्तम लिखे हुवे हैं। मैं हार्दिक कोटानुकोट धन्यवाद परमात्माको देता हूं कि जिसने आप ऐसे महान पुरुषों[का] ध्यान आयुर्वेदकी जीर्ण नौकाके उद्धारके लिये लगाया हुवा है इत्यादि।

गोरखपुर ता. ९-११-१३. वैद्य गौरीशंकर शर्मा।

६ मैं आपके पत्रको सर्वदा पढ़ा करता हूं और लाभ भी पाता हूं। खुजली नुस्खा जो आपने दूसरे अंकमें [१८१३] लिखा था वह अतीव ही फलदायक है "पामाको निर्मूल करता है" मैं अपने औषधालयमें इस दवाका निरंतर उपयोग करता हूं। आपको यह सूचित करते मुझे अति प्रसन्नता होती है, "कि मैं आपकी कृपासे पामारोग [illegible] होगया हूं।" आप पत्रको सदैव समयपर निकालते रहें इसमें संसारका महान उपकार होगा। यदि आप गुजराती भाषाका ज्ञान होनेका उपाय बता दें, तो मैं आपके "गुजराती वैद्यकल्पतरु" के गत १८ वर्षोंके [अंक] इकट्ठे मंगा लूं।

वंशीनाथ त्रिवेदी सं० पा०
अलसीसर-(जयपुर)

सहयोगियोंकी सम्मति—

७ गत १८ वर्षसे गुजराती भाषामें वैद्यकल्पतरु नामका मासिकपत्र वैद्यक वि[षयका] निकल रहा है। संभवतः उसकी तीन सहस्रसे ऊंची प्रतियें छपती हैं, इससे यह मालूम होसकता है कि गुजरातियोंमें उसका कितना आदरमान है। हिन्दी प[ाठक] समाजको आयुर्वेद सम्बन्धी शिक्षा देने और आयुर्वेदके सर्वत्र प्रचार देखने [illegible] वैद्योंके लिये इसी सालसे उसका हिन्दी संस्करण भी निकाला गया है इस[के] लेखक और स्वामी वैद्य जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी प्रख्यातनामा वैद्य हैं अतः [illegible] इसकी उपयोगिताके विषयमें कुछ भी कहनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती है। इस[के] लेख बड़े मनोरंजक हैं। भाषा सरल, [illegible] और रोचक है। छपाई, कागज [और] सुन्दरता सभी कुछ सन्तोषप्रद है।

शुभचिन्तक—दिल्ली।

विषयानुक्रम।

ग्राहकोंसे निवेदन।

इस पत्रके १९१४ के ग्राहकोंको उपहारमें " वाजीकर कल्पतरु " नांवकी अत्युतपयोगी पुस्तक देनेका निश्चय किया गया है। यह पुस्तक छपगई है और जिन सज्जनोंने ।) भेज दिया है उनकी सेवामें क्रमशः भेजी जारही है। उपहारकी पुस्तकके लिये ।) अधिक नहीं भेजा हैं उन्हें यदि उपहारकी पुस्तककी आवश्यक्ता हो तो ।) भेज देना चाहिये या पुस्तक वी. पी. से भेजनेकी आज्ञा देना चाहिये। उपहारकी पुस्तकके विषयके सम्बन्धमें जानना चाहे वे फरवरीकी संख्यामें उसकी प्रस्तावनाको पढनेकी कृपा करें।

व्यवस्थापक.

आवश्यक सूचनायें।

१. हिन्दी वैद्यकल्पतरु प्रत्येक अंग्रेजी मासके अन्तमें प्रकाशित होता है; किन्तु किसी अनिवार्य कारणसे किसीवार कुछ विलम्ब हो जाय तो पाठकोंको अधीर हो चिट्ठी लिखनेका श्रम नहीं लेना चाहिये।
२. हम अपने यहांसे अङ्क रवाना करनेके समय सावधानी रखते हैं फिर भी किसीको कोई अङ्क न मिले तो दूसरे अङ्क मिलजाने पर पूर्वके अङ्कको मांगना चाहिये।
३. तीन मासले कम समयके लिये स्थान परिवर्तन कराना हो तो वह हमें न लिखकर अपने यहांके पोस्ट मास्टरसे लिखना।
४. रोग सम्बन्धी या पत्र सम्बन्धी कोई बात पूछना हो तो जवाबके लिये टिकट भेज देना अन्यथा उत्तर नहीं दिया जायगा।
५. वार्षिक मूल्य अग्रिम मिलनेपर ही यह पत्र भेजा जासका है।
६. असमर्थ छात्र व सार्वजनिक संस्थाओंको वार्षिक १) पर पत्र भेजा जासका है; किन्तु छात्रको अपने अध्यापकका सार्टिफिकट व संस्थाको अपनी रिपोर्ट तथा नियम प्रार्थनापत्रके साथ भेज देना चाहिये।

प्रश्न पत्र।

रोगीने अपना रोग लिखनेके समयमें यह प्रश्न पत्र अपने पास रखकर पत्र लिखना चाहिये और इन प्रश्नोंमेंसे रोगीको अनुकूल पड़े वैसी बातोंका खुलासा नम्बरवार लिखना चाहिये।

सब रोगीयोंके लिये सामान्य प्रश्न।

नाम, जाति, उम्मर, रोजगार?
शरीर पतला है या मोटा? वजन?
साधारण खुराक क्या है?
विवाह हुआ है या नहीं?
भोजनपर रुचि है या नहीं?
भूख मालूम होती है या नहीं?
दस्त साफ आता है या नहीं!
निद्रा आती है या नहीं?
दिनमें सोनेकी आदत है या नहीं!
आपको कोनर व्यसन है?
शारीरिक श्रम होता है या नहीं?
प्रथम कोई बीमारी हुई थी?
प्रकृति गरम है या शान्त!
मन प्रसन्न रहेता है या उदास?
वीर्यका दुरुपयोग हुआ है?
Any abuse or excess.
रोगके प्रधानर लक्षण?
शरीरके किसर भागमें दरद होता है?
बीमारी होनेको कितना समय हुआ?
रोगका कारण जानते हो तो लिखो?
किनर की दवा की थी?
उन्होंने रोगका क्या नांव कहा था?
रोग किस ऋतुमें घटता है?
शरीरमें कहां पर भी सोजा है?
शरीरमें ज्वर रहता है?
शरीरमें लाली है या फिकास?
कौनसा खुराक अनुकुल पड़ता है?
रोग प्रथम किस स्थानपर हुआ था?

पाचनविकारके रोगोंके विषयमें प्रश्न.

दस्तको कबजीयत है या खुलासा?
दस्त कितने व कैसे होते हैं?
दस्तका रंग कैसा रहता है!
दस्त चिकासवाला रहता है!
दस्त होनेके समय चूंक आती है!
दस्तमें गांठे गांठे आती है!
पीप, पाच या रुधिर पड़ता है!
दस्तकी बीमारी पुरानी है या नई!
पहिले कभी आम हुआ था!
दस्त जानेके समय आमण बाहर निकलती है!
अर्श अर्थात् मसेकी बीमारी है?
किसी भागमें सोजा या बोथर है?

पिशावके रोगोंके विषयमें प्रश्न।

पिसाब कैसे रंगका होता है?
पिसाब कम होता है या अधिक?
पिसाबके समय जलन होती है?
पिसाब करनेके समय विलम्ब होती है!
थर बंधती है तो उसका रंग कैसा है!
प्रमेह हुआ था या हुआ है?
चांदी उपदंश हुई थी या है?
बद हुईथी और वह फूट गई थी?

स्त्रीयोंके रोगोंके विषयमें प्रश्न।

सन्तती हुई है या नहीं?
किसीबार गर्भस्राव हुआ है!
ऋतुस्राव कम है, अधिक है या बंद?
ऋतुस्रावके समयमें दरद होता है?
गोला या हिस्टिरीया होता है?
शरीर मध्यम फूला हुआ है कि सुखी हुआ है?
प्रदर हुआ है?-धात जाती है!

जिस रोगीको इनमेंसे जोर बातें अपनेको होती हो उतनी ही नम्बरवार लिखनी चाहिये।

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

रीर संरक्षण यही प्रधान धर्म है, आरोग्य यही परम सुख है; शरीर संरक्षण और आरोग्य सम्बन्धी ज्ञान सम्पादन करनेके लिये यह "हिन्दी वैद्यकल्पतरु" मासिकपत्र सर्वोत्तम साधन है ।

हिन्दी वैद्यकल्पतरु।

गुजराती वर्ष १९.
हिन्दी वर्ष २.

अप्रेल १९१४

[संख्या ४

निवेदन।

नरजन्म धारीको धरामें रोग ही इक शूल है ।
सुख शान्तिके साधन अनेकों रोगसे निर्मूल है ॥
यह शत्रु जो पीछे पड़े तो काम चलसका नहीं ।
सुख स्वप्न होजावे धरामें नाम चलसका नहीं ॥
नर जन्मका कर्तव्य भी पालन नहीं कुछ होसके ।
व्यापन्न जीवनमें नहीं क्षण एक सुखसे सो सके ॥
परिपूर्ण होसका नहीं मनका मनोरथ एक भी ।
सुख शान्तिकी अभिलाष अन्तर्लीन होजाती सभी ॥
कुछ किया जो चाहते हो जन्म ले संसारमें ।
इस शत्रुको लो जीत प्यारे मित्र! जीवन रारमें ॥
पथ्य सेवी हो करो तुम भक्ति आयुर्वेदकी ।
त्यागदो सब भांति चिन्ता चित्तसे निज खेदकी ॥
भक्त आयुर्वेदके बनिये नहीं घबड़ाइये ।
फिर धीर होके सर्वथा उन्नति शिखरपे जाइये ॥
उन्नति करो संसारमें चारों पदारथ पाइये ।
आत्मजीवनको सखे! ध्रुव धर्म मांहि लगाइये ॥
पूर्वज हमारे जो महा बलवान और गुणवान थे ।
... कि आयुर्वेदके थे भक्त श्रद्धावान थे ॥

संसारका दुख दूर करनेको कृपाकी खान थे।
सम देखते थे विश्वको उपकार शील महान थे॥

कोई दुखी होवै नहीं यह एक उनका लक्ष था।
आरोग्यके परचार करनेका सदा ही पक्ष था॥

हा! आज ऋषि सन्तान कहलाते न हमको शर्म है।
खोचुके विद्या विभव नहिं शेष आरज धर्म है॥

खोय पर उपकारिता अरु धीरता संतोषको।
धार लीया स्वार्थ लम्पटता कपट और रोषको॥

कैसे हरैं दुख औरका जब आप ही दुख पारहे।
सान अपना खोयके हत बुद्धि हा! कहला रहे॥

हा! हमारी उपेक्षाने सकल भारतवर्षका।
रोक रक्खा मार्ग उन्नति और परमोत्कर्षका॥

पूर्व ऋषियोंने सभीका दुःख हरनेके लिये।
सब कुछ किया था देशका उपकार करनेके लिये॥

उन धीर ऋषियोंने हमें जो जो दिये उपदेश हैं।
निज देश उन्नतिके लिये वे कार्यही सविशेष हैं॥

प्रियबन्धु वैद्यो! आपको जगना जगाना चाहिये।
आरोग्यके परचारमें लगना लगाना चाहिये॥

जो बन्धु अपने दीन हैं असहाय और मलीन हैं।
रोग रिपुके कोपसे जिनके हुए तन क्षीन हैं॥

जो सब प्रकार अनाथ और नितान्त ही धनहीन है।
उन बन्धुगनकी प्राणरक्षा आपके आधीन है॥

छोड़ वञ्चकता कपट मनमें दयाको स्थान दे।
रक्षा करो उन बन्धुओंको दीन दिलमें ध्यान दे॥

इस भाँति "आयुर्वेद"की सर्वत्र भक्ति बढ़ाइये।
मनमोदि पर-उपकारका सानन्द ढोल बजाइये॥

श्रीहरिकृष्ण चतुर्वेदी दीग।

आयुर्वेदके अभ्यासकी और उत्तेजनकी आवश्यक्ता।

(ले.-श्रीयुत् प्राणाचार्य.)

आयुर्वेद यह अथर्ववेदका उपांग है और जब उसके अभ्यासके लिये गुरु परम्परा अविच्छिन्न थी; तब अपने इस देशमें प्राचीनकालमें आयुर्वेद पूर्णस्थितिको पहुंचा था जिसका एक ही उदाहरण यहांपर देना अनुचित नही हैं।

अश्विनीकुमारोंने दधीची ऋषिका शिर काटकर उसके ऊपर अश्वका शिर चिपकाकर उसके पाससे मधुविद्याका अभ्यास किया था, उस बातको इन्द्रने जानने-पर निश्चय किया था कि वह दूसरे किसीको मधुविद्या पढावे तो उसका शिर काट डालना। इस निश्चयके अनुसार इन्द्रने दधीचीऋषिका शिर काट दिया, फिर अश्विनीकुमारोंने उसके पहिले शिरको दूसरीवार चिपका दिया। यह बात वैदिक इतिहासमें लिखी है। केवल यही क्या ? और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जिससे सिद्ध होता है कि पूर्व समयमें आयुर्वेदशास्त्र पूर्णस्थितिको पहुंचा था।

आयुर्वेदके प्रधान आठ अंग हैं। १ शल्य, २ शालक्य, ३ कायचिकित्सा, ४ भूतविद्या, ५ अगदतंत्र, ६ कौमारभृत्य, ७ रसायन, और ८ वाजीकरण। इनमेंसे प्रथमके दो अंग वर्तमान समयमें अच्छी स्थितिमें हैं यह ठीक है; किन्तु अन्य छ अंगोंकी वर्तमान समयमें चाहिये; वैसी अच्छी स्थिति नही देखी जाती; जिससे आयुर्वेदके अभ्यासकी और उसको उत्तेजन देनेकी पूर्ण आवश्यक्ता है इस बातको हरएक विद्वान् स्वीकार करते हैं। मेरी समझके अनुसार आयुर्वेदके अभ्यासके लिये और उसकी उन्नतिके लिये निम्न प्रकारसे यत्न करना चाहिये।

१ हरएक देशके जल, वायु, औषधि, प्रकृति प्रभृतिमें कुछ न कुछ भिन्नता होती है। अपने देशमें जैसी और जितनी वनस्पति होती हैं; वैसी और उतनी वन-स्पति दूसरे देशोंमें नहीं होती और अपने देशकी वनस्पति अपनेको अधिक अनुकूल हो यह भी स्पष्ट बात है। इस लिये अपने देशके रोगियोंके लिये अपने देशकी वनस्पतियोंका ज्ञान सम्पादन कर उसका उपयोग बढाना चाहिये। यह बात आयु-र्वेदके अभ्याससे ही साध्य है; क्योंकि अपने देशकी दिव्य औषधियोंके ऊपर [illegible] नींव स्थापित की गई है। इसके उपरांत आयुर्वेदके पूर्ण अभ्यास [illegible] ज्ञान होनेसे अपने देशकी आर्थिक (द्रव्य सम्बन्धी) स्थिति [illegible] है। विदेशीक्षार और टिकचर प्रभृति दवायें अपने [illegible] [illegible] जानते हैं। अपने देशकी दिव्य [illegible]

बहुत छूटसे उपयोग किया गया है। इस बातकी सत्यताकी शोधके लिये उसका सम्पूर्ण रीतिसे अभ्यास करना चाहिये। अब रसायनशास्त्रकी एक बात ऐसी है कि बुभुक्षित पारद चाहे वैसी धातुका ग्रास कर जाता है फिर भी उसका वजन-भार नहीं बढता। धातुका ग्रास करनेपर भी पारेका वजन उतनाही रहता है। यदि प्राचीन रसायनशास्त्रकी कही हुई यह बात सत्य है तो वर्तमान समयकी केमीस्ट्रीके अपने सिद्धान्तमें परिवर्तन करना पड़ेगा। वह सिद्धान्त यह है कि हरएक पदार्थका वजन है और उसके नियममें कुछ भी अनियमित बनाव या अपवाद नहीं हो सका। प्राचीन और अर्वाचीन रसायनशास्त्रके बीचमें पारद सम्बन्धी यह महान् मतभेद और विरोध है। इस लिये बुभुक्षित पारदको यथाविधि बनाकर उसके अनुभव करनेकी आवश्यक्ता है। यदि प्राचीन आयुर्वेद रसायनशास्त्रका पारदके विषयमें यह सिद्धान्त सत्य सिद्ध हो जाय तो वर्तमान समयकी सम्पूर्ण केमेस्ट्रीमें महान् परिवर्तन हो जाय--सम्पूर्ण केमेस्ट्रीको बदलना पड़े। आयुर्वेदके प्राचीन ग्रन्थोंके अभ्यासकी कितनी बड़ी आवश्यक्ता है यह इसपरसे अधिक अच्छी तरहसे सिद्ध होता है।

अब आयुर्वेदका अभ्यास किस प्रकार बढाना और उसको किस प्रकार उत्तेजन देना चाहिये उसपर मैं अपने विचार यहांपर प्रदर्शित करना चाहता हूं।

१. आयुर्वेदके अभ्यासके लिये प्रथम तो अपने देशमें आयुर्वेदकी प्राचीन पद्धतिके अनुसार वैद्यक सिखानेकी पाठशालायें स्थापित करनी चाहिये। और उनमें खास आयुर्वेदके ग्रन्थोंका ही अभ्यास कराना चाहिये।

२. आयुर्वेदके अधिक उपयोगी औषधोंके संग्रहस्थान कराने चाहिये।

३. हरी वनस्पतियोंके लिये बगीचोंका व नमूनोंका संग्रह करना चाहिये।

४. रसशालायें और प्रयोगशालायें पृथक् २ चाहिये और उनमें अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी औषधियां तैयार करनेका कार्य सीख सकें वैसी व्यवस्था करनी चाहिये।

५. होस्पिटलोंके समान उपचार ग्रहोंकी स्थापना करनी चाहिये और उसमें आयुर्वेदीय पद्धतिसे स्वेदन, प्रभृति पञ्चकर्मादि उपचार करने चाहिये।

६. पाठशालाओंके साथ भी ऐसे उपचारगृह रखने चाहिये; जिससे पढानेकी अनुकूलता होगी।

७. भिन्न २ रोगोंके लिये आतुरालय तैयार करने चाहिये।

८. सूतिकागृहोंकी स्थापना करनी चाहिये।

९ कोई भी औषधि तैयार होकर प्रसिद्धिमें आवे तो वह रोगको मिटानेमें उपयोगी है या नहीं, उससे कुछ हानी होनेकी संभावना है या नहीं, वैद्यकशास्त्रके

ग्रन्थोंमें अमुक प्रयोगके गुणावगुणके वर्णनमें कितनी सत्यता है एवं अमुक दवा अमुक अंग, अमुक रूपमें या अमुक प्रमाणमें उपयोगमें लाना तथा अमुक दवाके तैयार करनेमें अमुक दवा बढ़ाना या घटाना इत्यादि अनेक बातोंके निर्णय करनेके लिये विद्वान् वैद्योंकी एक मंडली सम्पूर्ण देश या प्रान्तके लिये नियत करनी चाहिये। कोई भी देशी दवा उस मण्डलीकी स्वीकृतिके विना प्रसिद्ध न की जाय यदि ऐसी भी व्यवस्था होसके तो बहुत कुछ लाभ होसक्ता है।

१० वैद्यकशास्त्रके अनेक ग्रन्थ हैं उनमेंसे भिन्न २ प्रान्तोंमें किम्वा जिलोंमें या सम्पूर्ण देशमें दवाओंका उपयोग करनेके लिये अमुक ग्रन्थ मेटेरिया मेडिका निश्चित करना चाहिये। और उस मण्डलीने उसमें प्रतिवर्ष न्यूनाधिकता करनी चाहिये।

११ एक ही दवा जैसे कि "आनन्दभैरव" या कोई दूसरे रस या चूर्ण बनानेके लिये भिन्न २ ग्रन्थोंमें भिन्न २ पाठ है; इस लिये उनमेंसे इतनी दवाओंका पाठ अमुक रोगके लिये उपयोगी है। ऐसा भी उस मण्डलने निर्णय करना चाहिये।

१२ वैद्यकशास्त्रमें एक ही दवाके दोचार नाम रहते हैं किम्वा एक ही नामवाली अनेक दवायें रहती है; यहांपर अमुक पाठमें उस शब्दका अमुक ही अर्थ करना और अमुक पाठमें उस नामकी अमुक ही वस्तु समझना। इस बातका भी उस मण्डलीने निर्णय करना चाहिये।

जब उपरोक्त बातोंकी व्यवस्था हो, तब आयुर्वेदका यथार्थ [illegible] होसक्ता है और आयुर्वेदका कितना महत्व है यह भी सब समझनेमें आसक्ता है, [illegible]

[illegible] और आरोग्य।

[illegible]

अत्यन्त निन्दनीय है। कितनीक अज्ञानी मातायें अपने बालकोंको भूतका, चोरका, सिपाहीका और बाबाजीका नांव लेकर डराती हैं। इससे व्यर्थ ही कोमल मगज-वाले बालकोंपर भयकी असर बैठजाती है। जो आगे चलकर सदैवके लिये थोड़ी (हुत हानीकारी असर उत्पन्न किया करती है। "बाबाजी आवेंगे तो तुझे पकड़ले जांयगे" "सिपाही पकड़ले जायगा" "अमुक स्थानपर भूत है इस लिये वहां मतजाना" ऐसी २ व्यर्थकी बातें कहकर बालकको डरपोक बनाकर उसे भय दिखलाकर उसके आरोग्यपर खराब असर करना उसके समान शोकजनक कौन बात होसक्ती है ?

बालकोंको भय दिखलानेसे उसके शरीर व मनपर कैसी खराब असर होगी उसकी हम लोगोंको कुछ भी परवाह नहीं हैं। बालकोंको पाठशाला भयका स्थान न मालूम हो उसके लिये अध्यापकने कैसा आचरण करना चाहिये यह अध्यापक स्वयं नहीं जानते या जाननेपर भी उसके अनुसार आचरण नहीं किया जाता। ातापिता भी इस विषयमें कुछ भी सावधानी नहीं रखते। इसका परिणाम यह आता है अनेक बालक डरपोक बनजाते हैं। वे फिर शूरवीर कैसे होसक्ते हैं?

यहांपर भयकी आरोग्यके ऊपर क्या असर होती है इसी विषयपर कुछ निवे-दन करनेका विचार है। इससे आरोग्यके ऊपर भयकी कैसी अनीष्ट असर होती है हम यही बतलावेंगे।

भयके कारण हृदय व मगजपर बहुत खराब असर होती हैं। जीवन प्रवाहको धक्का पहुंचता है। जठरमें चलनेवाली पाचनक्रिया बहुत धीरी पड़जाती है। संक्षेपमें ःहा जाय तो देहयंत्रका संचा कुदरती स्थितिमेंसे फिरकर विचित्र प्रकारकी स्थिति-वाला होजाता है। भयसे कई निर्बल हृदयके मनुष्योंको ज्वर भी आता है। अधिक भयसे मृत्यु होजानेकी भी संभावना है। प्लेग व हैजेके जैसी बीमारियें भयभीत मनुष्योंके ऊपर शीघ्रतासे हमला करती हैं। इत्यादि भयंकर हानियोंका विचारकर बाल्यावस्थासे ही भयको तिरस्कार करनेका अभ्यास पाड़ना चाहिये। बहुतसे मनुष्य भयकी शंका ही किया करते हैं। उन लोगोंने जान लेना चाहिये कि भय! भय! कहा करना यह निर्भय होनेका सच्चा उपाय नहीं हैं; किन्तु वह तो भयके बढानेका ही उपाय है। परमकृपालु परत्माकी ओर आस्था रखकर नीतिमे चलनेवाले पुरुषका परमात्मा रक्षण करता है। धीर पुरुष किसी भी कारणसे भयभीत नहीं होते है। शान्तिसे कठिनाईके प्रसंगको वे उल्लंघन करते हैं और ईश्वरकी कृपासे किसी प्रकारसे भयकी असर नहीं होनेकी अमूल्य कीर्तिको सम्पादन करलेते हैं।

विविध विषय।

जीर्ण गर्भस्राव–जिन स्त्रियोंको अमुक मुद्दतपर वारम्वार गर्भस्राव होता है उस स्रावको रोकनेके लिये "फ्लोराईड आयुगोल्ड" नामकी दवाका उपयोग गर्भ रहे वहांसे करना चाहिये। देशी दवाओंमें "गर्भपालरस" नांवकी दवाकी सिफारस की जाती है। गर्भस्रावके अनेक केसोंमें तीसरी स्थितिकी गरमी कारणभूत रहती है और यदि उसी कारणसे गर्भका स्राव होजाता हो तो "मरक्युरी" और आयो-डाईड" ये दो औषधियें देनी चाहिये। हमारा अनुमान है कि गर्भस्रावके अनेक बनावोंमें यह अन्तिम ही कारण है।

नीद्रामें प्रस्वेद–जिन बालकोंको सोजानेके पश्चात् नीद्रामें ही प्रतिदिन प्रस्वेद हुआ करे वे चाहे उतने मोटे व द्रढ हों फिर भी उन्हें क्षयरोगवाले समझने चाहिये (यह एक डाक्टरकी सम्मति है)

कुचरित्रकी चिकित्सा–हालमें अमेरिकामें एक नये ढंगकी चिकित्सा निकली है, इससे मूर्ख बुद्धिमान और कुचरित्रवाले सुचरित्र बनाये जाते हैं। स्थिर किया गया है कि यह विकार किसी नसके दुर्वल होनेसे ही हुवा करता है। अस्त्र चिकित्सासे यह रोग दूर होता है। हालमें मिचिगनसेन्ट जोसेफ सर्किट अदालतमें चार दुराचारी लाये गये थे, विचारपतिने उन्हें कोई दण्ड न देकर केवल अस्त्र चिकित्सासे उनके चरित्र सुधारनेकी आज्ञा दी है। कहते हैं कि आपने कहा है कि भविष्यमें कुचरित्रके लिये अब लोग जेलखाने भेजे न जांयगे। सरकारने भी उक्त चिकित्साका अनुमोदन किया है। यह चिकित्सा यहांपर चलानेसे यहां भी सुफल फलेगा, और बहुतेरे लोगोंके चरित्र संशोधित होंगे!

चितासे उठ बैठा–अभी कुछ दिन पहिले कलकत्तेके श्मशान घाटपर एक विचित्र घटना होगई। कालीघाटमें एक अधेड़ मनुष्यको हैजा होगया। घरवालोंने समझा कि वह मरगया। बस उसे उठाकर श्मशान ले गये। चिता बनाई गई और मुर्देको चितापर रखकर आग लगानेकी तैयारी होरही थी, कि मृतकने आंखें खोली और पीनेको पानी मांगा। लोग उसे उठाकर पासके एक झोंपड़ेमें ले गये। वहां उसकी चिकित्सा हो रही है।

मैं रोगी हूं या निरोगी ?

२

शरीरमें रोगके अन्य प्रत्यक्ष लक्षण रहते हैं तब तो हर एक मनुष्य समझ सके
कि उनके शरीरमें कुछ भी रोग हैं; किन्तु कई अज्ञानी मनुष्य ऐसे प्रत्यक्ष लक्ष
ॉंको भी रोग नहीं मानते । दान्तमेंसे खून गिरता हो या नासिकामेंसे छिं
निकलता हो या गलेपर एक आध ग्रन्थी हो और उसमें मनुष्यको दरद न होता
हो तो वह उसे साधारण बात समझकर चला लेते हैं; किन्तु उसे मालूम नहीं हैं कि
खराबमें खराब रोगके ये केवल जासूस है और ये साधारण जैसे मालूम होनेवाले
लक्षण मनुष्यको मृत्युके मुखमें डाल देते हैं । फिर बेसमझ मनुष्य दूसरी यह भूल
करते हैं कि शरीरके अमुक भागमें कुछ दरद होता है, सोथ होता है, फौडा होता है
या घाव पड़ता है तो वह उतनेही भागको रोगी समझकर बेपरवाह रहते हैं ।
आपके पांवमें एक घाव पड़ा है किम्वा फौड़ा हुआ है तो आप उतनेही भागको
रोगी या विकारी समझकर उसपर मलहम लगाया करते हैं; किन्तु रोग उतने ही
भागमें नहीं हैं वह रोग सम्पूर्ण शरीरमें मौजुद है । और वहांपर दर्शन देकर साव-
धान करता है कि "जो खून शरीरका जीवन है उस सम्पूर्ण खूनमें मैं रहता हूं और
यदि आप मुझे यहांपर दवाकर छुपा देंगे तो मैं शरीरके दूसरे भागमें दर्शन दुंगा"।

ऐसा एक भी भाग्यवान्–पुण्यात्मा मनुष्य आप बता सके हैं कि जिसके
—रीरमें इनमेंसे एक भी विकार न हो? किन्तु हरएक मनुष्य उन समस्त शिकायतों–
तोंमेंसे मुक्त हो निरोगी रहनेके लिये बंधा हुआ है और उसीसे मनुष्य जितने
माणमें अधिक निरोगी है उतने प्रमाणमें वह उसके उत्पन्न करनेवाले ईश्वरका
अधिक प्यारा है; इतनाही नहीं; किन्तु वैसा मनुष्य अपने शरीरका अर्थात् उसके
समस्त अवयवोंका सदुपयोग कर ईश्वरकी बड़ाई व कृपाको क्रमशः सम्पादन कर
सक्ता है । फिर जो विरल मनुष्य सर्वांशमें निरोगी हो–शरीर व मनसे निरोगी
और सदाचारी हो वह सर्ववन्दनीय अर्थात् सबको नमन करने योग्य हो उसमें
आश्चर्य क्या है ?

मैं रोगी हूं या निरोगी ? इस बातके निर्णय करनेके लिये जो सामान्य प्रश्न
उठाये जा सके हैं उनमेंसे प्रधान २ प्रश्न हमने अपने पाठकोंके समीपमें उपस्थित
किये हैं वह इस लिये कि हरएक पाठक उन प्रश्नपरसे अपने शरीरकी रोगिता
निरोगिताका विचारकर कुछ निश्चित निर्णयपर आसके । हमारा विश्वास है कि इन
प्रश्न परीक्षामें बहुत कम मनुष्य उत्तीर्ण होंगे । और बाकीके समस्त मनुष्य कम या
ज्यादे अंशमें रोगी हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ।

प्रथमके दो अंकोमें लिखी हुई इस विषयकी सूचनाओंके ऊपर हम पाठकोंका ध्यान फिर आकर्षित करते हैं और प्रत्येक पाठकोंको वे प्रश्न अपने ऊपर लागु करके अपने २ शरीरके रोगीपनेके या निरोगीपनेके विषयपर वि करनेकी हम सम्मति देते हैं। इन प्रश्नोंके द्वारा अपने २ शरीरके रोगीपन या नि गीपनेका विचार करके किसीने गभड़ानेकी आवश्यक्ता नही हैं; क्योंकि सर्व निरोगिपनेका दावा कर सके ऐसे भाग्यवान् मनुष्य इस पृथ्वीपर वर्तमान सम सुधरे हुए (?) समयमें क्वचित् ही मालूम होते हैं और सत्य बात ऐसी होनेसे उठाये हुए प्रश्नके ऊपरसे जो सज्जन इस परीक्षामें फैल हो जाय उन्हें दुःखित लज्जित होनेका कुछ भी कारण नहीं हैं। अवश्य! सरोगिता यह मनुष्यजा लिये महान् एव या नामोशी है; किन्तु जहांपर अधिक संख्या ऐसेही पुरुषों वहां दुःख व लज्जाकी मात्रा कम हो जाती हैं। उपदंश व प्रमेहके गुप्त रोगोंके आजसे ४०–५० वर्ष पहिले लोग शरमिंदे होते थे; क्योंकि वह रोग बहुत मनुष्योंको होता था; किन्तु इस सुधरे (?) हुए समयमें वे रोग सामान्य रो समान हो रहे हैं। तब ऐसे लज्जाजनक रोगोंकी शरम कम हो गई है और बहु पुरुष निर्लज्जतासे अपने इन गुप्त रोगोंका सरसतासे वर्णन करते हैं। मानो उन महान् पराक्रम किया हो! हमारे इस कथनका यह मतलब नही हैं कि ऐसे रोग होनेपर उसे गुप्त रखकर बढने देना। प्रत्येक रोगके उठते ही उसे दवा ऐसी हमारी सम्मति है। उपदंश व प्रमेहके रोगियोंने भी अपने रोगको गुप्त रखकर योग्य स्थानपर सत्य वृत्तान्त जाहिरकर उसका तुरन्त उपाय करना; कि हमारे कथनका यही अभिप्राय है कि जिस प्रकार लज्जाजनक उपदंश प्रमेहके रो पञ्जेमें फसे हुए रोगियोंकी संख्या बढनेसे पिता पुत्रके पास और पुत्र पिताके प उस गुप्त रोगकी कथा कहनेमें कुछ भी संकोच नहीं करते। इसी प्रकार अधिक मनुष्य अनेक प्रकारके शारीरिक पापोंको करके रोगी होनेसे कोई किसीसे संकोच नहीं करते। पिताके रहते पुत्र संसारसे विदा हो जाय क्या यह मनुष्यजातिको नीचा दिखानेवाली बात नहीं हैं? जहां पर्यन्त संसारमें इस स्वाभाविक प्रवाहका उल्लंघन हुआ करेगा; वहां पर्यन्त मनुष्यजातिकी कभी भी उन्नति हुई नहीं समझी जायगी। मातापिता बालकोंको उत्पन्न करके उन्हींको अपनेसे पहिले विदा कर देते हैं उसके लिये उन्हें नीचा देखना चाहिये और अपने बालकोंके मृत्युके लिये वे जितना शोक मनाते हैं उससे विशेष शोक अपनी मूर्खताके विषयमें मनाना चाहिये। और कितनेक प्रतिष्ठित मातापिता ऐसा होनेपर संसारमें मुख दिखाते हुए शर- मिंदे होते भी हैं। शोक मनाकर घरमें बैठनेकी प्रथा पड़ी हुई है और स्त्रियां कुछ

देन तक घुंघट निकालकर चलती हैं वह पृथा ऐसा बतलाती है कि वे ऐसे कार्यसे लोगोंको मुख नहीं दिखा सक्ते । किस लिये ? पिताके पहिले पुत्र नहीं मरना चाहिये तथापि मरने दिया उसकी लज्जाके कारण ! तब क्या पिताके रहते २ पुत्र मर जाय उसकी जवाबदेही पिताके ऊपर है ? मनुष्यजाति अपने कर्म व कृत्योंके द्वारा भविष्यका संसार बना सक्ते हैं यह बात यदि सत्य है तो मातापिता अपने कर्मोंसे अपनी प्रजाको उत्तम या अधम बना सक्ते हैं और उससे ऐसा भी कहा जा सक्ता है कि छोटी उमरमें होनेवाली मरणकी अधिक संख्याके लिये मातापिता ही उत्तरदाता हैं। कहनेका मतलब यह है कि सरोगिता यह मनुष्यकी महान् भूल है और उस भूल या दोषका वारसा उसकी प्रजाको भी मिलता है । यह कलंक एक सामान्य हो रहा है फिर भी वह एक प्रकारका कलंक ही है और उसीसे मनुष्यजातिने उस कलंकसे तुरन्त मुक्त हो जाना चाहिये । एवं इसी लिये हरएक मनुष्यने मै रोगी या निरोगी ? इस प्रश्नपर अवश्य विचार करना चाहिये ।

सरोगिता या निरोगिताका ठीक निर्णय करना यह कार्य अत्यन्त कठिन है फिर भी हरएक मनुष्य वैद्यक सम्बन्धी सामान्य ज्ञानकी सहायतासे और हमने ऊपरमें जो विवेचन किया है उसके आधारसे थोड़ा बहुत शोच कर अपने शरीरका विचार करे तो कुछ अंदाजसे तो वह अवश्य जानसक्ता है कि उसके शरीरमें अमुक प्रमाणमें कुछ भी रोग है । अपने शरीरसे व शरीरके रोगसे अज्ञान व बेपरवाह रहना उसकी अपेक्षा उससे परिचित होकर प्रथमसेही सावधान हो उसका प्रतिबंध या उपाय करना वह अधिक लाभकारी मार्ग है । कितनेक मनुष्य शरीरसे बेपरवाह रहते हैं और कितनेक मनुष्य बेपरवाह हो जाते हैं । ये दोनों खराब आदतें भविष्यमें महान् दुर्दशा उत्पन्न करती हैं । हरएक मनुष्य चाहे तो अपनेको निरोगी बना सक्ते हैं । इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि जो रोगी केवल दवाओंके ऊपर ही आधार रखते हैं वे हार मारते हैं ! और रोगरूपी बलासे छूटनेके बदले सामने अधिक प्रपंचमें पड़ जाते हैं; क्योंकि शरीर सुधारनेके जो कुदरती उपाय हैं उन्हें वे छोड़कर कृत्रिम उपायोंकी जालमें फसते हैं । उन्हें दवायें कुछ अंशोंमें सहायता करती हैं; किन्तु आरोग्यकी प्रधान कुंजी वैद्य या डाक्टरोंकी दवामें नहीं होकर रोगियोंके अपने आचरणमें है । हम इसी लिये विशेषरूपसे निवेदन करते हैं कि हरएक मनुष्यने अपने शरीरके दोष-रोगोंसे परिचित होनेकी चेष्टा करना यानी अपने रोगोंसे प्रति-कुल ऐसे समस्त आचरण, आहार, विहार और व्यसनोंको छोड़ देनेका उद्योग करते रहना चाहिये ।

विरुद्ध भोजन विषके समान है।

" विरुद्धमपि चाहारं विद्याद्विषगरोपमम् ॥ "

जिस प्रकार विष और रोग व्याधि तथा मृत्युको उत्पन्न करते हैं; उसी प्रकार विरुद्ध भोजन भी व्याधि व मृत्युका उत्पादक है।

दो या अधिक वस्तुयें एकत्र मिलकर उसकी भीतर रहे हुए रासायनिक गुणोंके कारण एक तीसरे ही गुणवाली वस्तु उत्पन्न होती है यह बात वर्तमान समयके रसायनशास्त्रसे सिद्ध हुई है। पाकशास्त्रमें प्रवीण मनुष्य और समझदार खानेवाले अच्छी तरहसे समझते हैं कि पाकमें होनेवाला अमुक प्रकारका योग उत्तम स्वाद व गुणको देता है और अमुक प्रकारका योग पाक-रसोईको स्वादहीन बनाकर अनेकवार खानेवालेकी प्रकृतिको बीगाड़ देता है। अनेकवार स्वादवाली वस्तुमें भी विषयोग होजाता है। ये बात अपने खानपानमें वारम्वार अनुभवगम्य होती है। विरुद्ध भोजन अर्थात् एक वस्तुके साथ दूसरी वस्तुके खानेसे विकार होता है जिसे विरुद्ध भोजन कहसक्ते हैं। इतना ही नहीं; किन्तु उसका अर्थ ऐसा भी होसक्ता है कि प्रकृति विरुद्ध, रोग विरुद्ध और ऋतुविरुद्ध खानपानके लेनेपर वे विषके समान होजाते हैं। यदि प्रकृति पित्त की हो तो पित्त करनेवाले पदार्थ नहीं खाना, जैसे कि अधिक खारा, अधिक खट्टा, अधिक तीता, नवीन गुड़, मदिरा, शहद, खट्टा दहीं, मीरच, गरम मसाला, लसुन प्रभृति पित्त प्रकृतिके लिये प्रतिकुल हैं। शरद-ऋतु पित्तकी है इस लिये शरदऋतुमें पित्त करनेवाले पदार्थोंका सेवन नहीं करना चाहिये। खट्टा दहीं और खीरे प्रभृति पदार्थ शरदऋतुके ज्वर लानेवाले हैं इस लिये उनका भी शरदऋतुमें सेवन नहीं करना। नवीन ज्वरमें घृत विरुद्ध है और गुल्म प्रकृतिमें उरद प्रभृति भारी पदार्थ विरुद्ध है।

प्रकृति, रोग, और ऋतु विरुद्ध खानपान अनेक हैं और ये साधारण समझ रखनेवाले उत्पादक और रोगी भी समझते हैं; किन्तु एक पदार्थका योग दूसरे पदार्थके साथ होनेसे उसमे उदरमें क्या रासायनिक क्रिया होती है यह बात अभी-तक गुप्त है। हम लोग प्रायः अपनी अज्ञानताके कारण खानेपीनेमें एकाकार कर देते हैं। पाश्चात्य रसायनशास्त्रकी खोजसे अब अनेक शोध व सुधार हुए हैं; किन्तु खानपान सम्बन्धी रसायनशास्त्र अभीतक कुछ भी जानने योग्य प्रकाश नहीं डाल सका है। हमारी इन्द्रियोंको जो अच्छा मालूम होता है वही खानपान सम्बन्धी [illegible] उत्तम विचार है, किन्तु वैद्यकशास्त्रके ग्रन्थोंमें इस विषयपर अधिक विचार किया हो ऐसा मालूम होता है, प्राचीन वैद्योंकी इस संबंधकी शोधोंसे [illegible] भी

...आ था ऐसा वर्तमान समयके लोगोंमें प्रचलित खानपानके ऊपरसे अनुमान हो सका है। अपने लोग मुंगके साथ दूध खानेका निषेध करते हैं और मूलीके साथ दूध खानेमें दोष मानते हैं। दूध किम्वा दूधपाकके साथ बहुतसे मनुष्य खीचड़ी भी नहीं खाते हैं और ये सब प्रथायें वैद्यकशास्त्रकी आज्ञानुसार है। गरमागरम खीचड़ी या गरमागरम चावलके साथ दहीं खानेकी अपने बड़े लोग मना करते हैं; क्योंकि वैद्यकशास्त्रकी आज्ञा है कि मदिरा, दहीं और शहद ये गरम पदार्थोंके साथ नहीं खाने चाहिये। दूधके साथ नमक एवं दूधके साथ लसुन खानेकी वैद्यकशास्त्र मना करता है। मुंग, कुलथी, ऊरद और कांग (एक प्रकारका धान्य) इन सबके साथ दूध खानेकी वैद्यकशास्त्र मना करता है। विरुद्ध भोजनके सिवाय अन्य भी कितनीक क्रियायें विरुद्ध मानी गई हैं। जैसे कि नवीन व प्राचीन कच्चे व पक्के पदार्थ इन दोनों प्रकारके पदार्थोंका एक साथ उपयोग नहीं करना चाहिये। उदाहरण रुपसे नवीन व प्राचीन जलको एकत्र कर नहीं पीना चाहिये। गरमीमें तपा हुआ मनुष्य यकायक ठंडे जलमें पड़े तो चमड़ी व नेत्रको हानी होती है और प्यास बढती है। गरमीसे चलकर आया हुआ मनुष्य थोड़ी देर तक ठहरे बिना तुरन्त जलपान करे तो उसको रक्तपित्त नांवका रोग उत्पन्न होता है। परिश्रमका कार्य करनेके पश्चात् तुरन्त ही खानेसे कय, और गुल्मरोग होता है और अधिक बोलनेके पश्चात् तुरन्त खानेवालेको स्वरभंग अर्थात् कण्ठ बैठ जानेका रोग होता है। जैसे रोग अनेक है वैसे रोग होनेके कारण भी अनेक हैं। हमारी समझके अनुसार माता-पिताओंने ऐसे समस्त नियमोंकी शिक्षा अपने बालकोंको देना चाहिये और अन्य गृह-शिक्षाके साथ २ इस शिक्षाको भी प्रधान स्थान देना चाहिये। इस शिक्षाका एकवार कुटुम्बमें प्रवेश हो जानेसे फिर विना परिश्रम वह शिक्षा वंशपरम्परासे प्राप्त हुआ करेगी।

विचार विविधता।

हकीम शिवदयालजीके प्रश्नोंका उत्तर।

४

समाचारपत्रोंमें हकीम शिवदयालजीने चरकसंहितोक्त केवलामलक रसायनके विषयमें रसायनसे जितनी आयु लिखी है। सत्य होनेका सन्देह प्रकाश किया गया है। आपाततः (बाहरी दृष्टिसे) सन्देह यहांपर उचित ही है; क्योंकि "शतायुर्वै पुरुषः" इस श्रुतिसे सौही वर्षकी आयु प्रतीत होती है। चरकमें भी—" वर्षशतं खल्वायुषः प्रमाणमस्मिन्काले" ऐसा ही लिखा है। ज्योतिःशास्त्रमें भी "पः मतु

सर्वथा चिरंजीवति स वर्षशतं जीवति" ऐसा ही लिखा है। यद्यपि महाभाष्यो *वार्षसाहस्रिक यज्ञोंके उल्लेखसे प्राचीन समयमें अधिक आयुका होना भी प्रतीत होत* है। इस ही प्रकार भागवतादि ग्रन्थ भी प्रतीति कराते हैं। यथा भा. प्र. स्क. प्र *अ. "सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्र सममासत"–नैमिषारण्यमें शौनकादि ऋषि स्व* प्राप्त्यर्थ हजार वर्ष तक यज्ञ करते थे। यह विषय संस्कृतज्ञोंके सामने नया नहीं है तथापि इस समयके देखनेसे व उक्त शतवर्ष विषयक वाक्योंसे यह कहसक्ते हैं वि शतवर्ष परकवाक्य मध्यस्थ है अर्थात् सौसे अधिक वा न्यून भी लोग जीते ही हैं मध्यस्थ माननेपर भी सौसे अधिक डेढसौ पौने दोसौ तक जीसकता है न कि हजार वर्ष। मीमांसामें भी ऐसा ही विचार इस वाक्यके विषयमें किया गया है। अस्तु जो हो; परन्तु प्रकृतमें जो विषय उपस्थित है उसको मैं पाठकोंके अवलोकनार्थ समग्र ही उद्धृत करता हूं। चरक चिकित्सास्थान रसायनाधिकार। प्रकरण प्राप्त पञ्चकर्मसे देहशुद्धि करके;

"सम्वत्सरं पयोवृत्तिर्गवां मध्ये वसेत्सदा। सावित्रीं मनसा ध्यायन् ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः। सम्वत्सरान्ते पौषीं वा माघीं वा फाल्गुनीं तिथिम्। अहोपवासी शुद्धश्च प्रविश्यामलकी वनम्। बृहत्फलाढ्यमारुह्य द्रुमं शाखागतं फलम्। गृहीत्वा पाणिना तिष्ठेत् जपन्ब्रह्मामृतागमात्। तदा ह्यवश्यममृतं वसत्यामलके क्षणम्। शर्करा मधुकल्पानि स्नेहवन्ति मृदूनि च। भवन्त्यमृतसंयोगात् तानि यावन्ति भक्षयेत्। जीवेद्वर्षसहस्राणि तावन्त्यागत यौवनः। सौहित्यमेषां गत्वा तु भवत्यजरसामरः। स्वयं चास्योपतिष्ठन्ते श्रीर्वेदवाकच रूपिणी।

आपके प्रश्नमें एक हजार लिखा है; परन्तु प्रकृत वाक्यका अर्थ हजारों ऐसा प्रतीत होता है। जो हो। इसपर तो आपके सन्देहको अधिक अवसर है; परन्तु "*व्याख्यानतो विशेष प्रतिपत्तिः न हि सन्देहादलक्षणम्*" *इस शास्त्रीय नियमके अनु*-सार चरकादि आप्त ग्रन्थोंको भ्रान्त न मान उसके व्याख्यानकी जिज्ञासाका प्रश्न होता तो अच्छा था। उत्तर–चाहे एक हजार हो वा हजारों दोनो पक्षमें यहां वर्ष शब्दका अर्थ ३६० दिन न होकर एक दिन है। जैसे सालभरमें ६ ऋतु होती हैं इस ही प्रकार दिनभरमें भी ६ ऋतु होती हैं। ६ ऋतुओंको जैसे वर्ष कहते हैं इस ही प्रकार दिनभरमें भी ६ ऋतु होनेसे दिनको वर्ष कहते हैं। वैद्यकमें दिनभरमें ६ ऋतु होनेका विषय प्रसिद्ध ही है। अत एव एतादृश स्थलोंपर गौण वृत्तिसे वर्षशब्दका अर्थ दिन होता है। *यही विषय मीमांसादर्शन षष्ठाध्याय पादसप्तमके एकतीस सूत्रसे* लेकर सहस्र सम्वत्सरान्तस्य सहस्र दिन परत्वाधिकरणमें निश्चित किया है। जिसका कुछ भाग यहां उद्धृत ... जाता

सहस्र सम्वत्सरं तदायुषामसम्भवान्मनुष्येषु ॥३१॥ (१ पूर्वपक्षसूत्र)

भाष्य–किं ये सहस्रायुषः तेषामनेन अधिकारः उत मनुष्याणाम्, इत्यादि । अस-
म्भवान् मनुष्येषु न मनुष्याणामेतावदायुर्विद्यते । गन्धर्वादयस्त्वेतावदायुष । इत्यादि

अपि वा तदधिकारान्मनुष्यधर्मः स्यात् ॥३२॥ (२ य. पू.)

भाष्य–नैतावदायुषो मनुष्या उच्यन्ते रसायनैरायुषो दीर्घं प्राप्स्यन्तीति ।

नासामर्थ्यात् ॥ ३३ ॥ (२ य. पू. नि.)

भाष्य–न रसायनानामेतावत्सामर्थ्यं दृष्टम् येन सहस्र सम्वत्सरं जीवेयुः एतानि हि
धर्मवर्धकानि वलीपलितस्य नाशकानि स्वरवर्णप्रसादकानि मेधाजननानि नैतावदायुषो
दातृणि दृश्यन्ते ।

सम्बन्धादर्शनात् ॥ ३४ ॥ (२ य. पू. नि.)

भाष्य–न हि एतावदायुषा रसायनानां सम्बन्धो दृष्टपूर्वः इत्यादि

अहानिवाभि संख्यानात् ॥४०॥ (सिद्धान्त सू.)

भाष्य–वस्मादहः सुसम्वत्सरशब्द इति आदित्यो वा सर्वऋतवः सयदेवोदित्यथ
वसन्तः यदा सङ्गवोथ ग्रीष्मो यदा मध्यं दिनोथवर्षा यदापराह्णोऽथशरत् यदाऽस्तमेत्यथ
हेमन्त शिशिराविति सर्वात् ऋतूनहनि सम्पादयति सर्वे च ऋतवः सम्वत्सरः तस्मादहः
दिन उच्यते । " इसी प्रकार कात्यायन श्रौतसूत्रमें भी यह विचार निश्चित है ।

जिस प्रकार प्रकृत विश्वजित् यज्ञविषयमें सम्वत्सर शब्द दिनवाचक है इस ही
प्रकार उक्त स्थानमें वर्ष शब्द भी दिनवाचक है यह हम पूर्वमें कहआये हैं ।

उक्त प्रकार वर्षशब्दार्थकी उक्त व्याख्या करनेपर रसायन सेवनसे हजारों दिनकी
आयुका बढना निर्भ्रान्त है । क्योंकि आँवला अङ्ग प्रत्यङ्गोंको पुष्ट व दृढ करनेमें
जितना सामर्थ्य रखता है यह जिन्होंने च्यवनप्राश रसायनको यथाविधि नियमपूर्वक
अधिक समय सेवन किया है उनमें प्रत्यक्ष ही है । "आमलकी वयः स्थापनानाम्"
(च. सू. अ. २५) आंवला उमर बढानेमें सबसे उत्तम है जब कि इस समय जो लोग
स्वास्थ्यके नियमोंका यथार्थ पालन करते हैं और जो लोग स्वास्थ्यके नियमोंका
विशेष ध्यान नहीं करते । इन दोनोंकी आयुमें दस वर्षका न्यूनाधिक्य पाया जाता
है तो क्या ब्रह्मचर्यपूर्वक रसायन सेवनसे आयुका बढना निर्भ्रान्त नहीं है इति ।
यदि इस उत्तरसे पठित वैद्यसमुदाय सहमत हो तो मैं इसी तर्जके और
प्रश्नोंका उत्तर दे दूंगा ।

आचार्य पं० घनानन्द पन्त, मुरादाबाद.

स्त्रीवांचन विभाग।

छोटे बालकोंको स्नान किस प्रकार कराना चाहिये?

अपने सुख-दुख या व्यवहारके ऊपरसे हरएक बातको समझ लेना या उसके ऊपरसे सदाचरण करना साधारण मनुष्योंके लिये कठिन ही नहीं; किन्तु असंभव है। यदि मनुष्य योंही सब बातोंको समझ ले तो उपदेशक-गुरुकी आवश्यक्ता ही न रहे। हम देखते हैं कि मनुष्य अपनी जिन भूलोंसे दुख भोग रहे हैं फिर भी उन्हें बार २ करके दुखसागरमें गोते खाते हैं इस लिये ऐसे मनुष्योंको उनकी की हुई भूलोंको बताकर उन भूलोंको फिर नहीं करनेके लिये निवेदन करना हरएक समझदार व्यक्तिका कर्तव्य है। पुरुषोंकी वैद्यक उपदेशकी ओर बेपरवाही और उसकी अज्ञानतासे जितनी हानियें होती है उतनी ही नहीं बल्कि उससे अधिक हानियें इस सम्बन्धी स्त्रियोंकी अज्ञानता व बेपरवाहीसे होती हैं। परमात्मा या कुदरतने स्त्रियोंके ऊपर जिस महत्वपूर्ण कार्यको सौंपा है उसे पूर्ण करनेमें स्त्रियां जितना प्रमाद करेगी उतनी ही वे परमात्माके घर गुन्हेगार-अपराधिनी समझी जायगी। स्त्रियोंके इन अपराधोंका दण्ड उन्हें दूसरे जन्ममें नहीं; किन्तु इसी जन्ममें भोगने पड़ेंगे। इस लिये स्त्रियोंने अपने कर्तव्योंको द्रढ रुपसे समझकर उसके अनुसार आचरण करनेकी यथासाध्य चेष्टा करना चाहिये। हिन्दु धर्मशास्त्र कहता है कि " स्त्री अर्धांगिनी है इस लिये उसके पाप पुण्यका आधा हिस्सा पुरुषोंको मिलता है।" इस पर पाठकोंने कभी विचार किया है? जिन पाठकोंने विचार किया होगा वे समझ लेंगे कि स्त्रियोंके पुण्यपापका आधा हिस्सा नहीं; किन्तु पूरा हिस्सा पुरुषोंका मिलेगा नहीं २ इसी समय मिलरहा है। इस समय हम हिन्दुओंमें बल नहीं, शौर्य नहीं और पूर्ण आरोग्ययुक्त शरीर नहीं यह किसके पापोंका फल है? यह स्त्रियोंके ही पाप-ज्ञाताज्ञात-जाने अजाने किये हुए प्रमाद पूर्ण आचरणोंका फल है।

हमारे स्त्रियोंके प्रति ये आक्षेपपूर्ण वचन हमारे कितनेक पाठकोंको असह्य होंगे और बहुतसे सुधारक तो हमारे ऊपर बीगड़कर कह उठेंगे कि यह स्त्रियोंका-देवियोंका अपमान कर उन्हें नीच बनाकर उनको संसारमें घृणित बनानेकी बात कहते है; किन्तु हमारे इस कथनपर पूर्णतया विचार करनेवाले हमारेपर इस प्रकार नाराज नहीं होंगे। वे सुधारक स्त्रियोंके पक्षपाती भी इस बातको स्त्रियोंकी मूर्खता भरे कार्योंको सदैव अपने नेत्रसे देख रहे हैं। स्त्रियोंकी अज्ञानताके कारण सहस्त्रों बालकोंका अकाल मरण नहीं २ उनकी हत्यायें होरही हैं, स्त्रियोंकी अज्ञा-

[illegible]ाके कारण सच्चे धीरवीर पुरुषोंका अभाव हो रहा है अधिक क्या कहें स्त्रियोंकी अज्ञानताके कारण देशका सर्वस्व नष्ट होरहा है। हम चाहते हैं कि स्त्रियोंकी अज्ञानता नष्ट हो और वे अपने सच्चे कर्तव्य-धर्मको समझें। हम अपने उसी विचारसे इस पत्रमें स्त्रियोंके उपयोगी लेख प्रकाशित करते हैं उन लेखोंको अबसे स्त्रीवांचन विभागा शिर्षक देकर नियमित प्रकाशित करनेकी चेष्टा करेंगे। अबसे प्रतिमास इस शिर्षकसे स्त्रियोंके उपयोगी कुछ न कुछ लिखेंगे। आशा है कि हमारे पाठक अपनी कुटुम्बकी व सम्बन्धकी स्त्रियोंको ये लेख पढावेंगे या पढकर सुनावेंगे। आज हम [illegible]बसे पहिले " छोटे बालकोंको स्नान किस प्रकार कराना चाहिये ?" इस विषय [illegible]छ निवेदन करेंगे।

मनुष्यमें समझ दो प्रकारसे आती है। १ स्वाभाविक और २ दूसरेके उपदेशसे। दोनों प्रकारसे जिनमें समझ आती है वह व्यवहारमें उत्तम प्रकारसे चलता है; [illegible]न्तु जिन्हें इन दोनों प्रकारसे समझ न आवे वे अपनेको या दूसरोंको व्यवहारमें [illegible]खी नहीं बनासके। कितनीक स्त्रियां चाहे वे छोटी उमरकी हों या चाहे तो वे बडी उमरकी हो; किन्तु उन्हें दूसरोंका आचरण देखकर सार लेनेकी समझ नहीं रहती जिससे वे अनेकवार कोमल बालकोंको दुखी करती हैं। यह कैसा काल है, कैसा समय है, कैसा प्रयोजन है और इसके लिये क्या उचित है इस बातपर विना विचार किये ही बालकको स्नान कराती हैं। बहुतसी स्त्रियां ठंडीकी ऋतुमें अपने बालकोंको अच्छी तरहसे गरम न हुआ हो ऐसा जल लेकर साबुन मलने लगती हैं। गरमीके दिनोंमें गरमागरम जलसे स्नान कराती हैं। वर्षाऋतुमें प्रतिदिन ज्यादा समय तक [illegible]कके शरीरपर जल डाला करती हैं। इस समय बालक भूखा होगा, इस समय [illegible]सा होगा, इस समय उसे सुलाना चाहिये, इस समय उसे खेलाना चाहिये, [illegible]र समय उसे कपडे पहिना रखना चाहिये, इस समय उसे हवा देना चाहिये, [illegible]न बातोंपर तो हमारे देशकी स्त्रियां विचार भी नहीं करतीं; किन्तु अनेकवार चतुर कहलानेकी इच्छा रखनेवाली स्त्रियां दिनमें एकवार नहीं; किन्तु तीन २ वार बाल[illegible]कोंको स्नान कराती है पीछे चाहे उससे बालकका हित हो या अहित हो उसकी कुछ भी परवाह नहीं। ऐसा करनेसे जब बालक बीमार होता है; तब भी कुछके बदले कुछ ही उपाय करनेसे और इसके उपरान्त उसकी साबजत करलेसे बालकको सदैवके लिये हाथसे गुमा बैठती है। बालकको पीडा पुनि न होने पावे जिसके लिये उसको स्वच्छ रखना चाहिये; किन्तु उसको यह वस्तके साथ रखना चाहिये। अधिक ठंडी न हो उस समय साधारण गरम जलसे जो पदार्थ चमडीमें जलन न करे ऐसा पदार्थ लगाकर सावधानीके साथ स्नान करा लेना चाहिये। यदि बालकको

शिर मैला हुआ हो तो भी गुड़, दूध प्रभृति बालकोंके शिरमें डालने योग्य पदार्थ डालकर तुरन्त शिर धो डालना। उसमें भी इतना ध्यान रखना चाहिये कि उसके उसके नेत्र, नासिका, मुख और कर्ण इन स्थानकोंपर अधिक जल नहीं गिरना चाहिये। हमने बालकको स्नान कराती हुई एक औरतको देखा वह छ मासके बालकको गामठी साबुन मलकर उसका शरीर मलने लगी कि जिस साबुनको अपने शरीरपर लगानेसे अपना शरीर भी जलने लगता है। आखिर अधिक समय तक रोते हुए बालकको उल्टा डालकर खूब मला और पीछे एक स्त्रीने उसे पकड़ रक्खा और दूसरी स्त्रीने उसका जोरसे शिर मलना शरु किया। उस चिल्लाते हुए बालकको उसमेंसे छूटनेकी शक्ति नहीं थी। शिरपरसे उतरता हुआ शिरका मैल और साबुनका फेन उस बालकके नेत्रमें, नासिकामें और मुखमें चला जाता था। उस बालकके स्थानमें हम हों तो हमारी कैसी स्थिति हो इस बातका उन्हें विचार भी नहीं आता था। थोडी देर पीछे एक बड़ा जलका लौटा लेकर "हरहर महादेव" कहकर बालकके शिरपर जल डालना शरु किया। जल शिरपरसे यकायक मुखपरसे आनेपर बालक श्वास लेजाय और गभड़ा जाय एवं उससे उसे क्या कष्ट हो इस बातको स्नान करानेवालीको लेश भी विचार नहीं था। ह ह ह!!! करके बालकके शिरपर जल डालनेसे बालक गभड़ा जाय और चुप होजाय इससे वे क्या समझती थी कि बालक खुश होता है ऐसा जानकर स्वयं भी खुश होती हैं! किन्तु उन्हें यह ख्याल भी न था कि बालकको मृत्युके समान कष्ट होता है। हम लोग जब स्नान करते हैं; तब मुखपर यकायक जल नहीं डालते और जब जल डालते हैं तब श्वास ऊंचा लेकर पीछे डालते हैं जिससे अपनेको मालूम नहीं होता; किन्तु बालकको उर्ध्वश्वास लेना नहीं आता और जल यकायक गिरे; जिससे बेभान-मूर्छितसा होजाता है और आयुष्यके बलसे ही जीता है। एक दिन ५० वर्षकी स्त्री जो किसीके बालकको स्नान करा रही थी और उक्त प्रकारसे बालकको स्नान करा रही थी। यकायक उसने जैसे बालकके शिरपर जल डाला; वैसे ही उस बालकका श्वास बंद होगया, इस बातको नहीं जाननेसे फिर तुरन्त दूसरा लौटा डाला। इस प्रकार एक साथ तीन चार लौटे जलके डाले, इस तरह अधिक समय तक बालकके श्वास बंद रहनेके कारण उसके प्राण परलोकमें चले गये! थोड़ी देरबाद देखा तो बालकका शरीर ठंडा पड़ गया! पीछे क्या हो सकता था? फिर उसने अपनी जिन्दगीमें किसीके बालकको स्नान करानेका नाम तक नहीं लिया। यह तो हमने एक ही उदाहरण दिया; किन्तु इस प्रकार कई अज्ञान स्त्रियोंके द्वारा बालकोंको कष्ट पहुंचाया जाता है। इस लिये जो बालककी माता होनेका सौभाग्य

वर्ती हो उसने समय देखकर बालकको कष्ट न हो उस प्रकार स्नान कराना चाहिये। बालकको स्नान करानेकी विधि समझकर उसके अनुसार उसे स्नान करानेपर वह कभी भी नहीं रोवेगा। बालक एक कोमल पुष्पके समान हैं उसकी मावजत फुलके समान करना चाहिये। बालकोंके रक्षणमें स्त्रियोंकी ओरसे वारम्वार भूले होती हैं। बालकको किस प्रकार दूध पीलाना, बालकको किस प्रकार स्नान कराना, इत्यादि सब बातें स्त्रियोंकी सीखनी चाहिये। ये सब साधारण बातें , किन्तु उसको नहीं जाननेके कारण अनेक स्त्रियां अपने बालकोंका अपनेही हाथसे खून ती हैं। यद्यपि माताओंके इन खूनोंसे उसे जैल या फांसीकी सजा प्रत्यक्षरूपसे हीं होती; किन्तु उन्हें पुत्रवियोग और अन्य जो कष्ट व शोक होता है वह उससे किसी प्रकार कम नहीं हैं।

जब हमें ठंडा-गरम, कम-ज्यादा, कडुआ-मीठा, प्रिय-अप्रिय, सह्य-असह्य, मालूम होता हैं; तब उस बालकको भी अपनी शक्ति अनुसार ईश्वरदत्त ज्ञानके कारण क्यों न हो! अवश्य उन्हें भी इन सब बातोंका थोडा बहुत ज्ञान अवश्य रहता है। इस लिये बालकोंको स्नान कराने प्रभृति कार्योंमें बहुत सावधानी रखनेकी आवश्यकता है। उसको ऐसे पदार्थ ही देने चाहिये जिससे उन्हें किसी प्रकार कष्ट न मालूम हो। बालकोंको स्नान करानेके समय इन बातोंपर अधिक विचार रखना चाहिये। उनको जिस पदार्थसे स्नान कराया जाय वह उनके शरीरपर जलन पैदा न करे, वह नेत्रमें, मुखमें और कानमें न जाने पावे इसपर ध्यान रक्खा जाय, बालकके शरीरको धोने या मलनेके समय हलका हाथ रखना और वह गमड़ा न जाय इस बातपर अधिक ध्यान रखना और जल आवश्यकतानुसार थोड़ा ही डालना चाहिये। जलके जोरदार प्रवाह नीचे या जलके प्रवाहमें उसे स्नान नहीं कराना चाहिये। हमने देखा है कि कई धर्मांध स्त्रियां बालकोंको तीर्थके जलमें उनको पकडकर यथायक कई गोते लगवाती है। यदि हमीको इस तरह पकडकर यथावत कई गोते लगाये जांय तो वह सीधी वैकुंठ या स्वर्गको चला जाय! बालकको स्नान करानेके समय ठंडी व गरमीका भी खूब विचार करना चाहिये साथ ही उनकी शारीरिक शक्तिपर भी कुछ ख्याल करना चाहिये। अमुक स्त्री अपने बालकको प्रतिदिन स्नान कराती है इस लिये मैं भी अपने बालकको स्नान कराउंगी ऐसा विचार बहुत ही हानीकारी है। अपने बालककी हालतका विचार करके ही उसे स्नान कराना चाहिये। बालकको गंदा नहीं रहने देना चाहिये, उसे स्वच्छ रखनेकी चेष्टा करनी चाहिये, किन्तु उसकी मावजत पुष्पके समान करनी चाहिये।

*दीर्घायु मनुष्य और उनका आहार विहार।

नाम.	स्थान.	आयु.	मृत्यु समय सन ईस्वी.	आहार विहार.
पण्डित शंकरलाल.	अमरोहा जि॰ मुरादाबाद.	१२५	१९००	ये सब सज्जन सदाचारी मिताहारी और मध्य व्यवहारी हुए हैं। प्रायः दूध घी रोटी और हरी तरकारियाँ ही खाते थे मद्यपी तथा मांसाहारी इनमें कोई भी नहीं था।
रामदास साधू.	अम्बाला केम्प मृत्यु स्थान कुरुक्षेत्र.	११६	१८९०	
ग्रैनीरोज. Granny Rose.	एस. कैरोलाइना S. Carolina.	१३१	१८८८	
ग्रैनी वैपमारेक. Granny Wap Marek.	जर्मनी. Germany.	१२६	१८८९	
एडना गुडमेन. Edna Goodman-	अरकान. Arkan.	१२७		
मैरियन लौकहार्ट. Marion Lockhart.	आईओवा, Iowa.	१२७	१८६९	
मैरियनमूर. Marian Moore.	इंगलैंड. England.	१३१	१८६१	
टोमस लाइटफुट. Thomas Lightfoot.	कैनेडा. Canada.	१२७	१८४६	
विलियम जेम्स. William James.	एस. कैरोलाइना. S. Carolina.	१३२	१८३९	
यूलैलिया पैरीज़. Eulalia Perez.	कैलीफोर्निया. California.	१४०	१८७८	

* ऊपर लिखे यन्त्रमें जिन सज्जनोंका वर्णन है उन्होने केवल हित मित आहार सदाचार एवं शारीरिक श्रम और इन्द्रिय संयमसे ही दीर्घायुष्य प्राप्त की है जो हमारे लिये सैंकड़ों वर्ष तथा इससे भी अधिक चिरंजीवताकी प्राप्तिका अवलम्बन और रसायनशास्त्रकी सत्यता प्रगट करनेको दृष्टान्तरूप हैं॥

नोट–रसायनतन्त्रके अमोघ प्रयोगों एवं ऋषि वाक्योंपर जो महाशय आक्षेपरूप दुर्वचन कहते हैं उन्हें अपने सिद्धान्तको इससे अवश्य मिलाना चाहिये॥

इन्द्रप्रस्थीय राजवैद्य शीतलप्रसाद जैनी–दिल्ली।

नाम.	स्थान.	आयु.	मृत्यु समय सन ईस्वी.	आहार विहार.
स्वार्लिंग (साधू) Swarling (monk.)	ये सब ब्रिटिश टापुओं के रहनेवाले थे (All these were the residents of the British Isles)	१४२	१७७८	
चार्ल्स-एम-फाइनले Charles M. Finley.		१४३	१७७३	
जौन एफिंघम. John Effingham.		१४४	१७१७	
इवैन विलियम्स. Evan Williams.		१४४	१७८२	
टौमस विंसलो. Thomas Winsloe.		१४६	१७६६	
विलियम मीड. William Mead.		१४८	१६५२	
जेम्स बौवेल्स. James Bowels.		१५२	१६५६	
टौमस पार. Thomas Parr.		१५२	१६३५	
जौजफ सरिंगटन. Joseph Surrington.		१६०	१७९७	
विलियम एडवर्ड्स. William Edwards.		१६८	१६६८	
हैनरी जैन्किन्स. Henry Jenkins.		१६९	१६७०	
		१७५	१७८०	

डाकटरी कानून।

भारतवर्षका चिकित्साशास्त्र संसार भरमें सर्वोच्च और सर्वोत्तम है। भारतवर्षके आयुर्वेदके सामने अब भी योरोपकी चिकित्सा-विद्याको सिर झुकाना पड़ता है। एक नहीं अनेक हजारों वार-देखा गया हैं। कि ए. बी. सी. डी. से आरंभकर एक्स. वाई. जेड. तकके अक्षरोंमे सुशोभित उपाधि प्राप्त योरोपियन चिकित्सक जिस व्याधिमें अंगुलि-प्रवेश तक नहीं कर सके, उसीको हमारे देशी चिकित्सक बातकी बातमें दो एक साधारण चुटकलों वा रसायनसिद्ध औषधोंसे आराम कर देते हैं। बहुधा इस देशके विचारशील मनुष्योंमें इस बातका पूर्ण विश्वास हो गया है कि कठिन और प्राचीन रोगोंका इलाज करना डाक्टर महानुभावोंकी शक्तिके बाहर है। विलायती सभी बातोंमें जिस भांति बाहरी आडम्बरकी भरमार रहा करती है, उसी भांति डाक्टरीमें भी छड़ी, घड़ी, टोप, जोड़ी, और अब मोटर-यान आदिके सिवाय असली रोग नाशिनी शक्तिका विकास बहुत ही कम पाया जाता है। देशी और विदेशी दोनों प्रकारकी चिकित्साप्रणालीमें एक (देशी) सादी सीधी और थोड़े व्ययसे शीघ्र फलदायिनी है, दूसरी (विलायती) बहुधा धन लूटने और गरीब गृहस्थोंका रुधिर चूसनेका महान् साधन सी प्रतीत होती है। यह बात अवश्य योरोपीय आदर्श पर जीनेवालोंको अच्छी नहीं लगेगी; परन्तु बात यही पक्की है। हां दिन दिन अनेक प्रकार से निग्रह किये जानेके कारण, उचित चिकित्सालयों और चिकित्साकी शिक्षा देनेके लिए उपयोगी विद्यालयोंके अभावसे दिनोदिन आयुर्वेद शास्त्र दबतासा चला जाता है। साथ ही साथ जहां देखिये वहां पगिया बांध कर, दो चार शीशियां और खल लोढ़ा लेकर, नाड़ी देखने तकका ज्ञान न रखनेवाले अनाड़ी धोखेबाजोंके वैद्य बन जाने के कारण भोली भाली भारतीय प्रजाको महान् दुःख भी उठाना पड़ता है!

उधर अंगरेजी शिक्षाप्राप्त डाक्टरोंकी संख्या इतनी बढ़ने लगी है, और उनके रहन सहन और साज शृंगारमें इतने अधिक धनकी आवश्यक्ता हुआ करती है, कि वेचारे बहुधा कठिनाईसे अपनी जीवन-यात्रा निर्वाह कर सके हैं। इस लिए इन लोगोंके आंसू पोचनेकी इच्छासे इनके पृष्ठपोषकोंने एक नयी चाल चलायी है। इन लोगोंने हुल्लड़ मचा कर डाक्टरी कानून पास करवानेकी चेष्टा की है। कानूनके अनुसार अबसे जो लोग डाक्टरी सार्टिफिकट अपने पास न रख सकेंगे वे अब आगे चल कर किसी रोगीका इलाज न कर सकेंगे। डाक्टरी पास कर लेनेका

सार्टिफिकेट हाथमें पाकर वे धड़ाधड़ यमदूतोंकी सहकारिता करते रहें, चाहे गरी-
बोंका धन चूसा करें, फिर कोई कभी उनको पूछनेका भी साहस न कर सकेगा।

अस्तु, बम्बई और मद्रासमें ये डाक्टरी कानून पास हो गया है। इस बातसे
सब देशी वैद्य हकीम त्रास पा रहे हैं, और इसी लिए आत्मरक्षाके विचारसे वैद्यक-
सम्मेलन आदि संस्थाओंकी भी अवतारणा होने लगी है। इधर यह हो रहा है,
उधर बंगालकी भी व्यवस्थापक सभामें इसी कानूनका मसविदा पेशकर दिया गया
है। कहनेको कहा जाता है कि यह कानून प्रजाकी रक्षाके लिए धूर्त-अशिक्षित
चिकित्सकोंके हाथसे उनको बचानेके लिए बनाया जाता है; परन्तु यदि इसकी
सहायतासे भारतीय आयुर्वेदका नाश हो तो हम लोग कभी इस कानूनका स्वागत
नहीं करेंगे।

बम्बईमें जब इस कानूनका गर्भाधान हुआ, उस समय भी वहांके लोगोंने
इसका तीव्र विरोध किया था। बंगालमें आयुर्वेदशास्त्रके पूर्ण विद्वान् इस समय भी
पाये जाते हैं। उनको भी अभीसे इस कानूनका विरोध करना चाहिये। हमारी
सम्मति यह है कि आयुर्वेदशास्त्रको हानि न पहुंचे, इस बातपर विशेष ध्यान रखकर
केवल यमकिंकरोंका अनुचित व्यापार रोकनेके उपाय इस कानूनमें संनिविष्ट
किये जाने चाहिए। नहीं तो हमको यही कहना पड़ेगा कि मरना तो हमको है
उसे कोई नहीं रोक सकता-राम मारें तो मरना है, रावण मारे तब भी मरना
। अब तक देशी अनाड़ीके हाथ मरते थे, आगे विलायती अनाड़ी भी हमारी रक्षा
कभी नहीं करसकते। ऊपरसे गरीबोंके धनका शोषण मात्र बढ़ जायगा।

विलायती डाक्टरोंके हलचल मचाने ही पर, और उनकी रक्तशोषणनीति ही
की पुष्टिके लिये इस कानूनकी अवतारणा की गयी है, इसके प्रमाणमें हम हाल ही
की एक बात कहसकते हैं। पबलिक सरविस कमीशनमें गवाही देते समय डाक्टर
राजर्सने गुप्त रहस्य कहदिया कि स्वदेशी आन्दोलनके आरम्भसे डाक्टरोंकी आमदनी
कम हो गयी है। यहांके लोग डाक्टरोंको अब नहीं बुलाते।

बंगालके गवरनर कारमाइकेल साहब बड़े उदार स्वभाव और दयालु हैं। हमें
आशा है कि आप इस कानूनकी आलोचनाके समय प्राचीन आयुर्वेदशास्त्रके गौरव
बढ़ानेहीके उपाय निर्दिष्ट करेंगे और स्वार्थियोंकी चालोंमें अपने विभागको प्रभावित
न होने देंगे।

(हितवन्धु.)

आयुर्वेदका इतिहास।

(पूर्व प्रकाशितानन्तर)

आधुनिकत्व सिद्धिमें प्रमाणोंकी निष्फलता

यह आश्चर्यकी बात है कि कोई २ युरोपीय विद्वान् चरक और सुश्रुत प्रभृति ग्रन्थोंको आधुनिक सिद्ध करनेकी चेष्टा करते हैं। वे लोग किस प्रकारकी युक्तियोंके द्वारा इस प्रकारका सिद्धान्त स्थिर करना चाहते हैं इस विषयपर कुछ विचार करना आवश्यक मालूम होता है। जर्मन पंडित हासका कथन है कि "१० वीं शताब्दिसे १६ वीं शताब्दिके बीचमें भारतवर्षमें चिकित्सा विज्ञानका विकाश हुआ था"। उनके विचारसे वाग्भट्ट, माधव, और शार्ङ्गधर प्रभृतिके ग्रन्थोंमें चिकित्सा विज्ञानका जो बीज था उसीको चरक व सुश्रुतने विस्तृत रूपसे लिखा है। और उन्होंने पूर्वोक्त ग्रन्थकारोंके अनुसरण करनेकी बातका उल्लेख नहीं किया है। चिकित्साविज्ञानमें हिन्दुओंका मौलिकत्व मि. हासके द्वारा उपेक्षित किया गया है।[1] उन्होंने कहा है कि हिन्दुगण चिकित्सा विज्ञानके विषयमें ग्रीकोंके अनुयायी हैं। वायु, पित्त, कफ प्रभृतिके वैषम्यमें जो रोगोत्पत्ति होती है इस धातुगत रोगनिदानतत्त्वको हिन्दुओंने ग्रीकवासियोंके पाससे सीखा है। ग्रीसके ग्यालेन और हिपक्रेटिसने चिकित्सा विषयमें जो कुछ लिखा है वही भारतीय चिकित्सा-विज्ञानका प्रधान अवलम्बन है। सुश्रुत नाम भी उन लोगोंका अनुकरण है। सक्रेटिस शब्दसे अरबी भाषामें साक्रात शब्द उत्पन्न हुआ है। सुश्रुत शब्द उसीका अपभ्रंश है। साक्रात शब्द कभी २ वाक्रातरूपसे भी बोला जाता है। वाक्रात शब्द हिपक्रेटस नामका अपभ्रंश है। मि. हास केवल इतना ही कहकर शान्त नहीं हुए हैं उन्होंने

---

१ केवल हास ही नहीं, किन्तु हासके समान और भी अनेक युरोपीय विद्वान् भारतकी प्रधानता स्वीकार नहीं करते। जिन्होंने सर्वथा अस्वीकार नहीं किया है उन्होंने भी यह तो कहा है कि— [illegible]

मी. दास वाग्भट, माधव एवं शार्ङ्गधरको चरक व सुश्रुतसे प्राचीन कहते है यह महान् भ्रम है; क्योंकि वाग्भट्ट ग्रन्थके आरम्भमें ही चरक व सुश्रुतका प्रमाण स्वीकार करते हैं वे कहते हैं कि,–

"ऋषिप्रणीते प्रीतिश्चेन्मुक्त्वा चरकसुश्रुतौ।
भेडाद्याः किं न पठ्यन्ते तस्माद् ग्राह्यं सुभाषितम्॥"

प्राचीन समयके ऋषिका ग्रन्थ है ऐसा ही जानकर किसीका ग्रन्थ प्रमाणरुपसे अधिक समय तक मान्य होता तो सुश्रुत व चरकके बदले सर्व साधारणमें भेल प्रभृतिके ग्रन्थ क्यों नहीं मान्य होते ? सारांश कि सुशृंखलाबद्ध हो माह्य होता है। वाग्भट्टमें सुश्रुत व चरकका जो परिचय मिलता है; उसमें उनका अति प्राचीन समयके ग्रन्थकार रुपसे वर्णन है। सुश्रुतकी एक टीकाका नांव भानुमति है। उस टीकाकी रचना चक्रपाणिदत्तने की है। ई. स. १०५० में चक्रपाणि मौजुद थे। दाहलन मिश्रने "निबंध संग्रह" नांवकी सुश्रुतकी टीका लिखी है। मथुराजीके समीपके स्थानमें स्थानपालके राजत्वकालमें वे रहते थे। उनके पहिले गयादास, भास्कर, माधव और जेज्जटने सुश्रुतकी टीका लिखी है ऐसा उन्होंने लिखा है। इस परसे स्पष्ट होसक्ता है कि कितने समयसे किस प्रकारसे चरक व सुश्रुतादि आयुर्वेदीय ग्रन्थ आदरणीय होते चले आये हैं। (क्रमशः)

जानने योग्य बातें।

१ खुली हवामें उर्ध्वश्वास लेनेसे शक्ति, उत्साह और बल बढते हैं, मन मजबुत होता है और ज्ञानतन्तुओंको पोषण मिलता है। और भी कई प्रकारकी व्याधियां इससे नष्ट होती हैं।

२ शाकभाजी और फलोंका उपयोग विना धोये नहीं करना; क्योंकि उनको अनेक प्रकारकी गंदी वस्तुओंका और जीवजन्तुओंका स्पर्श हुआ करता है। यदि उनका विना धोये उपयोग किया जाय तो संभव है कि उनके द्वारा अपने शरीरमें रोगका प्रवेश होजाय।

३ खुराक बहुत अच्छी तरहसे चबाकर खाना चाहिये, इससे शरीरकी बढी हुई चरबी कम होती है। गरमी और खुराककी बेपरवाहीसे ग्रीष्मऋतुमें आम होजाता है। भोजनके समय मीजाजको खुश रखनेसे खाये हुए अन्नका पाचन शीघ्र होजाता है।

विध है (रक्त, पित्त, जल और कफ) इसको देखकर कोई २ ग्रीकोंका मौलिकत्व समझते हैं; किन्तु सुश्रुतसंहिताके सूत्रस्थानके एकविसमें अध्यायमें इस विषयमें जो लिखा है उसके देखनेसे हम ग्रीकोंको ही भारतवासियोंके अनुकरण करनेवाले समझ सक्ते हैं। उस स्थानपर लिखा है कि "कफ, पित्त और वातके विना शरीर ठहर नहीं सक्ता, एवं रुधिरके विना भी शरीर रह नहीं सक्ता।"

विराट आयुर्वेदीय प्रदर्शन मथुराका संक्षिप्त वृत्तांत।

सदैव ही समस्त भारतीय वैद्यसम्मेलन होता है; किन्तु उसमें कोई ऐसे कार्यकी भी आवश्यकता है जिससे वैद्य जगत्की कुछ कमी पूरी की जासके इस विचारको इस तुच्छ सेवकने पंचम वैद्यसम्मेलनकी स्वागतकारिणीके सभ्योंसे प्रार्थना की मथुरामें सम्मेलनके साथ एक आयुर्वेदीय प्रदर्शन भी किया जाय जिसमें समस्त सूखी जड़ीबूटियां प्रत्यक्ष दिखाई जाय; क्योंकि पंसारियोंके भरोसे रहकर वे लोग जिन्हें वनस्पति प्रत्यक्ष प्राप्त नहीं होती बड़े अनिष्टोंके कारण बनते हैं। इसी तरह शारीरसंबंधी प्रत्यक्षका भी वैद्य जगतको अधिक अभाव होनेसे वह भी कमी पूरी करना आवश्यक है। अतः अस्थिपंजर मोडल शारीरके अनेक प्रकारके चित्र दिखाये जाँय। योग्य डाक्टरों द्वारा प्रत्येक अंग विभागको प्रत्यक्ष दिखाकर व्याख्यान दिलाये जाँय। कतिपय लोगोंकी धारणा है कि शस्त्रविद्या आजकल ही उन्नत हुई है उस भ्रमके [द]ूर करनेके वास्ते एवं वैद्योंको अपने प्राचीन ज्ञान गौरवका पूरा पता देनेकी जरुरत है कि यावतीय व्यवहार प्राप्त शस्त्रोंके प्राचीन ग्रन्थोंद्वारा लिखित लक्षण सुनाये जाँय और यंत्र आदि भी इकट्ठे किये जाय इसी तरह जितने प्राचीन आयुर्वेदीय अमुद्रित और मुद्रित ग्रंथ मिले वैद्यगणको दिखाये जाँय। उक्त विचारको कृपा करके मित्रोंने सराहनीय बताया और तदनुसार कारभार भी उठा लिया। परमश्रद्धेय वैद्यराज यादवजी त्रिकमजी आचार्य बंबई निवासीने सर्व पूर्व अपनी पुस्तकें भेजकर उत्साहित [क]िया कि अवश्य यह कार्य होना चाहिये। वैद्यराज जटाशंकर लीलाधरजी त्रिवेदीने [ब]हुत उत्तम प्रकारसे अपना औषधालय एक खास स्थानमें सजानेको बहुत पूर्वसे ही अपने योग्य पुत्र पं. रविलालजीको भेज दिया था। उनकी वस्तुओंके लगानेके ढंगकी सबने प्रशंसा की। रावसाहब जयकृष्ण इन्द्रजी पोरबंदर वनविभागके सुपरिटेन्डेन्टने भी बहु संख्यक वनौषधियां भेजकर साहस बांध दिया, फिर क्या देर थी। मथुराके स्थानीय लोग भी संग्रह करने लगे, भारतके भिन्न २ प्रान्तोंसे इतनी वनौषधियां प्राप्त हुई कि निघन्टुके अतिरिक्त भी बहुतसी चीजें अधिक परिमाणमें थी। यहां तक कि प्रदर्शनका विशाल स्थान भी वस्तुओंके वास्ते थोड़ा था। पुस्तकोंसे १ कमरा [भ]रा हुआ था। माइसोर गवर्नमेंट लाइब्रेरी और पं. यादवजी आचार्यकी पुस्तकोंका संग्रह बहुत उत्तम था। भरतपुरके राजवैद्य पं. बिहारीलाल देवीप्रकाशने भी आयुर्वेदीय ग्रंथ समूहसे प्रदर्शनकी शोभा बढ़ाई थी। शारीर विभागमें नियतति २ घंटे पर्यंत मथुराके डॉ. राधावल्लभ पाठकजी मोडल एवं अन्य चित्रोंपर प्रत्यक्ष शारीरका व्याख्यान सुनाया करते थे। सर्वोपरि विशेष उल्लेख योग्य बात यह हुई कि यज्ञ-

कत्तेके सुप्रसिद्ध कविराज श्रीगणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि, कवि-भूषणजीने एक दिन सर्व शारीर उपकरणोंको सभा मंडपमें धरकर एक २ अंग विभागको प्रत्यक्ष दिखाकर व्याख्यान दिया था। इसी तरह एक दिन अद्यापि आविष्कृत और व्यवहृत यावतीय शस्त्रसमूहको सभामें एक २ उठा २ कर आयुर्वेदीय संहिताओंके लक्षण मिला २ कर वैद्योंको समझाया था कि ये सब शस्त्र तुम्हारे ही शास्त्रोंके लक्षणानुसार बने हैं। तुम्हें इनका सम्प्रति ज्ञान लाभ करनेके प्रयत्नोंमें सम्मिलित होना चाहिये। आपने शारीर विषयक एक प्रत्यक्ष शारीर नामकी पुस्तक भी लिखी है। प्रदर्शनकी विस्तारपूर्वक बड़ी रिपोर्ट भी छपरही है शीघ्र ही छपकर प्रकाशित होनेवाली है। सविस्तर हाल जाननेको सज्जनगण रिपोर्ट मंगा देखनेकी कृपा करें और कार्यकर्त्ताओंका परिश्रम सफल करें। प्रदर्शनमें जिन महानुभावोंने अपने वस्तुओंके द्वारा शोभावृद्धि की थी उन्हें एक "जजकमिटी" जिसमें प्रयागके प्रसिद्ध सीविल सर्जन मेजर बी. डी. बसु. आइ. एम. एस. पिन्सनप्राप्त और बंबई वैद्यसभाके उपसभापति आयुर्वेदभूषण वैद्यराज त्र्यंबकलाल त्रिभुवनदास मुनि भी शामिल थे। उसके द्वारा निम्न लिखित क्रमानुसार पुरस्कार व्यवस्था हुई थी।

विराट् आयुर्वेदीय प्रदर्शन मथुराका पुरस्कार विवरण।

रजतमयी "आयुर्वेदोद्धारपदक" और सार्टिफिकेट—

(१) वैद्यराज पं. यादवजी त्रिकमजी आचार्य बंबई [अमुद्रित मुदित आयुर्वेदीय ग्रन्थों व खनिज द्रव्योंपर.]

(२) रायसाहेब जयकृष्ण इन्द्रजी, पोरबंदर (काठीयावाड) [वनस्पतिशास्त्र पुस्तक और वनौषधियोंपर.]

(३) कविराज "वैद्यरत्न" श्रीयोगेन्द्रनाथसेन एम. ए. विद्याभूषण कलकत्ता, [वनौषधियों व चित्रोंपर.]

(४) कविराज श्रीगणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. 'विद्यानिधि' 'कविभूषण' कलकत्ता, [अस्थिपंजर, शारीरचित्र, शस्त्रसमूहपर.]

(५) वैद्यराज पं. जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी अमदावाद, [स्वरचित्त वैद्यक पुस्तकों वनौषधिके नमूनों व रसौषधियों पर."

(६) वैद्यराज पं. जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल प्रयाग, [वैद्यक पुस्तकों एवं वनौषधियोंपर.]

इसके सिवाय और भी कई सज्जनोंको भिन्न २ प्रकारके पद व सार्टिफिकेट प्रभृति दिये गये हैं।

श्री रामचन्द्र शर्मा, उपमंत्री-प्रदर्शन कमेटि-मथुरा.

निद्राकी किस लिये आवश्यक्ता है?

निद्राकी आवश्यक्ता इस लिये है कि वह शरीरको और मनको विश्रान्ति देती है। शरीरको विश्रान्ति देती है उसका यह मतलब है कि शरीरके कितनेक कार्य करनेवाले मर्मस्थान जैसे कि हृदय, फेफसे, जठर, यकृत, आन्त व ज्ञानतन्तुओंको विश्रान्ति मिलती है। यानी वे कम घीसते हैं। हृदय जागृतावस्थामें जितने वेगसे फरकता है। उससे कम कार्य उसे निद्रामें करना पड़ता है। उदाहरण स्वरूप जागृतावस्थामें और कार्य करनेके समय हृदय एक मीनीटमें ७५ धबकारा करता है और निद्रामें वही हृदय आठ-दश धबकारा कम करता है। हृदयका कार्य एक मीनीटमें आठ धबकारे जितना कम होता है तो उस हिसावसे एक घंटेमें अंदाज ५०० और एक दिनमें १२००० धबकारे कम होते हैं। हृदय यह शरीरमें एक प्रकारका पम्प है जिससे प्रत्येक धबकारेमें उसे १६ रतल वज़न उठाना पड़ता है। एक धबकारा कम होनेपर उसे १६ रतल भार कम उठाना पड़े; इस हिसाबसे एक घंटेमें १०० धबकारे कम हो तो ८००० रतल किम्वा १०० मन वज़न उठानेके परिश्रमसे बचसक्ता है। यदि मनुष्य शान्तिसे निद्रा ले तो उसके हृदयका कितना कार्य कम हो जाय। दो हजार मन भार उठानेसे जितने बलका क्षय होता है उतने श्रमका निद्रा लेनेसे प्रतिबंध होसक्ता है यह बात स्पष्ट है। जैसे निद्रासे हृदयके श्रमकी रक्षा होती है; वैसे ही अन्यान्य अवयव भी घीसनेसे बचजाते हैं। इस लिये निद्राकी हरएक मनुष्योंको आवश्यक्ता है। दिनमें शरीर व मनके परिश्रम करनेवालोंने रातको आठ दश घंटा अच्छी तरहसे निद्रा लेनी चाहिये। पूर्ण निद्रा करके जागृत होनेवाला मनुष्य ताजा बनता है अर्थात् उसमें नवीन बल आता है। प्रातःकालमें जो मनुष्य निद्रामेंसे उठते ही सुस्तके समान रोगी मालूम होता है उसको या तो पूर्ण निद्रा आई नहीं किम्वा उसके अवयव विकारी हैं। अच्छी तरहसे पूर्ण निद्रा लेकर उठनेके पश्चात् मनुष्यका मन सदैव बलवान बनता है और मनुष्य स्फुर्तिसे कार्यपर लगता है। जो लोग अधिक खाते हैं उन्हें अधिक निद्रा आती है इस निद्राकी हम सिफारस नहीं करते; किन्तु दिनभरके श्रमके अन्तमें रात्रीको जो [illegible] निद्रा आती है। उस निद्राके लिये हम सिफारस करते हैं। अर्थात् [illegible] तरहसे निद्रा लेना- दस बजे सो जाना और सुबे पांच बजे उठना और [illegible] चाहिये। रात्रीको [illegible] निद्रामें किसी प्रकारका विघ्न नहीं उपस्थित होना चाहिये। [illegible] और [illegible] [illegible] देखनेवाले और [illegible] इनसे [illegible] [illegible] [illegible] निद्रा नहीं लिये है और [illegible]

और मगजको विश्रान्ति न मिले और शरीर पीसता जाय उसमें आश्चर्य ही क्या है? जीन्दगी छोटी होनेके ऐसे ही कारण हैं। जिन्हें अनिद्राकी बीमारी होती है अर्थात् जिनकी निद्रा चली जाती है उन मनुष्योंकी जीन्दगी कितनी कष्टकारी व दयाजनक होजाती है। वे खाते हैं, पीते हैं, चलते हैं, फिरते हैं; किन्तु निद्रा नहीं होनेके कारण उनको अपनी जीन्दगी भाररुप मालूम होती हैं; क्योंकि निद्राके नहीं होनेके कारण उनके शरीर व मन किसी प्रकारसे शान्ति नहीं प्राप्त करसक्ते। जिस निद्राका इतना मूल्य है क्या उसे बेचकर जागरण करनेवाले निशाचरों (रातको भटकनेवाले) की बुद्धि ठीकानेपर आवेगी?

स्वीकार व समालोचना।

१ रसहृदय तन्त्रम्–बम्बईनिवासी वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य "आयुर्वेदीय ग्रन्थमाला" प्रकाशित कररहे हैं। इस ग्रन्थमालामें आयुर्वेद सम्बन्धी प्राचीन ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं। उक्त ग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प यह रसहृदयतन्त्र है। इस पुस्तकके रचयिता श्रीमत् भगवत्पाद गोविंद भिक्षु है और उसकी मुग्धावबोधिनी नांवकी टीका श्रीचतुर्भुज मिश्रने की है। इस ग्रन्थमें १९ अवबोध हैं, जिनमें रसके स्वेदन, मर्दन मूर्छनादि १८ संस्कारोंका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। रससम्बन्धी यह एक ही ऐसा ग्रन्थ है जो व्याख्या समेत छपा हो। वैद्योंके लिये यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। इस पुस्तकका संशोधन बहुत ही उत्तम प्रकारसे किया गया है और उत्तम कागजपर बम्बईके निर्णयसागरमें छपा है। अब वह पुस्तक पक्की जील्दसे पृथक् बंधा दिया गया है। मूल्य १) है।

२ रसप्रकाश सुधाकर–यह ग्रन्थरत्न भी आयुर्वेदीय ग्रन्थमालाका द्वितीय पुष्प है। इस ग्रन्थमें रसके अठारह संस्कार, रसबन्ध, भस्मविधि, स्वर्णादिधातु महारसोपरसरत्नादिके लक्षण, गुण, शोधन और मारण प्रभृति, एकसो रसप्रयोग, यन्त्रादिके लक्षण, वाजीकरण, शुक्रस्तम्भादि योग–सारांश कि रसशास्त्रके समस्त ज्ञातव्य विषयोंका इस ग्रन्थमें अत्यन्त सरलतासे वर्णन किया गया है। वैद्योंके लिये यह भी रसशास्त्रका एक अद्वितीय ग्रन्थ है। इसके रचयिता जूनागढनिवासी श्रीगौड़ब्राह्मण यशोधरजी रसशास्त्रके प्रसिद्ध विद्वान् थे। ग्रन्थका विषय जितना उत्तम है उतना ही उसका मुद्रणादि मनोहर हुआ है। बंधी हुई पक्की जील्दका मूल्य १) है।

इस ग्रन्थमालाके ओर भी कई ग्रन्थ हमें समालोचनार्थ मिले हुए हैं जिनकी समालोचना आगामि अङ्कमें प्रकाशित की जायगी। इस ग्रन्थमालाके ग्राहक होनेकी इच्छा रखनेवाले और विशेष वृतान्त जाननेकी इच्छा रखनेवालोंने निम्न पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहियें।

वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य, सम्पादक आयुर्वेद

प्रयागमें विभूतिपूजा।

चैत्र शुक्ल १ के दिन सायङ्काल ६ बजेसे दारागञ्जमें प्रयाग राजमहौषधालय, सुधानिधि कार्यालय एवं आयुर्वेद महामण्डल कार्यालय अर्थात् आयुर्वेद पञ्चानन पं. जगन्नाथप्रसाद शुक्लके स्थानमें स्वर्गीय शङ्कर दाजी शास्त्रीपदेके स्मारकमें सभा हुई और उसमें अध्यक्ष वैद्यराज पं. गिरिजाशङ्करजी थे।

शारदा सम्पादक साहित्याचार्य श्रीमान् पं. चन्द्रशेखर शास्त्री, शास्त्रनिष्णात पं. श्रीनिवासाचार्य शास्त्री, म्युनिसिपल पाठशालाके हेडमास्तर पं. गङ्गानारायण द्विवेदी, एज्युकेशनल गजटके सम्पादक पं. रुद्रनारायणजीके क्रमशः (१) विभूतिपूजा, (२) विभूतिपूजाका तारतम्य, सम्वत्सर प्रतिपदा, आदि सामयिक, (३) दुर्भिक्ष और उसकी पीड़ा, (४) नूतन सम्वत्सर इसी दिन क्यों ? इत्यादि विषयोंपर प्रभावशाली व्याख्यान हुए। पश्चात् सुधानिधि सम्पादककी ओरसे मैनेजर पं. सिद्धिनाथजी दीक्षित और श्रीनिवासाचार्यजी शास्त्रीको १। १ रेशमी दुपट्टा, वैद्यराज पं. राधावल्लभजी विजयगढके लिये १ रौप्यपदक श्रीमती मोहनाबाई नैपालको कुछ पुस्तकें और अन्यान्य कर्मचारियोंको वस्त्रद्रव्य आदि वितरण किये गये। पद्दे शास्त्रीजीकी एक संस्कृतमें पुष्पाञ्जलि रचयिताने पढकर सुनाई थी। जनसमुदाय अच्छा एकत्रित हुआ था। आशा है इसी प्रकार प्रतिदिन सहानुभूति बढाते हुए देशबन्धु परस्पर सौहार्द बढाते रहकर ऐहिक कीर्ति और पारलौकिक यशके भागी होंगे।

एक निरीक्षक।

आवश्यकीय सूचना।

सर्व साधारणको विदित हो कि कुछ दिनोंसे यह मिथ्या किम्वदंती देशके कई हिस्सोंमें फैल गई है कि—जि. रायबरेली स्टेशन जायस ग्राम भौतीपुरके शाहसाहिब के पढे हुए जल (जिसमें वह हाथ भी डाल देते हैं)के पीने व लगानेसे सर्व प्रकारके रोग नष्ट होते हैं। इसी कारण वहां सहस्रों हिन्दु, मुसल्मान, जल लेनेके लिये प्रतिदिन एकत्रित होते हैं। बन्धुवर्गो! मैंने बहुत रोगियोंसे जिन्होंने उस जलका सेवन किया था पूछा; परन्तु किसीने भी लाभ होना स्वीकार नहीं किया, केवल — साहबने भारतवासियोंके समय, धन, और धर्म नष्ट करने हीको ढोंग रचा है। अतः हम लोगोंको उचित है कि हम लोग स्वयं न जाकर दूसरे जानेवालोंको भी रोकें और धन, धर्म और समयको बचावें।

डा. जगदम्बाप्रसाद, [illegible]-मैनपुरी।

शोपरोगका उपाय।

प्रसंगाद्गात्रसंस्पर्शात् निश्वासात् सहभोजनैः।
सहशय्या समानस्तु वस्त्रमाल्यानुलेपनात् ॥
कुष्टं ज्वरश्च शोपश्च नेत्राभिष्यंद एव च।
औपसर्गिकरोगाश्च संक्रामन्ते नरान्नरों ॥

यह संक्रामक है, जिस वालकको यह होता है। प्रायः उसकी मात
समय अपने वालकको लिये हुए किसी मंदिर या चौवट्टेमें इस प्रकारसे ख
हैं कि उसका स्पर्श किसी दूसरी स्त्रीसे (जो कि नन्हे वालककी माता हो) ह
इस टौनेके लिये शनिवार और मंगलवार वह पसंद करती हैं। दैववशात्
वालकको आराम होने लगता है और दूसरा वालक पीड़ित होने लगता है।

श्लोकार्थसे विशेष हाल व्यक्त होता ही है। इस रोगमें वालकके नित
झुलरी पड़ने लगती है और वह दुर्वल होने लगता है। दस्त प्रायः हरे तथा
विरंगके होने लगते हैं।

उपाय–ककरोंहा (जिसे गंगावती भी कहते हैं इसका क्षुप व पत्ते तमाखू
सदृश होते हैं व उग्रगंध होते हैं। प्रायः यह नालोंके किनारे अथवा नमीदार भूमि
उत्पन्न होते हैं) के पत्तोंको महीन पीसकर उसकी २ टिकियां वनावे फिर आधा
तोला पुराना गुड़ लेकर दोनों टिकियोंके बीचमें धरे, रोगी वालकके तालूपर बांधे।
मस्तकमेंके कीटाणु गुड़को खा जावेंगे। इस तरह नित्य करे। धीरे धीरे
टिकियोंके बीचमें रक्खा हुवा गुड़ कीड़ोंके खानेसे वचने लगेगा। जिस दिन
टिकियामें रक्खा हुवा गुड़ बिलकुल खर्च न हो; तव समझे कि वालकको आराम
होगया (यदि वालक छोटा हो तो गुड़ कम भी ले सक्ते हैं) वालकोंके शोप रोगकी
[illegible]र अनुभविक व 'रामवाण' औपधिका एक विज्ञ व अधिकारी महाशयके यहां
अनुभव देखकर 'वैद्यकल्पतरु'के प्रेमियोंकी सेवामें भेट किया है।

वैद्य परशुरामजी कृष्णारामजी-उज्जैन.

प्रबंधकर्ताकी प्रार्थना।

१ प्रत्यक्ष शारीरका मूल्य जो गतांकमें छपा है। वहांपर इस प्रकार समझना चाहिये। उपोद्घात सहित सुन्दर छींटकी बंधी हुई जिल्दवाली पुस्तकका मूल्य ५) और उपोद्घात रहितका मूल्य ३॥)

२ प्रेसवालोंकी असावधानीसे गतांकमें और इस अंकमें कुछ भूलें रहगई है जिसके लिये पाठकगण क्षमा करें।

३ यह पत्र प्रत्येक अंग्रेजी मासके अन्तमें प्रकाशित होता है; किन्तु किसी २ अंकको निकलनेमें थोड़ा विलंब होजाता है जिसके लिये हमें पूर्ण दुःख होता है। हम इसके लि[illegible]
योग्य प्रबंध करेंगे। पाठकगण कृपाकर धैर्य [illegible]

हिन्दी वैद्यकल्पतरु।

प्रथम वर्षके सभी अंक पुस्तकके रूपमें तैयार है।

श्रीपरमात्माकी कृपासे व अपने उदार सहयोगी एवं ग्राहक अनुग्राहकोंकी
ननकंपासे हिन्दी वैद्यकल्पतरुने प्रथम वर्षमें ही अच्छी सफलता प्राप्त की है। गुज-
ा "वैद्यकल्पतरु" १९ वर्षसे प्रकाशित होरहा है जिस प्रकार उसने उत्तरोत्तर
न व आयुर्वेदके साथ २ गुजराती साहित्यकी सेवा की है उसी प्रकार "हिन्दी
ाद्यकल्पतरु" भी अपने कार्यक्षेत्रमें अग्रसर होनेके लिये यथासाध्य चेष्टा कररहा है।
हमें गुजराती पत्रके अनुभवसे मालुम हुआ है कि नवीन ग्राहक प्रायः पछिले
अंकोंको आग्रहके साथ मांगा करते हैं। हमारे पास अनेक चिठ्ठियां आती है कि
गुजराती वैद्यकल्पतरुके समस्त प्राचीन अंक भेज दीजिये चाहे मूल्य अधिक लीजिये
किन्तु हम उस आज्ञाका पालन करनेमें सर्वथा असमर्थ है। आखीर अधिक सज्ज-
नोंके आग्रहसे प्राचीन लेखोंको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेको बाध्य हुए है।
प्राचीन अंकोंके लिये जो आग्रह गुजराती पत्रके पाठकोंका है वही आग्रह हिन्दीमें
एक दिन उपस्थित होगा; किन्तु उस आग्रह या आज्ञाका पालन करनेमें हम कथ
समर्थ होंगे यह हम ठीक नहीं कहसके; किन्तु इस समय यह समय उपस्थित होगया
है कि इस वर्ष जो लोग ग्राहक हुए हैं उनमेंसे अधिक सज्जन गतवर्षके अंकोंकी
प्रायः मांग रहे हैं। हमने उन्हींकी आज्ञाको शिरोधार्यकर व उनकी अधिक सुविधा
यह जानकर जितनी कापियां प्रथमवर्षकी बची थी उनको एकत्रकर पुस्तकके
रूपमें तैयार करा लिया है। १९१९ के १२ मासके अंक एक पुस्तकमें बंधकर
तैयार है। ऐसी पुस्तकोंकी संख्या बहुत कम है इस लिये जो सज्जन स्वदेशके वैद्य-
कल्पतरुके उपयोगी लेखोंको पढ़ना चाहे वे तुरन्त सूचना दें। जहां तक हमारे पास
ऐसी पुस्तकें तैयार होगी वहां तक ही हम भेज सकेंगे।

विशेष सूचनायें।

आर्डर भेजनेपर यदि १० दिनमें पुस्तक न मिले तो [illegible]
बाकी नहीं है। [illegible] दूसरा पत्र भेजना नहीं। [illegible]
. वी. पी. [illegible] १-१२-० [illegible]
नहीं दिया जायगा। [illegible]
१. [illegible] से ही [illegible]
[illegible] १-१२-० [illegible]
१

शोषरोगका उपाय।

प्रसंगाद्गात्रसंस्पर्शात् निश्वासात् सहभोजनैः।
सहशय्या समानस्तु वस्त्रमाल्यानुलेपनात्॥
कुष्टं ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिष्यंद एव च।
औपसर्गिकरोगाश्च संक्रामन्ते नरान्नरां॥

यह संक्रामक है, जिस बालकको यह होता है। प्रायः उसकी माता सांझ समय अपने बालकको लिये हुए किसी मंदिर या चौवटेमें इस प्रकारसे खड़ी होती है कि उसका स्पर्श किसी दूसरी स्त्रीसे (जो कि नन्हे बालककी माता हो) हो जावे। इस टौनेके लिये शनिवार और मंगलवार वह पसंद करती हैं। दैववशात् इसके बालकको आराम होने लगता है और दूसरा बालक पीड़ित होने लगता है। श्लोकार्थसे विशेष हाल व्यक्त होता ही है। इस रोगमें बालकके नितंबपर झुर्री पड़ने लगती है और वह दुर्बल होने लगता है। दस्त प्रायः हरे तथा रंग-बिरंगके होने लगते हैं।

उपाय–ककरोंदा (जिसे गंगावती भी कहते हैं इसका क्षुप व पत्ते तमाखूके सदृश होते हैं व उग्रगंध होते हैं। प्रायः यह नालोंके किनारे अथवा नमीदार भूमिमें उत्पन्न होते हैं) के पत्तोंको महीन पीसकर उसकी २ टिकियां बनावे फिर आधा तोला पुराना गुड़ लेकर दोनों टिकियोंके बीचमें धरे, रोगी बालकके तालूपर बांधे। मस्तकमेंके कीटाणु गुड़को खा जावेंगे। इस तरह नित्य करे। धीरे धीरे टिकियोंके बीचमें रक्खा हुवा गुड़ कीड़ोंके खानेसे बचने लगेगा। जिस दिन टिकियामें रक्खा हुवा गुड़ बिलकुल खर्च न हो; तब समझे कि बालकको आराम होगया (यदि बालक छोटा हो तो गुड़ कम भी ले सक्ते हैं) बालकोंके शोष रोगकी इस अनुभविक व 'रामवाण' औषधिका एक विज्ञ व अधिकारी महाशयके यहां अनुभव देखकर 'वैद्यकल्पतरु' के प्रेमियोंकी सेवामें भेट किया है।

वैद्य परशुरामजी कृष्णारामजी-उज्जैन.

प्रबंधकर्ताकी प्रार्थना।

१ प्रत्यक्ष शारीरका मूल्य जो गतांकमें छपा है। वहांपर इस प्रकार समझना चाहिये। उपोद्घात सहित सुन्दर छींटकी बंधी हुई जिल्दवाली पुस्तकका मूल्य ५) और उपोद्घात रहितका मूल्य ३॥)

२ प्रेसवालोंकी असावधानीसे गतांकमें और इस अंकमें कुछ भूलें रहगई है जिसके लिये पाठकगण क्षमा करें।

३ यह पत्र प्रत्येक अंग्रेजी मासके अन्तमें प्रकाशित होता है; किन्तु किसी २ अंकको थोड़ा विलंब होजाता है जिसके लिये हमें पूर्ण दुःख होता है। हम इसके लिये योग्य प्रबंध करेंगे। पाठकगण कृपाकर धैर्य रक्खें।

भारत महिला।

स्त्रीशिक्षाकी एक अत्युपयोगी मासिक पत्रिका।

विदित हो कि ऊपरोक्त नामकी एक मासिक पत्रिका भास्कर प्रेस मेरठसे प्रकाशित होनेवाली है। जो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है। वह पत्रिका स्त्री-समाजके लिये सब प्रकारसे लाभदायक और संग्रह करने योग्य होगी। इसमें स्त्री-शिक्षाके विषयमें उत्तमोत्तम लेख प्रकाशित हुआ करेंगे। इसका सम्पादन भार लाहोरस्थ ब्रह्मचारिणी सुनीतिदेवीजीने अपने ऊपर ग्रहण किया है। कुमारी सुनीतिदेवी लेखनकलामें दक्ष हैं और स्त्रीशिक्षा प्रचारके लिये सदा उद्यत रहती हैं आपने जालन्धरके लोक विश्रुत कन्या महाविद्यालयकी अन्तिम श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त की है इससे पाठकगण अनुमान लगा सकते हैं कि कुमारीजी द्वारा सम्पादित यह मासिक पत्रिका आर्य महिलाओंके लिये कितनी उपयोगी होगी। सारांश यह है कि यह पत्रिका स्त्रीसमाजमें शिक्षा प्रचारके लिये बहुत उपयोगी होगी। इसके आकार डेमी अठपेजी तथा पृष्ठ संख्या ३२ होगी। वार्षिक मूल्य १॥) होगा; किन्तु जो सज्जन प्रथम वी. पी. से मंगावेंगे उन्हें यह पत्रिका इस वर्ष एक रुपये मात्रमें ही दीजायगी।

मैनेजर—" भारत महिला "—मेरठ।

विज्ञापन छापनेका दर।

[illegible]में विज्ञापन
[illegible]ाव।
[illegible]पती है।

[illegible]	आधा पेज.	पाव पेज.
[illegible]	१८	११
[illegible]	११	७
[illegible]	७	५
[illegible]	३	२

[illegible]

गुजराती वैद्यकल्पतरुमें विज्ञापन
छापनेका भाव।
४००० प्रति छपती है।

अवधि.	एक पेज.	आधा पेज.	पाव पेज.
१२ मास।	७५	४०	२२
६ "	४०	२२	१२
३ "	२२	१२	८
१ "	१०	६	४

[illegible]

भारत महिला।

स्त्रीशिक्षाकी एक अत्युपयोगी मासिक पत्रिका।

विदित हो कि ऊपरोक्त नामकी एक मासिक पत्रिका भास्कर प्रेस मेरठसे प्रकाशित होनेवाली है। जो शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है। यह पत्रिका स्त्री-समाजके लिये सब प्रकारसे लाभदायक और संग्रह करने योग्य होगी। इसमें स्त्री-शिक्षाके विषयमें उत्तमोत्तम लेख प्रकाशित हुआ करेंगे। इसका सम्पादन भार लाहो-रस्थ ब्रह्मचारिणी सुनीतिदेवीजीने अपने ऊपर ग्रहण किया है। कुमारी सुनीतिदेवी लेखनकलामें दक्ष हैं और स्त्रीशिक्षा प्रचारके लिये सदा उद्यत रहती हैं आपने जाल-न्धरके लोक विश्रुत कन्या महाविद्यालयकी अन्तिम श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त की है इससे पाठकगण अनुमान लगा सकते हैं कि कुमारीजी द्वारा सम्पादित यह मासिक पत्रिका आर्य महिलाओंके लिये कितनी उपयोगी होगी। सारांश यह है कि यह पत्रिका स्त्रीसमाजमें शिक्षा प्रचारके लिये बहुत उपयोगी होगी। इसके आकार डेमी अठ पेजी तथा पृष्ठ संख्या ३२ होगी। वार्षिक मूल्य १।।) होगा; किन्तु जो सज्जन प्रथम अंक वी. पी. से मंगावेंगे उन्हें यह पत्रिका इस वर्ष एक रुपये मात्रमें ही दीजायगी।

मैनेजर–"भारत महिला"–मेरठ।

विज्ञापन छापनेका दर।

हिन्दी वैद्यकल्पतरुमें विज्ञापन छापनेका भाव।

१००० प्रति छपती है।

अवधि.	एक पेज.	आधा पेज.	पाव पेज.
१२ मास।	३०	१८	११
६ "	१८	११	७
३ "	११	७	५
१ "	५	३	२

हिन्दी वैद्यकल्पतरुके साथ कोडपत्र बांटनेके पैसे लिये जायेंगे। कोडपत्रके ऊपर "हिन्दी वैद्यकल्पतरुका कोडपत्र" और कुछ सम्वाद छपने चाहिये।

गुजराती वैद्यकल्पतरुमें विज्ञापन छापनेका भाव।

४००० प्रति छपती है।

अवधि.	एक पेज.	आधा पेज.	पाव पेज.
१२ मास।	७५	४०	२२
६ "	५०	२२	१२
३ "	२२	१२	८
१ "	१०	६	४

गुजराती वैद्यकल्पतरुके साथ कोडपत्र बांटनेके १५ पैसे लिये जावेंगे। कोडपत्रके ऊपर "वैद्यकल्पतरुको [illegible]" और कुछ सम्वाद छपने चाहिये।

आयुर्वेदमें बुद्धि बढानेका उपाय।

वैद्यक साहित्यमें नवीन चर्चा।

चरकादि संहिताओंसे लेकर आज पर्यन्तकी छपी छोटी वैद्यक पुस्तकोंमेंसे बुद्धि बढानेवाले प्रयोग और साधन बहुत ही उत्तम और सरल रीतिसे संग्रह भाषा टीका सहित।

आयुर्वेदमें इस विषयपर अब तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। पृष्ठ संख्या १६५

शरीर और बुद्धिका परस्पर क्या सम्बन्ध है, बुद्धिका स्थान है, स्फुरण और संकुचित होनेके कौन २ से कार और स्वाभाविक बुद्धि भी किन २ उपायोंसे बढाई जासकती आदि अनेक विषयोंका विस्तारसे अनुभव सहित विवे किया गया है। विद्या सुगमतासे प्राप्त करनेके लिये पूर्वका क्या २ प्रयत्न होते थे और आज भी मूर्ख और जड़मस्ति वाले किस प्रकार विद्वान् बनाये जासकते हैं उसका पूर विवरण इस ग्रन्थमें पढिये।

यह ग्रन्थ अनेक वैद्यक सभाओं, प्रतिष्ठित एवं वि वैद्यों और सुयोग्य लेखकों द्वारा अत्यन्त प्रशंसित हुआ, वैद्यों, बुद्धि व्यवसायी पुरुषों और विद्यार्थि... उपयोगी एवं लाभकारी है।